ऋषि जन्म शताब्दि वृत्ति

सचित्र

प्रेम-पुष्पाञ्जली।

प्रसिद्ध कवियों के प्रभु-प्रेम सम्बन्धी रसीले, उपदेश प्रबन्धी, शिक्षादायक, जाति सुधार, देशभक्ति के जोशीले व मनोरंजक भजनों का संग्रह।

प्रकाशक—

लाजपतराय एण्ड सन्ज़

पुस्तकों वाले, लाहौर।

बाबू जगतनारायण जी के प्रबन्ध द्वा

विरजानन्द प्रेस, मोहनलाल रोड लाहौ

जनवरी १९२४ ई०

[२०००]

निवेदन ।

मैंने प्रेम-पुष्पाञ्जली १९१७ में छापी थी जो लगमग ४५ पृष्ठ पर समाप्त हुई थी। यह महाशय चिरञ्जीलाल 'प्रेम' की तय्यार की हुई थी और इस में अधिकतर भजन भी प्रेम जी के थे; इस का कापीराईट भी खरीदा गया। इस छोटी सी सुन्दर पुस्तक में नई प्रकार के भजन थे। और मेरी इच्छा थी कि उस में प्रार्थना उपासना के पुराने रसदायक भजन भी होने चाहियें। यद्यपि प्रथमावृत्ति महीनों में ही खतम होगई और मांग बराबर बनी रही परन्तु मैं सदा इसे पूर्ण करने के यत्न में रहा। क्योंकि मेरे विचार में पुराने भजनों में जो रस और सुन्दरता है वह नये भजनों में कम पाया जाता है। इस कार्य्य के लिये ऋषि जन्म शताब्दि के अवसर के अतिरिक्त और कोई अधिक उपयुक्त समय न था। प्रभु कृपा से मैंने अब इस पुस्तक को मुक[illegible] [illegible]लिया है। महा० चरञ्जीलाल प्रेम और कुंवर सुखलाल [illegible] मेरे पास है। शेष जिन सज्जनों के भजनों से इस [illegible] और भी बढ़ गया है उन का मैं धन्यवाद करता हूं [illegible] कि पाठक इस पुस्तक से आनन्द उठायेंगे।

लाजपतराय साहनी।

विषय सूची

निवेदन

मैंने प्रेम-पुष्पाञ्जली १९१७ में छापी थी जो लगभग ४५ पृष्ठ पर समाप्त हुई थी। यह महाशय चिरञ्जीलाल 'प्रेम' की तय्यार की हुई थी और इस में अधिकतर भजन भी प्रेम जी के थे। इस का कापीराईट भी खरीदा गया। इस छोटी सी सुन्दर पुस्तक में नई प्रकार के भजन थे। और मेरी इच्छा थी कि उस में प्रार्थना उपासना के पुराने रसदायक भजन भी होने चाहियें। यद्यपि प्रथमावृत्ति महीनों में ही खतम होगई और मांग बराबर बनी रही परन्तु मैं सदा इसे पूर्ण करने के यत्न में रहा। क्योंकि मेरे विचार में पुराने भजनों में जो रस और सुन्दरता है वह नये भजनों में कम पाया जाता है। इस कार्य्य के लिये यद्यपि जन्म शताब्दि के अवसर के अतिरिक्त और कोई अधिक उप-[illegible]मय न था। प्रभु कृपा से मैंने अब इस पुस्तक को मुक[illegible] [illegible] लिया है। महा० चिरञ्जीलाल प्रेम और कुंवर सुखलाल [illegible]र मेरे पास है। शेष जिन सज्जनों के भजनों से इस [illegible] और भी बढ़ गया है उन का मैं धन्यवाद करता हूं।

[illegible] कि पाठक इस पुस्तक से आनन्द उठायेंगे।

लाजपतराय साहनी।

विषय सूची

प्रेम-पुष्पांजली

१—प्रेम की महिमा

दूध और पानी का मेल

भजन नं० १

प्रेम प्यार परस्पर बढ़ाते चलो जी।
पानी ने प्रेम दूध से जिस दम मिला लिया।
अपना ही रूप दूध ने उसको बना दिया।
तुम भी दूई दिलों की हटाते चलो जी॥
अपनाया कच्चा दूध ने हित प्यार से जिसे।
बिकवाया अपने मोल ही बाजार में उसे।
तुम भी छोटों को ऊपर उठाते चलो जी॥
यह प्यार देख दूध का पानी विचारता।
जो कष्ट दूध पर पड़े स्वयं सहारता।
इसका बलिदान दिल में बिठाते चलो जी॥
हलवाई ने जब दूध को अग्नि पे धर दिया।
तो इस से पहले पानी अपने आप जल गया।
तुम भी मित्रों के दुःख को हटाते चलो जी॥

यह देख दूध अग्नि को आँखें दिखा रहा।
लेके उबाला गिर पड़ा मानो युद्ध रहा।
ऐसा आदर्श तुम भी दिखाते चलो जी॥
छींटा तभी हलवाई ने पानी का दे दिया।
संतुष्ट दूध बैठ गया मित्र मिल गया।
तुम भी छाती से छाती मिलाते चलो जी॥
सम्भव नहीं है इस समय कोई भी विघ्न हो।
दीपक पतंग की तरह जाती की लग्न हो।
चन्द्र जाति की नैय्या बचाते चलो जी॥

सुदामा और कृष्ण का प्रेम
भजन नं० २

आया जब निर्धन ब्राह्मण कृष्ण के दरबार में।
वस्ले गुल बुलबुल को हासिल होगया गुलजार में॥
नंगे मिस्ल मजनूं छोड़ शाही तख्त को।
ड्योढ़ी पे आके चिपट बैठ इस जिस्मे यार में।
फारगुल तहसील होकर किस जगह होते रहे।
रोजोशब बेकल रहा मैं आप के इन्तजार में॥
जब तन कपड़ा नहीं क्यों जिस्म लागर हो गया।
हैफ कैसे फँस गए हो पंजाये अयदार में॥
ला बिठाया तख्त पर अपने बराबर मित्र को।
है बसासियत यही तो सच्चे लुत्फो प्यार में॥

पानी पटरानी के लानें में हुई लहमा की कुछ देर ।
यदाके उल्फ़त आ गए फौरन चश्मे जार में ॥
आप अपने चश्मे से धोने लगे हैं पाये दोस्त ।
ऐसे पांये जा चुके हैं मुहब्बत के तार में ॥
पावों के कांटे निकाले उनके लेकन कृष्ण ने ।
कट के आते हैं जिगर के टुकडे खूँ की धार में ॥
हर तरह खातिर तवाजा कृष्ण जी करते रहे ।
चंद्र ऐसे दोस्त अब अनका हुए संसार में ॥

भजन नं० ३

क्या सूक्ष्म और क्या स्थूल यह सारा पसारा प्रेम का है ।
इधर उधर और यहां वहां जो कुछ नजारा प्रेम का है ।
वृक्षलता फल फूल की शोभा पशु और पक्षी गणों की लीला
नदी पहाड समुद्र की रचना खेल यह सारा प्रेम का है ।
तारागणों का सुनैहरी मंडल निर्मल अकाश और बादल
शीतल चंद्र उतेजत सूरज का उजियारा प्रेम का है ।
मांकी ममता स्नेह पिता का सहायता मित्र और बंधु गणों की,
स्त्री स्वामी भ्राता भगनी रिश्ता जो है प्रेम का है ।
ज्ञान और भक्ति है यहां पहुंचाते ध्यान और जोग जो कुछ है सुहाते,
विद्यार्थी जिस राह से जाते हैं यह द्वारा प्रेम का है ।

भजन नं० ४

प्रेम की अचरज देखी रीति ।

प्रेम ही नाचे प्रेम ही कूदे, प्रेम ही गावे गीत ।
प्रिय प्रीतम के प्रेम लोक में, प्रेम सा नहीं कोई मीत ।
प्रेम को पाहो निर्भय प्राणी, जो काल था भय भीत ।
प्रेम बिना सब कुछ ही निष्फल पूजा पाठ संगीत ।
विश्वासी अब प्रेम कमाओ कर प्रीतम से प्रीत ।

२—प्रभु-प्रेम

भजन नं ५

प्रभु तेरो प्रेम पदारथ पाऊं।
निज भक्तों को प्रेम तुम दीना मैं भुखा कहां जाऊं।
प्रेम ही भीतर प्रेम ही बाहर प्रेम ही से लौ लाऊं।
तेरे ही प्रेम से हो मतवाला अपना आप ही भुलाऊँ।
अब मेरी विनय सुनो प्रभु मेरे और किसे मैं सुनाऊँ।
दासों की मंडली में सांझ सवेरे तेरे ही गुण गाऊँ।
तेरो ही प्रेम प्याला पीकर विश्वासी बन जाऊँ।

भजन नं० ६

प्रेम के रंग से रंगीं चुरियां मुझ भिक्षुक को दान करो।
पाप के सारे बन्धन काटो यह मुश्किल आसान करो।
चरण की शीतल वारी देकर पाप ताप की पीर हरो।
प्रेम का बलदे मुझको अपनी ही सेवा में ग्रहण करो।
सब धन लो चाह तन मन लो प्रभु यह विश्वासी तो
शरण पड़ो।

भजन नं० ७

मुझे धर्म प्रेम मे ईश्वर सदा इस तरह का प्यार दे ।
कि न मोड़ूँ मुँह कभी उस से मैं कोई चाहे सर भी उतार
यह कलेजा ग़म को भी दिया, यह जिगर औ दुख को
किया मना।

वह फ़राख़ दिल दयानन्द का, वही भर मुझे भी उधार दे।
न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूँ मैं वहाँ की जगह भला।
मेरे लब से निकले सदा दुआ, कोई कष्ट चाहे हजार दे॥
नहीं मुझ को ख़्वाहिशे मर्तबा, न है माल्हो ज़रकी हवस मु
मेरी उमर ख़िदमते ख़ल्क में, मेरे ईश्वर तू गुज़ार दे॥
मुझे प्राणीमात्र के वास्ते, करो सोज़ो दिल यह अता पिता
जलूँ उनके ग़म में मैं इस तरह कि न ख़ाक तक भी गुबा
मेरी ऐसी ज़िन्दगी हो बसर, कि हूँ सुर्ख़रू तेरे सामने
न कहीं मुझ मेरा आत्मा हो, यह शर्म हैलो निहार दे॥
न किसी का मर्तबा देख कर, जले दिल में नारे हसद क
जहां पर रहूँ रहूँ मस्त मैं, मुझे ऐसा सबरो क़रार दे॥
लगे ज़ख़्म दिल पर अगर किसी के, तो मेरे दिल में तड़
उठे।

ऐसा दे दिले दर्द रस, मुझे ऐसा सीना फ़िगार दे॥

ाम की यही कामना, यही एक उसकी है आरज़ू।
यह चन्दरोज़ा हयात को, तेरी याद में ही गुज़ार दे।

भजन नं० ८

ीं मिलता नहीं मिलता पता तेरा निशान तेरा।
े हैं ढूँढते लाखों मकां औ ला मकां तेरा।
ां है ज़ाहरी आंखों से गो तू मिस्ले बीनाई,
ार हरसू है या महबूब जलवा अयां तेरा।
ा हो है यहां क्या जिस पर मुझ को नाज़ बेजा हो।
कों तेरे मकां तेरा ज़मीनो आसमां तेरा।
हीं ओहदों की ख्वाहिश है न है स्वाज्य की इच्छा,
ारे वास्ते काफी है संगे आसतां तेरा।
ठादे अपने दिल से या पिता अज्ञान का परदा,
ज़र आजाये मुझको जलवाये हौला: फ़िशां तेरा।
उस दिन प्रेम समझूँगा कि हां तू सच्चा आर्य्य है।
ादाये धर्म होगा जिस घड़ी यह जिसमोजां तेरा।

भजन नं० ९

रागनी मध्यमात] [सारंग ताल

मैं उनके दरश की प्यासी। ।
जिनका ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं, योगी योगाभ्यासी।
जिनको कहत हैं अजर अशोकी, आश्रय हैं जिन के त्रिले
न यह जन्मे न यह मरें, काल पुरुष अविनाशी ॥ २ ॥
अमेद अच्छेद अनन्त आपही हैं अजर और अनादि।
अचल अमूर्त और अनुपम, प्रभु सर्व नियामी ॥ ३ ॥
अतुल बल जांका अटल राज है, सृष्टि सकल है दासी।
अमीचन्द जिन से होत प्रकाशक रवि शशि अग्नि प्रका

भजन नं० १०

मोहे प्रेम की भूक तो देर लगी अपने को प्रभु क्या देर
मैं तो तेरे प्रेम विन व्याकुल हूँ नामें पानी ना मैं आकल
इक तेरे भक्तों का नाकल हूँ अब आंखें सांझ सवेर लगी
मेरे नैन प्यासे दर्शन के प्रभु खोलो किवाड मेरे मन के
चलूँ पीछे तुम्हारे भजन के अब तो यही आशा मेरे लग
कब लग देखूँ अब आके प्रभु मोहे अपना दर्श दिखाओ
मोहे निज सेवा में लाओ प्रभु अब भटकत भटकत देर
सब भूल तेरे दर आयो जी मैं तो तेरा ही दास कहाये
विश्वासी बन आयो जी अब मोहे तेरी ही टेर लगी।

भजन नं० ११

अजब हैरान हूँ भगवन, तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥
करूँ किस तरह आह्वान, कि तुम मौजूद हो हर जा।
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊँ मैं॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान पर भगवान को कैसे चढ़ाऊँ मैं॥
लगाना भोग कुछ तुम को, यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊँ मैं॥
तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज चांद और तारे।
महा अँधेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊँ मैं॥
भुजाएँ हैं न सीना है न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं॥

भजन नं

हाँ नजर से गुज़े,
न का कोई पदार्थ न मिला।
ली फबन,
ो को मगर न मिला॥
पर है,
के कानों में है।

मगर आंखों से देखा तू पर्दा नशीं,
कहीं तू न मिला तेरा घर न मिला ॥
कोई मिलने का तेरा निशां भी है,
कोई रहने का तेरे मकान भी है।
तुझे देखा इधर तू इधर न मिला ॥
तुझे ढूँढा उधर तू उधर न मिला ॥
कहीं दस्ते सवाल दराज नहीं,
किसी और पे यूँ मुझे नाज नहीं।
कोई तुझसा गरीब नवाज नहीं,
तेरे दर के सिवा कोई दर न मिला॥

भजन नं० १३

प्रभु जी तू मेरे प्राण अधारे।
नमस्कार डंडौत बन्दना अनेक बार जाऊँ वारे।
उठत बैठत सोवत जागत यह मन तुझे चितारे।
सुख दुख सब अपनी बिथा मन तुझ ही आगे पुकारे।
तुम्हारी ओट बल बुद्धि धन तुम मेरे परवारे।
जो तुम करो सोई भला हमारा पीख नानक चरनारे।

भजन नं० १४

प्रभु मेरो तू ही एक सहारा।
...र वसीले सगरे टूटे बाकी तेरो ही आधारा।
...ग बन्धन से आपे छुडायो नहीं जन हुया तिहारा।
दुर्बल और पापों का लदकर लड़त २ अब हारा।
...ान बूझ और भरम भुला कर अवलग तोहे बसारा।
...म ही स्वामी अब आय बचाओ नहीं तो जात हूँ मारा।
...ेम विहीन अन्ध सम भटका यह विद्यासी विचारा।

भजन नं १५

मेरे तो तुम ही प्राण आधार।
...ब से तो भक्ति रस भायो फीका लगयो संसार।
जैसे राखो तैसे हो रहूँ सब विध तावेदार।
तूं आज्ञा को सिर धर मानूँ करूँ न कोई विचार।
कोप तेरे से हुए हैं मर तो उपजे नाना त्रास।
हिरख अनन्त कृपा तेरी में है सुख की आस।
अजर अमर अज सर्व व्यापक विश्व करता निराकार।
परम दयालू जो तू है भावे श्रीराम सोई स्वीकार।

भजन नं० १६

साची प्रीत हम तुम संग जोडी तुम संग जोड और संग तोडी।

जो तुम बादल तो हम मोरा जो तुम चन्द्र हम

जो तुम दीवा तो हम बाती जो तुम तीरथ तो हम
जहां जाऊँ तहां तेरी सेवा तुम सा ठाकुर और न दे
तुमरे भजन कटे भय फांसा भक्ती में गावे रोमी

भजन नं० १७

राखो लाज हरी तुम मेरी।
तुम जानत सब अन्तरयामी करनी कछु न करी।
अवगुण मोसे विसरत नाही पल छिन घडी घडी।
सब पर पंच की पोट बांध कर अपने सीस धरी।
दारा सुत धन मोह लियो हूँ सुध बुध सब बिसरी
सूर पतत को वेग उधारो अब मेरी नाव भरी।

भजन नं० १८

टेक—शरण पडा हूँ मैं तेरी दयामय॥
जगत सुखों में फँस कर स्वामी, तुझ से लिया चित फे
पाप ताप ने दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी।
बहा जात हूँ भव-सागर में, पकड लेव भुज मेरी।
अनेक कुकर्म गिनो मत मेरे, क्षमा दृष्टि देउ फेरी।
सत्य ज्ञान मधुर अपना करो प्रकाश एक बेरी।

। मलीन हृदय में मेरे, ज्योति प्रकाशे तेरी।
। तरङ्ग उठे मम अन्दर, प्रभु विनय सुनो मेरी।

भजन नं० १९

दिखाओ प्रभु मोहनी रूप स्वरूप।
तुम बिन हृदय रैन अंधियारी सूझे ना रूप अरूप।
भक्ती भाव की दो अदजल्लता प्रेम-भान की धूप।
ध्यान के दर्पण में मेरे प्रभु जी देखूँ छवि अनूप।
मुझ विश्वासी को दर्श दिखा कर दूर करो अन्ध कूप।

भजन नं २०

ोहे दीखत और न ठौर तुमरी शरण बिना।
ह संसार भयानक सागर जिया डरत इति मोर।
तुम ही हमरे परम सनेही तुम बिन कोई न और।
दीन दयालु बचाओ मोहे पाप दशा अति घोर।
धन सम्पत सुख तुम से ये सुख दीखत सब ही कठोर।
यह विश्वासी पड़ो शरणागत लाज रखलो मोर।

तुमरे दर का मैं भिकारी स्वामी लाज तुम्हें है मेरी ।
अपनी शरण में रख कर देओ भक्ति बिन देरी ।

भजन नं० २३

प्रीतम शरण लही है तेरी ।
डूबत हूँ भवसागर में बांह पकड़ लियो मेरी ।
काम और क्रोध की धार में स्वामी नाव पड़ी है मेरी ।
नाव टूटी अब चक्कर खाये रक्षा करो इक बेरी ।
तीक्षण धार और वायु तीक्ष्ण उलट देवें हैं बेड़ी ।
बेड़ी में अब जल भर आया चहुँ दिशा लहरों घेरी ।
हृदय तड़पत जिया लरजत है देख के घमण घेरी ।
मगर मच्छ मोहे खाने को दौड़ें आस है प्रभु एक तेरी ।

भजन नं० २४

टेक—पिता श्री तुम पतित उद्धारन हार ।
दीन शरण कृपाल के स्वामी, दुःख के मोचन हार ।
इस जग माया जाल भ्रमण में, सूझे न सार असार ।
सत्य ज्ञान बिन अन्ध सम डोलें, करें असत्य आचार ।
पाप अथाह भयङ्कर जल में, डूबत हैं मंझधार ।
तुमरी दया बिन को समरथ है, करे दीनन को पार ।

भजन नं० २५

। हरिगति प्रतिसङ्ग गाय, तिसके शोक निकट नहीं आ
मृतवत तेरो चरित मनोहर, मन की तप्त बुझाये।
ारे पतित अधम अति पापी, जो तव शरणी आये।
प्रभु हम अति दुखिया हो के तव शरणागत आये।
ाम सुखदाता ज्ञान प्रदाता, तैं यह नाम धराए।
ाग रहे द्वारे पर याचक, अब क्यों देर लगाए।
ापयन से उपरम रहूँ सदा, भक्ति हृदय में भाये।
ढ सुन वेद वेदांग 'अमीचन्द' संशय भ्रम मिटाये।

भजन नं० २६

जय जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता ॥ १ ॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धरता संहर्ता ॥ २ ॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।
मैं लालित व पालित हूँ पितृ-स्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध तुझ से है भ्राता ॥ ४ ॥
करो शुद्ध निर्मल मेरे आतमा को।

भजन नं० २८

पायें किस प्रकार हम जगदीश दर्शन आप का।
कौनसी ज्योति से हो प्रकाश भगवन आपका ॥ १ ॥
चांद सूरज आप को प्रकाश कर सकते नहीं।
उनके है प्रकाश का, प्रकाश कारण आपका ॥ २ ॥
खींच लेता है यह सारे विश्व का चित्र मगर।
कर नहीं सकता कदापि मन भी चिन्तन आपका ॥ ३
आप इसकी तो पहुँच से ही परे हैं हे प्रभु।
हो सके क्यों कर भला वाणी से वर्णन आपका ॥ ४ ॥
जड़ जगत तक ही पहुँच कर रह गईं सब इन्द्रियां।
रूप क्या अनुभव करें यह शुद्ध चेतन आप का ॥ ५ ॥
हैं हमारी शक्तियां इस काम में वे अर्थ सब।
है अनुग्रह आप के दर्शन का साधन आप का ॥ ६ ॥
कर्म बल से हीन हूँ मैं तप नहीं भक्ति नहीं।
आ पड़ा किन्तु शरण है, मेरा तन मन आपका ॥ ७
कीजिये स्वीकार मुझको दीजिए दर्शन दिखा।
आत्मा में हो मेरी अब प्रेम पूरण आपका ॥ ८ ॥
हृदय मंदिर खोल दे रौनक का है ज्योति स्वरूप।
जिस से हो प्रकाश इस में दुख भँजन का ॥ ९

बनाया जिस ने है तुझ को है वही तेरा असल में है
संभल अब तो दया सागर यह राज है भोग की मूल
सदा आनन्द रह मन में जो है निश्चय कि फल में है

भजन नं० ३०

हे जगत् पिता ! हे जगत् प्रभु ! मुझे अपना प्रेम और प
तेरी भक्ति में लगे मन मेरा विषय कामना को बिस
मुझे ज्ञान और विवेक दे मुझे वेद वाणी में दे श्रद्धा।
मुझे मेधा दे मुझे विद्या दे मुझे प्रज्ञा और विचार दे
मुझे यश दे और मुझे तेज दे मुझे बल दे और आरोग्य
मुझे आयु दे मुझे पुष्टि दे, मुझे शोभा लोक मंझार दे
मुझे धर्म कर्म से प्रेम हो तजूं सत्य को न कभी भी मैं।
कोई चाहे सुख मुझे दे घना कोई चाहे कष्ट हजार दे
कभी दीन हूं न जगत में मैं मुझे दीजे सच्ची स्वतन्त्रता।
मेरे फन्द पाप के काट दे मुझे दुःख से पार उतार दे
रहूं मैं अभय न हो मुझ को भय किसी मित्र अमित्र से।
तेरी रक्षा पर मुझे निश्चय हो मेरे भीरुपन को तू टा
मुझे दुश्चरित से परे हटा सुचरित का भागी बना मुझे।
मेरे मनको वाणी को शुद्धकर मेरे सकल कर्म सुधार

हृदय लोभरहित हो नित मिले शान्ति मुझे हर जगह।
मेरे शत्रुगण सुमति करें कुमति को उन की निवार दे॥
आज्ञा में रहूं मैं सदा तेरी इच्छा में रहे सर झुका।
कभी डूबे शाद अधीरता में तो इसको तू ही उभार दे॥

भजन नं ३१

ऊंची है शान तेरी ऊंचे मकान वाले,
तुझ तक हो क्या रसाई ओ ला मकान वाले।
दैरो हरम में ढूंढा लेकर चराग़ यसाँ,
तेरा निशां न पाया ओ ला मकान वाले॥
सीढ़ी लगा रहा है क्या अक़्ल नुक़ता रस की,
घर दूर है खुदा का ओ नर्दबान वाले।
है अक़्ल पा शिकस्ता तेरी रहे तलब में,
दौड़ायें लाख घोड़े वहमो गुमान वाले॥
अम्रे करम से तेरे है आबरूये हस्ती,
ओ फ़ौस आस्मां के रफ़ी मकान वाले।
दिल में तेरी तजल्ली आंखों में नूर तेरा,
कालिब में रूह में तू है जानों के जान वाले॥
कर तर्क वहमम दुनिया, पर्दा उठा खुदी का,
ओ मदये खुदनुमाई ओ शान दान वाले॥

भजन नं० ३२

सफल जीवन हो पर परमात्मन् जो तुम से यह पाऊं।
पराई आग में कूदूं पराई मौत मर जाऊं ॥ १ ॥
रिफाहे आम की खातिर अगर हों जिस्म के टुकड़े।
खुशी से खिलते हंसते मैं अपने तन को कटवाऊं ॥ २ ॥
मुसीबत में किसी का टपके इक कतरा पसीना भी।
मैं अपना खून देने के लिये तैय्यार हो जाऊं ॥ ३ ॥
दुःखी को देखकर टपके न खूं गर मेरी आंखों से।
तो बेहतर है कि अंधा होऊं न देखूं मैं न शरमाऊं ॥ ४ ॥
न हो बल जेर करने के लिये कमजोर लोगों को।
न पैसा धन मिले जो ज़ालिमो कंजूस कहलाऊं ॥ ५ ॥
गिरें जो गोद से माता पिता के तोतले बच्चे।
उठाकर अपने हाथों से उन्हें छाती से लगवाऊं ॥ ६ ॥
न हो ख्वाहिश बुरी मेरी कभी भी बदला लेने की।
मैं कौमी दुश्मनों को कौम की खिदमत में ले आऊं ॥ ७ ॥
जिन्हों ने अपने हाथों से हां तोड़े भी जनेऊ थे।
उन्हीं के हाथ से उनके गले में फिर से पहिनाऊं ॥ ८ ॥
मन्दिर तोड़कर मस्जिद न मस्जिद तोड़कर मंदिर।
न हरगिज भूले भाइयों को कदाचित मैं भी फिसलाऊं।
बुलाकर सब को अपने पास मैं बिठलाऊं मुहब्बत से।

उठाकर पर्दा दिल के आयने से तुमको दिखलाऊं ॥१०॥
न देना चन्द्र को कुछ भी हां अगले जन्म तू ने।
अगर देना तो यह देना कि वादा पूरा कर देना ॥ ११ ॥

भजन नं० ३३

है मुझको ज़हर तेरा,
दूर जगा में।
र्मल है नूर तेरा ॥
त, वलिहार तेरी वाहदत।
रा को सरूर तेरा ॥
जगता जहान सारा।
ल में सरूर तेरा ॥
ठाकर, खुदगर्जी को मिटाकर।
है, चन्द्रा हजूर तेरा ॥

भजन नं ३४

ढूंढ मारा जगत् सारा, तेरा द्वारा न मिला।
आजा आजा ग़म मिटा जा, राह बताजा मोक्ष का
तू भण्डारी न्यायकारी, मैं भिखारी हूं तेरा।

वेद चारे गावें प्यारे, महिमा सारे परमला ॥ २ ॥
गुल में खुशबू वायु में तू, रेत में है तू रमा।
कूप गहरा कोह सहरा, तेरा लहरा हर जगा ॥ ३ ॥
भजन गावें तुझको ध्यावें जय मनावें हम सदा।
तूही जंगल तूही मंगल, तूही जल में बुलबुला ॥ ४ ॥
अन्तर्यामी सब के स्वामी, मम नमामी ईश्वरा।
ज्ञान दीजो सुध लीजो, दूर कीजो दुःख मेरा ॥ ५ ॥
तूही माता तू भ्राता, सिर झुकाता मैं खड़ा।
अब तो हारा मैं विचारा, की पुकार तुम से आ ॥ ६ ॥
तुम हो शंभु करुणासिन्धु, दीनबन्धु हे पिता।
पार बेडा होवे मेरा, गर हो तेरा आश्रा ॥ ७ ॥
हे हरी अब क्यों करी, देरी जरी मैं ये खता।
तेरी कृपा हो जरा, होवे भला आज़ाद का ॥ ८ ॥

भजन नं ३५

है आक़ों के दिल में, भगवन् मकान तेरा।
और वेद पाठियों के, लब पर है नाम तेरा ॥ १ ॥
काशी के बुतकदों में, कुछ तू नहीं मुकीय्यद।
हर जा है तेरा मन्दिर, हर जा धाम तेरा ॥ २ ॥
जपते हैं तुम को प्यारे, दुनियां के जीव सारे।

हस्ती-का तेरी शाहद हर एक काम तेरा ॥ ३ ॥
दिल साफ कर लिया है दुनियां की मल से जिसने।
वह देखता है दिल में दर्शन मुदाम तेरा ॥ ४ ॥
आज़ाद को सिखा दो भक्ती की राह अपनी।
जिस से अमर हो पी के अमृत का जाम तेरा ॥ ५ ॥

भजन नं० ३६

सी दुनियां के धन्दे को, अगर शौके हकूमत हो।
मेरा शौक दुनिया में फकत इन्सां की खिदमत हो ॥ १ ॥
मि अपना कोई ज़ालिम अगर ज़ोरो जफा समझे।
हब्बत हो धर्म मेरा, ईमान उलफत हो ॥ २ ॥
पये को दुखिये किस्मत, अगर कोई खुदा समझे।
रे मैं टीकरी समझूं, मुझे ऐसी कनायत हो ॥ ३ ॥
गर दामनेगो पैकर पर, नाज़ां हो उदू कोई।
तो मेरे नाज़ का बाइस, मेरी सेवा सदाकत हो ॥ ४ ॥
गर कोई आशिके मादिक गिरफ्तारे गुनीयत हो।
री भी ज़िन्दगी का फर्ज़, इन्सफयाले आफ़ित हो ॥ ५ ॥
रे रोशन महल्लों में कोई दिवाली की कंदीलें।
री कुटिया में, मिट्टी का दिया जलने से राहत हो ॥ ६ ॥

भजन नं० ३९

हमने ली है फकत इक तुम्हारी शरण,
हे पिता और कोई सहारा नहीं।
पतित पावन प्रभु आसरा दो हमें,
आसरा और कोई हमारा नहीं।
न तो बुद्धि न भक्ति न विद्या का बल,
आत्मा पै चढ़ा पाप कर्मों का मल।
बिन तुम्हारी दया के न सकते सम्भल,
तुमने किस २ को स्वामी उभारा नहीं।
माया मोह वश हुए ऐसे संसार में,
फंस गये लोभ क्रोध अहङ्कार में।
डोले नैय्या हमारी मंझधार में,
नजर आता कोई भी किनारा नहीं।
है अविद्या यहां कैसी छाई हुई,
सब धर्म और कर्म की सफाई हुई॥
आस तुम से हे ईश्वर लगाई हुई,
इस द्वारे सा कोई द्वारा नहीं॥
वेदपाठी न यहां ब्रह्मज्ञानी रहे,
वीर योद्धा न क्षत्री लासानी रहे।
नाहीं दाता रहे नाहीं दानी रहे,

अपना अपना ही चलता गुजारा नहीं ।
दीन भारत है दुखिया बहुत हो रहा ।
लुट चुका यहां बाकी रखा है क्या ।
हे पिता लो बचा हे पिता लो बचा,
और दर पै तो आना गवारा नहीं ॥
इतनी विनती पिता स्वीकार करो,
हम अनाथों का नाथ अब सुधार करो ।
तुम्हीं जसवन्त सिंह का सुधार करो,
हाथ आगे किसी के पसारा नहीं ॥

भजन नं० ३८

ऐ मेरे जगदीश भवसागर से बेड़ा पार कर ।
तोड़ दे बन्धन सभी मैं दास हूं उद्धार कर ॥
काम की न कामना हो ध्यान न अपमान का ।
अपनी भक्ति से मुझे इतना बड़ा जरदार कर ॥
प्राण हों बस में मेरे सब इन्द्रियों पर हो विजय ।
यह मेरा पुरुषार्थ अब जगदीश तू फलदार कर ॥
शुभ विचारों से हो पवित्र अन्तःकरण का कोष यह ।
सत्य पर जो मर मिटे ऐसा मुझे सरदार कर ॥
यह ऋषि दयानन्द सा बल मुझ को भी दे ऐ प्रभु ।

मौत का न कष्ट हो इस के लिये तय्यार कर ॥
शर्म से न यह झुके बस सर तेरे दरबार में ।
हंस के तेरी गोद में आऊं यही उपकार कर ॥
मगन तेरी लगन में निस दिन रहूं हर क्षण रहूं ।
मन मेरे चंचल को तू एकाग्र अब करतार कर ॥
फिर बने आज़ाद गिरधर तेरे विस्तृत राज्य में ।
द्वेष का परदा उठा बिनती मेरी स्वीकार कर ॥

भजन नं० ३९

एक घड़ी तो सेवा ना कीनी,
महा बखानी ना अन्त की जानी ।
रातों से नाहीं लाभ उठाया,
सौ सौ उन्की एमें गंवाया ॥
तू सिमरन से मन है चुराया,
आधी आयु की हो गई हानी ।
जग धन्दों में दिन को बिताया,
कौडी से दुनिया को ठग खाया ॥
पुण्य तजा और पाप कमाया,
दूजी आधी भी हो गई कानी ।
विषय विकार में धन को गंवाया,

बल वीर्य्य को नाश कराया।
धर्म्म गया अधर्म्म ही आया,
पशुओं से हुआ मन्दा प्राणी॥
पर उपकार कछु नहीं कीना,
पर स्वार्थ का नाम ना लीना।
निज स्वार्थ में तन मन दीना,
हृदय हुआ पूरा पापानी॥
जग में आ कछु नाहीं संवारा,
चंगा आया भी चलिया माड़ा।
क्योंकर आगे हो निस्तारा,
कौन सुने अब विपद कहानी॥

भजन नं० ४०

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है।
मेरे दिल का अब दिलरुबा एक तू है॥
फ़क़त मेरे चश्मों से है ज़ेरे ख़ालिक।
लगा अब मेरा ध्यान लालो सुखद है॥
अब तो दिल यह मुझ से ही पाता है तसल्ली।
बसी मगज़ में प्रेम की तेरे बू है॥

समझते हैं यों गुरु को भक्तगण दीवाना ।
　　तेरा जिकर हरदम जबां पर है ॥

भजन नं० ४१

प्रभु जी तू मेरा रखवारा ।

दुष्ट मलीन हृदय है मेरा तू है शोधन हारा ।
पाप से मुझ को टार हा धर्म धर्म में प्रेरण हारा ॥
मैं हूं निर्धन भिक्षुक कन्गाला तेरा है कोष अपारा ।
तू ही मेरा जन्मदाता तू है ईश प्यारा ॥
मैं हूं जन्म मरन से दुखिया तू अज अमर अकारा ।
जन्म मरन के बन्धन काटो हे प्रभु आरत हारा ॥
जिस ने शरण गही प्रभु तेरी उस ने जन्म सुधारा ।
धन्य वह पुरुष तुम को सिमरे है प्रभु सत्य करतारा ।
नमस्कार तुझ को ही मेरा होवे बारम्बारा ।
मुझ निर्धन की भेंट यही है कर इस को स्वीकारा ॥
वर दे मुझ को हे वरदाता तुझ से हो उद्धारा ।
तेरा नाम जपूं मैं पल पल हो जावे निस्तारा ॥

भजन नं० ४२

कैसे भजूँ तोहि रक्षपाल ।
विद्या बल नहीं संग ना गज्ञान जानी ना भक्ती की चाल ।
और ना कोई सामर्थ जिस से सेवें परम कृपाल ॥
दुर्जन अती ही घेर चोफेरे आये जगत जंजाल ।
ऐसे दयाल छुड़ाओ तन से भये सब तन के टाल ॥
वैयल अनेक जो मार्ग रोकें शत्रुओं के पुंजाल ।
सब को हरो हरी दुःख निवारो देवो शरण महाराज ॥
यही विनय हम वारम्वारी करें सुनो जग पाल ।
भक्ती दान करो करुणावल शीघ्र करो हे निहाल ॥

भजन नं० ४३

क्यों दीनानाथ मुझ पै तेरी है दया नहीं ।
आश्रित तेरा नहीं हूं कि तेरी प्रजा नहीं ॥
मेरा तो नाथ कोई तुम्हारे विना नहीं ।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं ॥
माना कि मेरे पाप बहुत हैं पर है
कुछ उन से नियां त-

कपिल पातञ्जल गौतम आदि करनी कर हुए पार।
अमीचन्द जैसे नीच को तारो हे पिता पतित उधार॥

भजन नं० ४५

मांगु मांगु हरी तेरा चरन शरण
सकल द्वार को छोड़कर आये तुमरे द्वार।
शरन पड़े की लाज को तू ही राखन हार॥
शरन गही प्रभु आप की सुनिये दीन दयाल।
दास अपना जान के करो सदा प्रतिपाल॥
ज्ञान ज्योति प्रभु दीजिये निज चरनन में लाय।
निर्भय हो गुण गाईए पाप तुमर कट जाय॥
हम सब दीन मलीन हैं तू प्रभु दीन दयाल।
कृपा कर वर दीजिये कटैं सकल जञ्जाल॥
हम पापी अति अधम हैं तू प्रभु पावन रूप।
बांह पसार निकालिये डूबे हैं भव कूप॥
तू कृपा कर अन्त नहीं पापी करे उधार।
उस स्वामी जगदीश के सदा सदा बलिहार॥

भजन नं० ४६

मेरी नाव फँस उतरे पार, किस विध उतरे पार॥१॥
वार पार कोउ घाट न सूझत, आन पड़ी मँझधार॥२॥
बिजली चमके बादल गरजे, उलटी चलत बयार॥३॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, नायक हैं मतवार॥४॥
धुपद सुनावत सुनत न कोई, हमरी काफ पुकार॥५॥
तीक्ष्ण जलधारा दुस्तर है, उठत तरङ्ग अपार॥६॥
जिस भुज बल से गज गह लीना, सोई हाथ पसार॥७॥
अमीचन्द की राखो नावरिया, पड़त भँवर मँझधार।

भजन नं० ४७

मेरे प्राणपति से जाय कहियो,
दर्शन की लग रही अभिलाषा।
निश दिन तरसत हैं मेरे नैना,
ज्यों जल बिन चातक प्यासा।
तुम बिन सब कुछ फीकी लागत,
आभरण भूषण सलमल खासा।
क्षमा करो अपराध प्रीतम,
अब अपनी शरण में देओ वासा।
धन धन यौवन धन है संयोगन,

जिस की पति पूरी करे आशा।
दास कहाये किस के ढिग जाए,
'धर्मचन्द' दासन अनुदासा।

भजन नं० ४८

मैं तेरी, मैं तेरी, मैं तेरी, वे प्रभुजी।
सुध हीनी सुध लीनी तूं मेरी, वे प्रभुजी॥
गुण गावां फल पावां, तर जावां वे प्रभुजी॥
तूं दयालु कृपालु प्रतिपालक वे प्रभुजी॥
मैं झल्ली तुर चल्ली ते इकल्ली वे प्रभुजी।
हथ खाली देह जाली दुरे हाली वे प्रभुजी॥
तू दाता पिता माता, है विधाता वे प्रभुजी।
मैं विचारी औगुण हारी ते भिखारी वे प्रभुजी॥
मेरी नैय्या वेहण पैय्या रख लैय्या वे प्रभुजी।
जिन्द जांदी गोते खांदी, ते पछतांदी वे प्रभुजी॥
तूं कर्ता दुःख हर्ता तूं ही भर्ता वे प्रभुजी।
स्वामी आया समझाया तां मैं गावां वे प्रभुजी॥
अर्सी रादी पट फाटी सहाई वे प्रभुजी।
सच्चिदानन्दा काटो फंदा देवो अनंदा वे प्रभुजी॥

भजन नं० ४९

मैं गुलाम मैं गुलाम मैं गुलाम तेरा,
तु दीवान तु दीवान तु दीवान मेरा।
एक रोटी और लंगोटी द्वारे तेरे पाऊं,
भक्ति भाव देह अरोग नाम तेरा गाऊं॥
तु दीवान मेहरवान नाम तेरा मीरां,
अब की बार दे दीदार मेहर कर फकीरां।
तु दीवान मेहरवान नाम तेरा वारियां।
दास कबीर शरन आयो चरन लाके तारियां॥

भजन नं० ५०

टेक—मशहूर हो रहा है खलकत में नाम तेरा।
तूहीं सभी का अफसर साहिब गरीब परवर
मामूर हो रहा है कुदरत कलाम तेरा॥१॥
जल थल के जीव सारे सूरज व चांद तारे।
मशकूर हो रहा है आलम तमाम तेरा॥२॥
आलम में तू ही तू है गुल में व मिस्ल बू है।
भरपूर हो रहा है सब में मकाम तेरा॥३॥
सुन ले पुकार मेरी आया शरण मैं तेरी।
मजबूर हो रहा है गम से गुलाम तेरा॥४॥

सत्चित् तू आनन्दा बलदेव तेरा बन्दा ।
मख़मूर हो रहा है पीकर के जाम तेरा ॥ ५ ॥

भजन नं० ५१

यों ही उमर अज़ीज़ ख़राब हुई,
कोई धर्म का काम मगर ना हुआ ।
रहा और रहूं मैं भटकता ही बस,
राहे रास्त से मेरा गुज़र ना हुआ ॥
लाखों सरमन कथा उपदेश सुने,
मैंने वेदों नसाद से ग्रन्थ पढ़े,
सारे नुक्ता परस्थापरही साबित हुए,
आह दिल पर किसी का असर ना हुआ ॥
मिली उमर अज़ीज़ थी जिस काम को,
उस पै ध्यान न आया कभी नाम को ।
अब मैं रोता हूँ उस घड़िये ख़ाम को,
आह पहले से क्योंकर ख़बर ना हुआ ॥
सदा मीन की तरह मैं तड़पा रहा,
मुँह लगाते ही दरिया ने थूक दिया ।
मेरी ज़िन्दगी यों ही गई बेमज़ा,
गुरुमेहदज़ल बना के गुज़र ना हुआ ॥

रंग रलियां मनाता रहा हर घड़ी,
रही कच्चे घड़े की हमेशा चढ़ी।
मैंने समझा था यों ही रहेगी चली,
आह पहले ख़याले सफ़र ना हुआ॥
अब तो आता है मुंह को कलेजा मेरा
नज़र आता है दहनो कज़ा जो खुला।
कहूं किस मुंह से मुझ को बचालो पिता,
मुझे पहले से तो तेरा डर ना हुआ।
तू ने भेजा दया से था इक महा ऋषि,
दुखी भारत को दे आके तो शान्ती॥
कहो बढ़कर है क्या इससे बदक़िस्मती,
मुझे दीदार उसके कमर ना हुआ॥
उसने क्या क्या हमारी ना ख़ातिर किया,
कौनसा रंजो दुख जो ना उस ने सहा।
आख़रश जाम ज़हर हलाहल पिया,
राहे हक से वह पीछे मगर ना हुआ॥
मैंने उस के भी एहसां दिये सब भुला,
उसके दिखलाये राह से मैं उल्टी चला।
आह वह तो हमारा था सच्चा पिता,
लेकन उसका मैं सच्चा पिसर ना हुआ॥

आया खतरा रहे धर्म में गर नज़र,
डर के मारे हुआ पानी जानो जिगर।
मिस्ल आर्य मुसाफिर मैं होवे ख़तर,
देर नर बन के सीना सपर ना हुआ॥
अब तो अपनी शरन में बिठा लो प्रभु,
तेरा बच्चा हूं उंगली लगा लो प्रभु।
प्यार भक्ती मुझे खुद सिखालो प्रभु,
अब से तेरा हूं पहले से गर ना हुआ॥
प्रेम की अब तो हरदम विनय है यही,
है जो आर्य्यसमाज की गंगा निर्ली।
छुटे उस से ना यह उमर भर को कभी,
अभी तो उसका दामन है तर ना हुआ॥

भजन नं० ५२

दो कर जोड़ विनय करूं तोरे,
सब अपराध क्षमा करो मोरे।
मैं छलिया कपटी अती कामी,
तुम हो पतित उधारण नामी॥
तुम्हें छोड़ किस द्वारे जावें,
मन की कथा हम किस को सुनावें।

हम सेवक हैं अनुगत बालक,
तुम स्वामी सदा प्रतिपालक ॥
बाल गिरे हम शरण तुम्हारी,
जन्म मरण का है दुख भारी ।
विनय करें हम प्रतिदिन उठ प्राता,
हम को कण्ठ लगाओ ताता ॥
है जंगल में मंगल दाता,
तुम हो मात पिता मम भ्राता ।
चारों पदार्थ आप ही दीजे,
दर दर का नहिं भिक्षुक कीजे ॥

भजन नं० ५३

भूख लगे प्यास लगे शीत अरु घाम लगे
मो पै नहीं मिटे प्रभु मिटे तो मटाईये ।
चाहे दे दीजे चाहे लीजे अपनी देह
निपट निरंजन जो अनन्त ना डुलाईये ॥
राओरो भिखारी हो को पे हो भीख मांगु
यही भीख मांगु मो पै भीख ना मंगाईये ।

सिधन के साधन के संत और महंत के
जो सो हो तियों सब सों जीयस्ता की चाहिये ॥

भजन नं० ५४

जो हरिगीत प्रीतिसंग गाय, तिस के शोक निकट नहिं आय।
अमृतसम तेरो चरित मनोहर, मन की हम चुराय।
उधरे पतित अधम अति पापी, जो सब शरणी आय।
हे प्रभु हम अति दुखिया हो के सब शरणन गत आय।
परम सुखदाता ज्ञान प्रदाता, हैं यह नाम धराय।
मांग रहे द्वारे पर याचक, अब क्यों देर लगाय।
विषयन से उपराम रहें सदा, भक्ति हृदय में आय।
यह सुन वेद वेदांग 'धर्मचन्द', संशय भ्रम मिटाए।

भजन नं० ५५

गंगा का हो किनारा दामन हिमालय का।
फ़र्श गियाह पत्थर का एक फ़क़त हो तकिया॥
तन पर लिबास उरियां सीधा न जिसका उलटा।
बस ओ३म् का लगाऊं इस ज़ोर से मैं नारा॥
जंगल पहाड़ सहरा एक दम से गूंज जावें।
और बाज़ गश्त में भी ओ३म् ओ३म् ही सुनावें।

जंगल का शेर मेरी कुटिया का पासबां हो ॥
बुलबुल सुनावें नग़मा एक शौक़ का समां हो ॥
आंखों से मेरी गंगा गंगा पे एक रवां हो।
हां प्रेम का समां और होश का धुआं हो ॥
नामो निशां न बाक़ी हो नाम की जलन का।
रहबर हो एक तू ही इस रहरवे धर्म का ॥
फल फूल और पानी गंगा का सब ग़िज़ा हो।
सदका दिया हो रोशन पंछी की तरह हवा हो ॥
साया हो आस्मां का मानन्द यह रिदा हो।
एक मैं हूं और यह हो बाक़ी न दूसरा हो ॥
मैं उस पे जान वारूं सीने से यह लगा ले।
क़दमों पे मैं गिरूं तो हाथों से यह उठा ले ॥
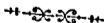
३—उपदेश।

भजन ५६

अगर है जीवन की मुराद ऐ ग़ाफ़िल,
तो धर्म पै तन मन निसार करदे।
मिसाले शम्म अपनी शोके हस्ती,
जहां को रहके यादगार कर दे॥
तुझे अमारत की गर तलब है,
लुटादे दौलत को बेकसों में।
मिसाल दरया जो पाये दे दे, मिलेगा,
मत इन्तजार कर दे॥
ख़ुदी में नुकसान है सरासर,
जो फायदा है तो बे ख़ुदी में।
ख़ुदा से भी मांगना ख़ुदा बनके,
तेरे बेड़े को पार कर दे॥
यह माना है सख्त आजमाइश,
बिछी है माया जाल हरसू।
तू वेद का पढ़के इसमें आज़म्,
तलिसम यह तार २ कर दे॥

भजन नं० ५७

चलो मिल कर के आर्यः भाई,
सभी प्रभु चरनन सीस नवादेवें।
दरद मंद उस से बढ़ कर भला कौन है,
दर्दे दिल उसको चलकर सुना देवें।
दिन बदिन दुःख है अब होरहा बेहतर,
शकल राहत नहीं आती मुतलिक नज़र।
बदसे बदतर हो रहे हैं शामो सहर,
आयो अपने पिता को बता देवें॥
पाप हम में ज्यादा है, अब हो रहा नहीं,
नेकी की जानब ध्यान ज़रा।
कोई सुनता नहीं है किसी का कहा,
और किसको यह दुखड़ा सुना देवें॥
बेज़बानों के कटते हैं यां अब गले
और आते हैं सैकड़ों खंजर तले।
क्यों ना उनकी जान गई हम हैं लेते मज़े,
मालूम फिर बदुया देवें॥
कभी जिस जा थी दुध की धारा बहे,
आज खून की यां पर है नदी चले।

क्यों ना फिर दुःख पे दुःख हमको भारे मिले,
क्यों ना फिर परमेश्वर भी सज़ा देवे।
उसका हुक्म था मिलजुल के प्यार रहो,
आप जीयो और औरों को भी जीने दो।
प्राणीमात्र को तुम मित्रवत् समझो,
परदा दुई का दिल से हटा देवें॥
एक हम ने ज़बां के मज़े के लिये,
सैकड़ों बेज़बां ज़बह तेग़ किये।
जिन की आहों से अर्शो समा कांप उठे,
क्यों ना परमात्मा फिर सज़ा देवे॥
छोड़ो छोड़ो इसे ज़ुल्म है नारवा,
अपनी खातिर ना काटो किसी का गला।
किसी मासूम की तुम ना लो बददुआ,
बल्कि ऐसे रहो वह दुआ देवे॥
ऐ पिता अब तेरे आगे फ़रयाद है,
यहां भारत में अब ज़ुल्मो बेदाद है॥
जिसे देखो वही मस्ले जल्लाद है,
इन को अपनी दया से दया देवें।
ताकि प्रेम से मिल कर के सारे रहें,
एक दूसरे का ना यह खून पियें।

खुद जियें और औरों को भी जीने दें,
दया धर्म का परवाह चला देवें ॥

भजन नं० ५८

भारत के पैर हिला दिये इस नफ़सा नफ़ासानी ने ॥
दया धर्म का नाम नहीं है,
भजन पाठ से काम नहीं है,
व्रत तीर्थ कोई धाम नहीं है ॥
सत्य उपदेश भुला दिये दुष्टों की बेईमानी ने ॥
ब्राह्मण ने ब्राह्मण पद छोड़ा,
क्षत्रिय ने शस्त्र पन तोड़ा,
धर्म से सब ने मुख मोड़ा,
गउओं के गले कटा दिये लोगों की नादानी ने ॥
चोरी यारी और बदकारी,
विषयों में रम रहे नर नारी,
मदरा सबको लगे प्यारी,
बिल्कुल अन्ध बना दिया हा हा कोर पानी ने ॥
हुकमचन्द कहता समझाई,
भारत पर मूर्खता छाई,
सब के होश उड़ा दिये कलयुग की राजधानीने ॥

भजन नं० ६३

भोर भई पक्षि गण जागे उठ जन राम नाम गाओ रे ।
सुख प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार पुलपाओ रे ॥
प्रभू की दया सिमर निज मन-सरल स्वभाव उपजाओ रे ।
रूप कृतज्ञ प्रेम में आन के-नयन से नीर बहाओ रे ।
नेह रूप सागर में को बारम्बार डुबाओ रे ।
निर्मल शीतल लहरें ले ले-आत्मा ताप मिटाओ रे ॥

भजन नं० ६४

वैदिक धर्म पर प्यारो, तुम जां निसार करदो ।
तन मन सभी धर्म पर, हां हां निसार करदो ।
दुनियां में गर धर्म का, प्रचार चाहते हो ।
तो जिन्दगी के सारे सामां, निसार करदो ॥
तुम क्या थे हो गये क्या, सोचो तो अपने दिल में ।
और अपनी बेहतरी पर, निसियां निसार करदो ॥
अज़मत अगर गुज़िश्ता, फिर चाहते हो वापिस ।
तो [illegible] की झूठी, खुशियां निसार कर दो ।

भजन नं० ६६

ाहता है इयाने अयदी नो गाह पै लगा मिटे हुयों थीं।
ा ले जल्दी से नाम अपना फहरिस्त में फिर कटे हुयों थी॥
माना कयजा में उनके कोई न लेगा गोला न गोग आदम।
ार फलह होती है हमेशा ही रास्ती पर डटे हुयों की॥
हस्ती जिनकी धराये आलम यह आप अपनी गुजरंगे आंरे।
गर है मेरे नजर हमेशा रुहैं निफा दमघुटे हुयों की॥
लेगा उकवा में खुद दरसूद इनाम की भी बरतरी हो।
माम दौलत जमा रहेगी धर्म की खातर लुटे हुयों की॥
ा दूध फटता है इसका गाहक नहीं है कोई किसी भी भाव।
ही तो कीमत है चन्द्र जग में यादमी दिल फटे हुयों की।

भजन नं० ६७

क-अय देश भक्तो भारत के लालो, चढ़ा रहेगा खुमार कब तक
ई रहोगे गफलत में सोये सोओगे आंखें अब यार कब तक
नींद गफलत की कैसी तारी खुली नहीं क्यों आंखें तुम्हा
में की नैय्या है डूबन हारी, रहेगी सुस्ती सवार कब तक

भजन नं० ६८

जो चाहता है दयाल धर्मी मिटे दुखों की निशान होजा।
फलक के ओजे निजम के भांति तू अपनी आबिकी हाजो
शमा की मानिन्द खुद तू जलकर औ रोशन मरूप दे जा
तो नाम हो जावे अमर तेरा ये जिन्दगी सा जपार होजा
अगर तू चीमो धर्म की मानिंद जमीन पर पायमाल होजा
तो नाम शोहरत के आसमां पर पहुंच के माहे हलाल होजा
धर्म का दरिया बहा दिया है ऋषि दयानन्द ने जन्म लेकर
धर्म की दौलतसे तू भी गाफिल उठ अपनी बस मालामाल है

ही तमन्ना ये ही है रुवाहिश ये ही मेरे दिल की आरज़ू है।
में से बढ़कर अपने यार व हर एक जाति का ख्याल होगा
लेया है अपने धर्म की खातिर जो हाथ में कासए गदाई।
ख्याल क्यों करता है ज़र्रा पै तू खुदही शाहे मवाल होगा॥
अगर सदाकत का फूंक दे यह तन में जाति के शाज फांई।
जो हफ्त अफलाक के लिये भी मिटाना उस का मुहाल होगा
यह नमूना हूं मा दवाली का आज ज़ेरे फलक मुसाफिर।
के तीर दुश्मन भी आते २ मेरे जिगर तक निढाल होगा॥

भजन नं० ६९

महमान चार दिन के कुछ तो विचार कर ले।
पापों का दूर अपने दिल से गुबार करले॥१॥
बीती बहुत गई जो अफसोस उस का मत कर।
जितनी रही उमर में अपनी सुधार करले॥
है जो जहाज़ जग में इक वेद ज्ञान का ही।
ले आसरा तू उस का अब बेड़ा पार करले॥
मंज़िल कठिन है तेरी दुश्मन हज़ार जग में।
कुछ शस्त्र इन की खातिर संग में तय्यार करले॥
अफसोस पद की गठड़ी अब तक जो तूने बांधी।

दे फैंक उस को जल्दी यों हलका भार करले ॥
नेकी की तरफ़ रग़बत होने दे अपने मन की।
उपकार कर हृदय को अपने उद्धार करले ॥
जो रोज़ के फरायज़ इन्जाम दे तू इनको।
शुभ देव यज्ञ इकतो संन्ध्या दो वार करले ॥
मुक्ती का होगा भागी ऐसे करम से गिरधर।
छूटेंगे सारे फंदे वस एतवार करले ॥

भजन नं० ७०

उठो अब नींद को त्यागो हुआ बिल्कुल सवेरा है
हवा बदली ज़माने की तुमें आलस ने घेरा है ॥
बड़े बढ़ने लगे तुमसे जो छोटे थे कई दरजे।
तुम्हारी अकल पर कीना जहालत ने बसेरा है ॥
पड़े तुम बेखबर सोते नहीं जगते जगाने से।
तुम्हारे घर में घुस बैठा अविद्या का लुटेरा है ॥
बजुरगों की थी क्या इज्जत तुम्हारा हाल है अब क्या
जरा तो ग़ौरकर सोचो हुआ यह क्या अन्धेरा है ॥
करो अब देश की चिन्ता यह ग़फ़लत निन्द्रा को त्यागो
नहीं अब डूबता कुछ दिन में यह भारत का बेड़ा है

जब जायगी सारी तुम्हारी शान और शौकत
कर अफसोस खाओगे पड़े जब दुःख घनेरा है
ओ पे प्रभु अब तो हमारे देशी भाइयों को
बलदेव की अरज़ी भरोसा नाथ तेरा है ॥

— —

भजन नं० ७१

ही याले अब तो जाग भोर भई है निन्द्रा त्याग
ही भजनी बीती रजनी बोलन चिड़ियां कूके काग
नकी किरनें फेर निरखे जाग उठा तेरा सोता भाग ॥
ल का गाले राग जिससे हो पती संग अनुराग ॥

———

भजन नं० ७२

निमन्द अज्ञानी, जन्म हरि भक्ति बिन खोया ।
ा काम क्रय भूले, रहा अज्ञान में सोया ॥ १ ॥
रहा अदालत का, अकल की आंखों पे तेरे ।
को छोड़ कर मूर्ख, ज़हर का बीज़ क्यों बोया ॥ २ ॥
और काम के बस हो, जन्म बरबाद कर दीना ।

विमुख निज ईश से हो कर, वृथा शिर भार क्यों ढोया ॥३॥
करो उपकार दीनों का, कपट छल को ज़रा त्यागो।
भलाई कीजिए सब से, तो तेरा भी भला होगा ॥ ४ ॥
समझ 'बलदेव' निज मन में, न तेरा कोई यहां साथी।
रहा तू नींद में गाफ़िल, न उठ कर हाथ मुंह धोया ॥ ५ ॥

भजन नं० ७३

अहो अन्धे मूर्ख ! तू कैसा है सोया।
अमोलक समय तू ने सोते ही खोया ॥ १ ॥
न आंखें ही खोलीं न करवट ही बदली।
न दर्पण ही देखा न मुखड़ा ही धोया ॥ २ ॥
गर्भाशय का भी न समझा तू आशय।
कहु किन २ कर्मों का यह दण्ड ढोया ॥ ३ ॥
पहिना था जामा मनुष्य जन्म का।
पापों के कीचड़ में तूने डबोया ॥ ४ ॥
भूषण की शोभा को क्या जाने गर्धभ।
गले में तेरे कैसे माणिक परोया ॥ ५ ॥
'अमीचन्द' बालक जन्मता है रोता।
चलते समय भी यही रोना रोया ॥ ६ ॥

भजन नं० ७४

अवसर बीतो जात है प्राणी तेरा अवसर बीतो जात ॥
एक पल की हीरा मोती से, तेरा अवसर बीतो जात ॥ १ ॥
साठ मिनट गुजरे गया घंटा, चौबीस में दिन रात ।
पल २ करके हर दिन होत है, यों मनुष्य आयु जात ॥ २ ॥
छः ऋतु मिलके बरस होत हैं, ऋतु २ में दो मास ,
मास २ में तीस दिवस हैं, पल आवत पल जात ॥ ३ ॥
बालपन गया खेल कूद में, यौवन सुखीन साथ ।
वृद्ध भया कुछ मन नहीं आवत, कांपन लागे गात ॥ ४ ॥

भजन नं० ७५

आऊंगा ना जाऊंगा मरूंगा ना जिऊंगा ।
दर्शके भजन का प्याला पिऊंगा ।
कोई जावे मक्के कोई जावे काशी ।
देखोरे लोगो दोनों गल फांसी ॥
कोई फेरे माला कोई तसवी ।
देखोरे साधो यह दोनो हैं कसवी ॥
कोई पूजे मढ़ियां कोई पूजे गोरां ।

भजन नं० २५

जो हरिगीत प्रतिसङ्ग गाय, तिसके शोक निकट नहीं आवे।
अमृतवत तेरो चरित मनोहर, मन की तप्त बुझाये।
उधरे पतित अधम अति पापी, जो तव शरणी आये।
हे प्रभु हम अति दुखिया हो के तव शरणागत आये।
परम सुखदाता ज्ञान प्रदाता, तैं यह नाम धराए।
मांग रहे द्वारे पर याचक; अब क्यों देर लगाए।
विषयन से उपरम रहूँ सदा, भक्ति हृदय में भाये।
पढ सुन वेद वेदांग 'अमीचन्द' संशय भ्रम मिटाये।

भजन नं० २६

जय जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता ॥ १ ॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धरता संहर्ता ॥ २ ॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।
मैं लालित व पालित हूँ पितृ-स्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध तुझ से है भ्राता ॥ ४ ॥
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को।

हे जड़ पदार्थों को शीस नित्य तू निवावे। विना० ॥२॥
हे घजा गाल चाहे मृदङ्ग और बजा घड़ियाल।
हे टन टन डीम चाहे झांझ तू बजावे। विना० ॥ ३ ॥
हे फिर तू प्रयाग काशी में जा प्राण त्याग।
हे गङ्गा यमुना चाहे सागर में नहावे। विना० ॥ ४ ॥
रका और रामेश्वर बद्रीनाथ पर्वत पर।
हे जगन्नाथ में तू भ्रष्ट भात खावे। विना० ॥५॥
हे जटाजूट बड़ा जोहड़ में चाहे पान फड़ा।
हे यह पाखंड रूप लाख तू बनावे। विना० ॥६॥
नियों का करले संग पापों की तज दे भङ्ग।
बलसिंह' मुक्ति का साधन तब आवे। विना० ॥७॥

भजन नं० ७८

—पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहचान।
कठिल से ये तैं देह पाई, जोकि तूने सोय गवाई।
तज गुफ़लत नादान। पापी मन० ॥ १ ॥
गया फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछतावे।
मौत सिर पर जान। पापी मन० ॥ २ ॥
२ राजा मायाधारी, विक्रम भोज दधीच से भारी।

हे जड़ पदार्थों को सीस नित्य तू निवावे । विना० ॥२॥
है बजा गाल चाहे सह और बजा घड़ियाल।
हे डफ डौरू चाहे झांझ तू बजावे । विना० ॥ ३ ॥
है फिर तू प्रयाग काशी में जा प्राण त्याग।
है गङ्गा यमुना चाहे सागर में नहावे । विना० ॥ ४ ॥
लका और रामेश्वर बद्रीनाथ परबत पर।
है जगन्नाथ में तू भ्रष्ट भात खावे । विना० ॥५॥
है जटाधारि बड़ा पेट में चाहे कान फड़ा।
है यह पाखंड रूप लाख तू बनावे । विना० ॥६॥
नियों का करले संग पेटों की तज दे भङ्ग।
'नर्मसिंह' मुक्ति का साधन तब आवे । विना० ॥७॥

भजन न० ७८

—पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहचान।
शिकल से ये तैं देह पाई, जोकि तूने सोय गवाई।
तज गफ्लत नादान । पापी मन० ॥ १ ॥
गया फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछतावे।
मौत सिर पर जान । पापी मन० ॥ २ ॥
रे राजा मायाधारी, विक्रम भोज दधीच से

फाल ने मारे आन। पापी मन० ॥ ३ ॥
अर्जुन भीम से योघा भारी, जिस से कांपे थी सृष्टि सारी।
है कहां कर तू ध्यान। पापी मन० ॥ ४ ॥
माता पिता दारा सुत जोई, धन दौलत और लश्कर को
इन का क्या अभिमान। पापी मन० ४ ५ ॥
मनुष्य देह की नाव बनाले, कर्म धर्म का चप्पू लगावे।
जल्दी तर नादानं पापी मन० ॥ ६ ॥

भजन नं० ७९

तू सिमरन करले मेरेमैनी तेरी बीती जाती उमर हरीन
पन्छी पन्ख विन हस्ती दन्त विन नारी पुरुष विना
वेशियाको पत्र को पुत्र पिता [illegible]
देह नैन विना रैन चन्द्र विना धरती मेघ विना
जैसे पंडित वेद पढीना तैसे प्राणी हरी नाम विना
कूप नीर विन धैनु खीर विन मन्दिर दीप विना
जैसे तिर वर फल विन हीना तैसे प्राणी हरी नाम विन
काम क्रोध मद लोभ निहारो छोड़ो वरोधतुसंत जना
कहे नानक शाह सुनो भगवंता या जग में कोई न ही

भजन नं ८०

—तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कर उपकार ।
ुष्य जन्म अमोलक तुझ को, मिले न वारम्वार ॥ १ ॥
ने उपासना ज्ञान काण्ड को, कर्म अपकर्म विचार ।
गत में सुख दुःख प्राप्त होवे, सब को पूर्व कर्म अनुसार ॥२॥
ृहत अपना कर धन संचय, यह वस्तु है सार ।
दा उन्नति कर पितृ सेवा, गुणीयन का सत्कार ॥ ३ ॥
लि सन्तोष परस्वार्थ रत, दया क्षमा उर धार,
ूखे को भोजन प्यासे को पानी, दीजे यथा अधिकार ॥ ४ ॥
कठिन समय में होवेंगे साथी, तेरे श्रेष्ट आचार ।
ांते इन का कर संग्रह सुख हो सर्व प्रकार ॥ ५ ॥
ोवे अज्ञानी कहें ज्ञानासिम, तिसको है अधिकार ।
ै कर्तव्य आपदधर्म 'धर्मानन्द' जो करें पद धार ॥ ६॥

भंजन नं ८१

ी जगत पिता के प्रेम जल से यह प्रेम मन का हरा हुआ,
से अंकुर होगा एक दिन यह फूल फल से फला हुआ ॥
ोर चाहिये कि उपासना में ना होने पावे नागा कहीं,

रहे ओ३म् शब्द के जाप का तेरे मन में तार बंधा हुआ
यह उपासना का जो बाग़ है सुबहशाम तो इसकी सैर
यह करेगा कुलफतें दूर सब यह सरूर से है भरा हुआ
जो गुज़र हो इसमें ख्याल का रहे दिलका गुंचा खिला हु
यहां की फ़िज़ा है वह दिलरुबा नहीं जिस से हो कभी
यहां गुल अजब हैं खिले हुए यहां मोक्षफल है लगा हु
जो दगा फरेब से है अलग वह उस में जाने का मुस्त
नहीं उसको नसीब उसे हुआ जो विषयों में होवे फंसा
जो हो धर्म युक्त जता सती वही पास के है यहां जग
न सताये उसको क्लेश फिर रहे सब दुखों से बचा हुअ
जिसे फौसिलों के तुफैल से जगा इस चमन में अता
वही जीने मरने की कैद से मिला मोक्ष छूट रहा हुआ
तेरी खुशनसीबी है केवला मेरा इस तरफ को जो म
ज़रा जल्द जल्द कदम उठा यह बाग़ है यह खुला हुआ

भजन नं० ८०

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रि निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमा क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्

दोहा—सदा धर्म करते रहो, जब तक घट में प्राण॥
धर्मराज में सदा लिये इसके प्राण निदा—

भजन नं० ८४

दुनिया के जंगलों में है यह दिल भटक रहा
अटका यहां जो आज तो कल वां अटक रहा
मसंद में फंस गया कभी मसाजिद में जा फंसा
छूटा जो यहां से आज तो कल वां अटक रहा
हिन्दू का और किसी को मुसलमान का .गरूर
वैसे ही याईहयात में हर इक भटक रहा
वह हर जगा मौजूद है जिस्की तलाश है
आंखों के आगे परदये गफ़लत लटक रहा
गुलज़ार में है गुल में है जंगल में शैहर में
सीने में सर में दिल में जिगर में खटक रहा
ढूंढा है उसको जिस्ने उसे आन कर मिला
अटका जो उस की राह से उससे अटक रहा ॥
सदक और यकीन के बिन दिलबर मिले कहां।
गो जंगलों में बरसों ही सर को पटक रहा ॥
यारे उमेद एक पः रख दिल को साफ़ कर।
क्या वसवसा का कांटा है दिल में खटक रहा ॥

भजन नं० ८५

राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज रे ॥
माया को संग त्याग प्रभू जी की शरन लाग,

वृद्ध युवा और बालापन को जग में डबोया गई बुद्धि,
तेरी किधर को।
बिना किये प्रभु की भक्ति नहीं आत्मा में हो शान्ति।
विद्या बढ़े अविद्या घटे होवे ज्ञान सवाया हृदय में,
नियम यह कर ले।
प्रातःकाल और नित्य शामको तजकर सभी काम को।
जप ईश्वर के ओ३म् नाम को, जिस ने तुझे बनाया
तू "शर्मा", उसे पकड़ ले तू उठकर सन्ध्या करले॥

भजन नं ८८

समझ बूझ दिल खोज प्यारे आशक होकर सोना क्या।
जब नैनों से नींद गंवाई तकिया लेफ़ बिछौना क्या॥
रूखा सूखा राम का टुकड़ा चिकना और सलूना क्या।
कहत "कमाल" प्रेम के मार्ग सीस दिया फिर रोना क्या॥

भजन नं ८९

सिमर प्रभु दिन रात रे मन,
उस बिन तेरा कोई न सहाई॥ सिमर०
सिमरन कर अन्तर्यामी का,
जग कोई दम की बात रे मन॥ उस बिन०॥१॥

कोई अन्धा कोई लूला लंगडा, कोई गोरा काला है ॥ ४ ॥
कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मधु पीपी मतवाला है ॥५॥
कोई मदकी भंगी चरसी, कोई पीवे प्रेम का प्याला है ॥६॥
जब तक फिरे न मनका मन का, क्या तसवी क्या माला है ॥७॥
निस दिन भजे जो हरि को, 'अमीचन्द' सोई करनीवाला है ॥८॥

भजन नं० ९२

क्यों पडी है स्वप्न में भई भोर निद्रा त्यागरी।
सास ननद देत निहोरे जागरी तू जागरी ॥ १ ॥
हे पतित हे अधम बुद्धे सो गई आलस भरी।
शान्ति २ शब्द कह कर चरण पति के लागरी ॥ २ ॥
स्नान कर उठ धार अम्बर की सिङ्गार लगा सुगन्ध।
ज्यों विधि रीझे रिझाले, मन से कर अनुरागरी ॥ ३ ॥
सफल यौवन कर ले मुग्ध, यह समय दुर्लभ है।
पश्चाताप रहने "अमीचन्द" चार दिवस का फागरी ॥४॥

भजन नं० ९३

हरी नाम भजो मन रैन दिना
ान सुन मीता परम पुनीता हरी यश गीता गाये सवारो।
यह जग सारा निपट असार दिन दो चारा

भजन नं० ९६

राम का पश्चाताप

भाई छोड़ना निगहा मुझ से करो किनारा।
क्यों हो गये हो गाफिल कुछ तो करो इशारा॥
माता को भाई लक्ष्मण मैं क्या जवाब दूंगा।
जब वे कहेंगी भाई लक्ष्मण कहां तुम्हारा॥

तेरी बहादुरी पर रावण से युद्ध ठाना।
ठहरो जरा भ्राता मानो कहा हमारा ॥
बिन तेरे कैसे भाई सीता की हो रिहाई।
बिन तेरे मैं अकेला दुश्मन का .गौल मारा ॥
मुझ को बता दे भय्या किस के किया हवाले।
देखोगे न बेकसी में आकर मुझे सहारा ॥
भाई ना शत्रुघ्न है ना भरत पास मेरे।
तेरा था ईक सहारा तू भी अदम सुधारा ॥
भाई था एक साथी बन की मुसीबतों में।
उसका भी आज भगवन है कूंच का नक़ारा ॥

भजन नं० ९७
राम का लक्ष्मण से ख़िताब

दिखा चम्पाकली श्रीराम ने लक्ष्मण से फ़रमाया।
लो पहचानो मेरी दानिस्त में तो है यह सीता की ॥
मेरे ज़ख़मे जिगर ताज़ा हुए हैं देखकर इस को।
मेरे दिल पर हुआ जाता है कुछ सकासा अपतारी।
मुझे बूयेवफ़ा आती है इस ज़ेवर से ओ भाई।
निशानी मिल गई आज यह उस राहते जांकी ॥
जुदा होती ना थी इक पल को जो आंखों के आगे से।
जाने किस तरह किस हाल में है हाय यह प्यारी ॥

भजन नं० ९९

श्रीरामचन्द्र जी महाराज की पितृभक्ति

लिखा तकदीर का हर्गिज नहीं कोई मिटाता है ।
बिगाड़े है किसी को और किसी को यह बनाता है ॥

लिखा जो करमों का होता है आगे वही आता है ॥
यह रिश्ते और नाते जो भी हैं सो जीते जी का है।
निकलते स्वास के ही फिर ना रिश्ता और नाता है॥
करो आज्ञा मुझे वन की कि जल्दी जाऊं मैं बन को।
समय यह कीमती मेरा हुआ बेकार जाता है॥
तुमारे दिल के सदमे को पिता मैं जानता भी हूँ
मगर मैं क्या करूं इस की खुशी है यह भी माता है
वही बेटा सपूतों में है जो हर एक हालत में
पिता माता की आज्ञा को सिर आंखों पर उठाता है
ना माता की यदि मैं आज्ञा पालूं तो ऐ स्वामी
मैं नालाइक बनूंगा और तुमारा वचन जाता है
पिता के हुक्म के आगे यह जीवन माल ही क्या है
नहीं परवाह प्राणों की पिता तो प्राण जाता है

भजन नं० १००

श्रीरामचन्द्र जी महाराज की मातृ-भक्ती
[श्रीरामचन्द्र जी का माता केकई से वनजाने की आज्ञा मांगना

कर जोड कहूं श्रीमात सुनो,
मुझे राज पिता जी ने वनका दिया।
करें राज अवध का भ्राता भरत,

लिखा जो करमों का होना है आगे वही आता है॥
यह रिश्ते और नाते जो भी हैं सो जीते जी का है।
निकलते स्वास के ही फिर ना रिश्ता और नाता है॥
करो आज्ञा मुझे वन की कि जल्दी जाऊं मैं वन को।
समय यह कीमती मेरा हुआ बेकार जाता है॥
तुमारे दिल के सदमे को पिता मैं जानता भी हूं
मगर मैं क्या करूं इस की खुशी है यह भी माता है
वही बेटा सपूतों में है जो हर एक हालत में
पिता माता की आज्ञा को सिर आंखों पर उठाता है
ना माता की यदि मैं आज्ञा पालूं तो ऐ स्वामी
मैं नालाइक बनूंगा और तुमारा वचन जाता है
पिता के हुक्म के आगे यह जीवन माल ही क्या है
नहीं परवाह प्राणों की पिता तो प्राण जाता है

भजन नं० १००

श्रीरामचन्द्र जी महाराज की मातृ-भक्ती
[श्रीरामचन्द्र जी का माता केकई से वन जाने की आज्ञा मांगना]

कर जोड़ कहूं श्रीमात सुनो,
मुझे राज पिता जी ने वनका दिया।
करें राज अवध का भ्राता भरत,

पति प्रेम मग्न रहे तिरिया यह धर्म्म सनातन है स्वामी।
तन मन और धनसे सेवा कर, सुख लेवे सब मर नार पिया॥
सुख धन ऐश आराम है, सब तुम बिन दुःख समान कहीं।
इस तन से आप की सेवा करूं, यूं मन अपना इख़्त्यार किया।
जो कठिन होंगे रास्ते हैं मुझे फूलों से भी कोमल स्वामी।
श्री जानकी नाथ कृपा करिये, वर मांग रही बहु बार सिया॥

भजन नं० १०२

सीताजी का विलाप।

तड़पती हूं शबो रोज़ छाह ग़ममें मुब्तिला हो कर।
रहे आराम से क्या मीन पानी से जुदा हो कर॥
बहारे चन्द रोज़ा पर न भूलें ऐ बुल्बुले शैदा।
हमारा गुलशने उम्मीद सूखा है हरा होकर॥
तमन्ना थी कि बाकी दिन भी चरणों में काटूंगी।
मैं अपनी ज़िन्दगी समझूंगी रहना नक्शे पा होकर॥
मगर नक्शे मुकद्दम मेरी पेशानी पे हंसता था।
लिखा था राम से सीता का यों रहना जुदा होकर॥
बड़ी मुश्किल से बुल्बुल रुये गुल को देख पाई थी।
अभी थी छुटकर आई कैदी रावण से रहा होकर॥
• चोंचों के लब पर आह हर्फ़ेपतराज़ आया।

हुआ होने का सब कुछ प्रेम पर एक नाज़ है हमको ।
कि अपनी जिन्दगी भर हम जिये हैं बावफ़ा होकर ॥

भजन नं० १०३

तर्ज़—चलोरी सखी चल दर्शन करिए रघुनन्दन रथ चढ़ आये

अय रावण तू धमकी दिखावे किसे,
मुझे मरने का खौफ़ो ख़तर ही नहीं ॥ अय०
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझे होनी की अपनी ख़बर ही नहीं ॥ अय०
जो तू सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे वह मिट्टी का घर भी नहीं ॥ अय०
मेरे मन का सुमेरु डिगेगा नहीं,
मेरे दिल में किसी का तो डर ही नहीं ॥ अय०
आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी,
क्या मजाल जो शील को मेरे हरें ।
तेरी हस्ती है क्या बिना राम पिया,
मेरी दृष्टि में कोई मनुष्य ही नहीं ॥ अय०
मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी,
क्यों न जीत स्वयम्बर से लाया मुझे ।
था कौन नगर मुझे दे तू बता,
जो स्वयम्बर की पहुंची ख़बर ही नहीं ॥ अय०

जो हीर अपनी चाहे दे भेज पास उन के।
चेरी मैं इन्द्र उन हीं कृपानिधान की हूं॥

भजन नं० १०७
(राम का वरलाप)

यह दे आज की हाय और चरखे पीर थोड़ी सी।
कि ले जाऊं लखन के वास्ते अकसीर थोड़ी सी॥
नाजाने ज़ैहर छिड़का किस्तरः रग २ में नस २ में।
चुभी थो सिर्फ सीने में ही नोके तीर थोड़ी सी॥
सैहर होते ही सूरज वंस में मच जायगा मातम।
श्री सूरज निकलने में करें ताख़ीर थोड़ी सी॥
संजीवन क्या है रातों रात पहुंच कोह भी लेकर।
पवन जो गर मदद थोड़ी सी दे रघुवीर थोड़ी सी॥
जलाना लक्षमण को कौन मुशकिल काम है लेकिन।
दिखाना है दवा की भी उफफ तासीर थोड़ी सी॥

भजन नं० १०८
(भीलनी के बेर)

ऐसे मीठे बेर तो मैंने न खाये थे कभी।
महल के खानों में सीता ने न चुनवाये कभी

शाही गोदामों में सभी नियामतें नायाब हैं।
घुनके जंगल से भी तो लक्ष्मण न लाये थे कभी ॥
दावतें राजों महाराजों की मैं खाता रहा।
पर न दस्तरख्वान पै यह जूठे बेर आये कभी ॥
राज्य भाई को मुबारिक है मुझे बनबास खूब।
भीलनी के बेर राजाओं ने भी न खाये कभी ॥
मुझ को अमृत का मज़ा देती है यह अमृत की रस।
भीलनी ने जिस से थे यह बेर मुलाये कभी ॥
ऐ ब्राह्मण तेरे मनकों से है यह पाकीज़ा तर।
क्या है गर माला की सूत्र में न बेर आये कभी ॥
राज्य होगा भीलनी के प्रेम का दिल पै मेरे।
राज सिंहासन पै फिर पाओं अगर आये कभी ॥

भजन नं० १०९

(भगवान् राम का आवाहन)

मुद्दत हुई है अब तो ऐ राम प्यारे आजा।
बिगड़ा हुआ है भारत का इन्तज़ाम आजा ॥
अब तेरी जन्म भूमी लंका से कम नहीं है।
तू देखने को इसका मज़लुम धाम आजा ॥
बेचैन कौम सारी अब यार मिस्ले सीता

धीरज दिलासा देने को सुबह शाम आजा।
माई का माई दुश्मन इस वक्त हो रहा है।
उलफ़ती मुहब्बत का लेकर पयाम आजा।
बहरे तनज़्ज़ली में गरकाब हो रहे हैं।
हम डूबते हुओं को ले जल्द थाम आजा॥
तेरा जमा शुदा वह खाली हुआ खज़ाना।
बाकी नहीं रही है उस में छ दाम आजा॥
ऋषियों की यज्ञभूमी में खून बह रहा है।
गौ पर चढ़े हुए हैं हिंसक तमाम आजा॥
चीरे फ़लक की चोटें दिन रात खाते खाते।
अय चन्द्र उड़ चुका है तन का भी चाम आजा॥

भजन नं० ११०

गर बुलाते हो मुझे होश में आवो तो सही।
मुझ से पहिले कोई कौशल्या बनाओ तो सही॥
राम को चाहते हो राम के चाहने वालो।
राजा दशरथ सा मेरे पिता कोई दिखाओ तो सही॥
किस जगह आके रहूंगा यह बतादो मुझको।
इक अयोध्या नई इस वक्त बसाओ तो सही॥
काम राक्षस के करो राम की ख्वाहिश रक्खो।

देवताओं की तरह यश रचाओ तो सही ॥
खून बहता है हज़ार हैफ़ मेरी नगरी में ।
गाय माता का यहां दूध बहावो तो सही ॥
किनसे मिलके रहूंगा यह बतादो मुझ को ।
लक्ष्मण और भरत जी को बुलाओ तो सही ॥
कौन रहने को है तैयार मेरी खिद्मत में ।
है हनुमान कहां मुझको बताओ तो सही ॥
दोस्त सादक है कहां जिस से मैं आकर मिल लूं ।
मैं भटकता हूं सुग्रीव को लावो तो सही ।
मुफ्त में चाहते हो चन्द्र सुधर जाए कौम ।
इस की वेदी पर तुम बलिदान चढ़ाओ तो सही ॥

भजन नं० ११२

मुर्दा क़ालिबों में भी समाज अब जान पैदा कर ।
रुदत्त और दयानन्द से तू फिर इन्सान पैदा कर ॥तु०॥
गर इस कशमकश में कामयाबी चाहता है तो ।
हीद अकबर से फिर दो चार तू पहलवान पैदा कर ॥ तु० ॥
उड़ जांय दाजर फ़ज़ले जहालत एक दम जड़ से ।
दाफ़त का सफ़ेद हस्ती पै वह तूफ़ान पैदा कर ॥ तु० ॥
मुसल्मानों को हैरानी हो जिन की मुखतादानी से ।
तू ऐसे दुर्जनों अब माहिर कुरआन पैदा कर ॥ तु० ॥
वैदिक धर्म्म को दुनियां के हर गोशों में फैला दूं ।
मेरे दिल में तू वह जज़बा मेरे रहमान पैदा कर ॥ तु० ॥
मुसाफ़िर काम करने को अगर ख़्वाहिश है कुछ दिल में ।
उमंगें कर नई पैदा नये अरमान पैदा कर ॥ तु० ॥

भजन नं० ११३

टेक—फैलेगे वैदिक धर्म सारा जहां होजायगा ।
देश का ख़ादिम ओ हर पीरो जवां होजायगा
फिर से भारतवर्ष रश्क आसमानां होजायगा

३–आर्य्यसमाज

भजन नं० १११

मुझे मेरे प्यारे समाज ने दूर गंजे वेद बता दिया।
मैं पड़ा भटकता था दर वदर, मुझे राह रास्त दिखा दिया
न था आखरत का मुझे ध्यान, मेरी उमर गुज़रे थी रायगां।
था ख्याले धर्म मुझे कहां, मुझे एक उस ने सिखा दिया।
न ज़मा वा ज़र की है चाह मुझे, मेरी अब निगाह बुलन्द है।
मैं पड़ा था लोटता खाक पर, मुझे आसमां पर बिठा दिया॥
कभी बहरे इश्क बुतों में मैं, वहा जा रहा था खबर न थी।
तेरे सदके आय मेरे मेहरबान, मुझे तूने आके बचा दिया॥
मैं फ़िदा था गैरों की चाल पर, न थी अपने हाल पर कुछ नज़र।
न रही थी मिटने में कुछ कसर मुझे आके उसने जता दिया॥
वह जो सारे इल्मों की आन थी, वह जो सब जबानों की कान थी।
वह जो देववाणी जबान थी, मुझे उसने पढ़ना सिखा दिया॥
मैं अली मुहम्मद मुस्तफ़ा, के मुदाम नाम पै था फ़िदा।
न थी अपने ऋषियों से आशा मुझे उसने उनका पता दिया॥
करो शुक्र दिल से ऋषि का तुम दिया प्रेम जिसने जगा तुम्हें।
कि पिलाके अमृत वेद का तुम्हें जिसने फिरसे जिला दिया॥

भजन नं० ११२

तू मुर्दा क़ालिबों में भी समाज अब जान पैदा कर ।
गुरुदत्त और दयानन्द से तू फिर इन्सान पैदा कर ॥ तु० ॥
अगर इस कारमफ़रा में कामयाबी चाहता है तो ।
शहीद अकबर से फिर दो चार तू बलवान पैदा कर ॥ तु० ॥
उखड़ जाये आज़र कज़ीये जहालत एक दम जड़ से ।
सदाक़त का सफ़ह हस्ती पै यह तूफ़ान पैदा कर ॥ तु० ॥
मुसल्मानों को हैरानी हो जिन की गुफ़्तादानी से ।
तू ऐसे दुर्जनों अब माहिर कुरआन पैदा कर ॥ तु० ॥
वैदिक धर्म को दुनियां के हर गोशों में फैला दूं ।
मेरे दिल से तू यह जज़्बा मेरे रहमान पैदा कर ॥ तु० ॥
मुसाफ़िर काम करने को अगर ख़्वाहिश है कुछ दिल में ।
उमड़ें कर नई पैदा नये अरमान पैदा कर ॥ तु० ॥

भजन नं० ११३

टेक—फैलेंगे वैदिक धर्म सारा जहां होजायगा ।
देश का ख़ादिम ओ हर पीरो जवां होजायगा ।
फिर तो भारतवर्ष ख़ुद जन्नतनिशां होजायगा ।
गुलशने वैदिक धर्म में जब फिर आयेगी बहार ॥
यह नाज़िरीनों हरदे गुलज़ार जमा होजायेगा ॥

तीरगि ये जहल होगा दूर देखेंगे समां।
आफताबे इल्म जब जल्वा फगां होजायेगा॥
गोता जन बहरे सदाकत ही हर इक होगा अगर।
हक अयां हो जायेगा बातल नहां होजायगा॥
फोर बातन जो है उन के तन बदन में फिर।
चश्मये रुहानियत जिस दिन रवां होजायगा॥
सिदक दिल से ओ३म् का झण्डा उठेगा जब यहां।
पैरो वैदिक धर्म का सारा जहां होजायेगा॥
उस ऋषि की पाक उमेदें बर आयेंगी जरूर।
एक दिन सेवक का सच्चा यह बियां होजायगा॥
गुलशने कौमी में जिस दिन इल्म की होगी बहार।
औहर सम्माद रहके बागवां होजायगा॥

४-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

भजन नं० ११४

पराई आग में जलना मरीज़ों को दवा होना।
कोई सीखे दयानन्द से धर्म पर जान फ़िदा होना॥
भँवर में जब किश्ती हो नज़र में मौत फिरती हो।
लगाना वेद का चप्पू न अन्देशा ज़रा होना॥
शमा का आप जल के गैर को प्रकाश दे देना।
मिटा देना निशां अपना धर्म पर यूं फ़िदा होना॥
कभी खंजर कभी नेज़े कभी पत्थर की बूछाड़ें।
न इन को दिल में लाना और फिर भी रहनुमा होना।
दयानन्द की तरह कुर्बान होना सत्य के मार्ग पर।
[illegible]ला से नहीं खाली सुदर्शन का वायदा होना॥

भजन नं० ११५

[illegible] बन के दयानन्द का जो आता।
गुलशने हिन्द कभी धूप से मुर्झा जाता॥
क्योंके गुलशन से अगर हम को उलफ़त न रहे।
खौफ़ इसलामो ईसाईयत का हमें आ जाता॥
हम ही भिड़ जाते ज़माने से मिटाने अन्धकार।

भजन नं० ११६

वेद और वेदांग आर पूर्ण जब अध्ययन कर चुके।
हाथ में कुछ ले के लाये आप गुरुचरण झुके
बोले आखिर करके चरणों में गुरु के वन्दना।
कीजिये स्वीकार मेरी अल्प सी यह दक्षिणा॥
है नहीं कुछ और मेरे पास देने के लिये।

प्राण तक तैय्यार हूँ गुरु भेंट करने के लिये ॥
सुन कर वचन ये शिष्य के मुनि का कलेजा भर गया ।
सोच कर कहने लगे कृत कृत्य मैं अब होगया ॥
मांगता हूं तुम से केवल यह ही जो कुछ पास है ।
पूरी करोगे पुत्र तुम ही मेरी इक जो आस है ॥

भजन नं० ११७

(स्वामी विरजानन्द का दक्षिणा मांगना)

ऋण गुरु जी का दयानन्द चुकाना होगा ।
जाना घर दक्षिणा दे के तो जाना होगा ॥
मैं तो हूं लोंग अनमोल रत्न से बढ़कर ।
मेरी इस भृत्य का भी दुःख मिटाना होगा ॥
मन को मार हुए आंखों के बिना बैठा था ।
तुम को लाठी की जगह हाथ में आना होगा ॥
पास था जो कुछ मेरे तुमको दि
तुम मुझ होगे
शिष्य हो।

वेद को ऋषियों की सन्तान ने त्यागा हाय।
अब सरल भाषा में ही भाष्य बनाना होगा॥
जो कलंकित किए बैठे हैं महीधर आदि।
उन अनर्थों का कर पुरुषार्थ मिटाना होगा॥
आर्य्य जाति की हस्ती मिटी जाती है।
मौत के पंजे से अब इस को छुड़ाना होगा॥

भजन नं० ११८

(स्वामी दयानन्द को गुरु का उपदेश)

अन्धेर आलम में है कि दुनिया गई है वेदों को भूल बेट
भटक गये सब हैं राह हक़ से, किया है बातिल
कोई है गद्दी पै अपनी नाज़ां, बनाके मठ यां कोई है गल
बिना पे सब रेत के खड़े हैं, हिला हिला उनको झूल बेटा
न उनको दुनियाकी कुछ खबर है,न उनको उक़बाका कुछ
खुदा व शैतां को खींच लाकर, हैं करते झगड़े फ़िज़ूल बेटा
कोई है शोहरत पसन्द इन में, तो कोई खुदगर्ज़ कोई ज़िद
अक़ील यां बेसमझ हैं सारे, हैं सब हमाक़त जहूल बेटा॥
न जाने ग़ैरत को होगया क्या, है आत्मा तक गुलाम उन
बशर तो क्या कहिये उनपे हाकिम, है जंड पीपल बबूल

हनुमां थे यह राहजन हैं, जो देवता थे यह लेवता हैं।
ि का मज़हब है खीर पूरी, टका किसी का असूल बेटा ॥
। यह हालत है आदमी की, कि इससे हैवान हैं लाख बरतर।
उन के हैं सिर्फ़ दांत चरते, हैं इन के चरते अकूल बेटा ॥
या तुमको सिखाया तुझको, जो राज़ था सब बताया तुझको
वेद का इल्म तुझको बख्शा, न था जो सहल्लुलहसूल बेटा
नज़र देनी है नज़र यह दे, इस्वरां मेरे फ़ैज के हो।
द् लेकर है लौंग देता, करूं मैं क्योंकर कबूल बेटा ॥
गन से यह कै वेद मुझ को, पढ़ा दिये तुझको बेगरज हो।
गन क्या खाक भेंट इनकी, है आगे जिस्म इनके धूल बेटा ॥
चाहे सर से यह फर्ज उतरे, तो सारे आलम में वेद करदे।
। है होली तेरी किसी ने, तू जा जमाने की होली मरदे ॥

भजन नं० ११९

(स्वामी दयानन्द की आज्ञापालन)

दोहा

रजी मैं करूंगा वेद का प्रचार दुनिया में।
माना देख लेगा वेद का सत्कार दुनियां में ॥

भजन

ं पैगाम दूंगा गाऊंगा मगावन।

असत्य जो है उस को मिटाऊंगा भगवन ॥,
जो सोते हैं उनको जगाऊंगा भगवन,
जो बैठे हैं उन को उठाऊंगा भगवन।
ज़मीं आसमां को हिलाऊंगा भगवन।
मैं पत्थर से पानी बहाऊंगा भगवन ॥
जो था काम चार भाईयों के लायक।
अकेला वह कर के दिखाऊंगा भगवन।
मैं चारों दिशाओं में जाऊंगा भगवन।
मैं परवाने की सूरत जिन्दगी कुरबान कर दूंगा ॥
मैं मरहम की तरह मिटजाऊंगा भगवन।
दरख्तों की तरः मैं दुश्मनों को भी समर दूंगा ॥
गुरु दक्षिणा में आप को जानो जिगर दूंगा।
वचन पूरा करूँगा जिस्म दूंगा और सर दूंगा ॥

भजन न० १२०

अय गुरु ! ताबये फरमान दयानन्द होगा।
आप के वचनों पे कुर्बान दयानन्द होगा ॥
मुझ से नाचीज़ को जो आप ने अमृत बख्शा,
बादे मुर्दन ज़ेरे एहसान दयानन्द होगा ॥
यज्ञ भारत में जो आप रचा चाहते हैं,
घृत सामग्री का सामान दयानन्द होगा ॥

मिस्ल लक्ष्मण जो यह बेहोश हैं भारतवासी,
    चारागर मिस्ले हनुमान दयानन्द होगा ॥
प्राण जिन क़ालबों में नाम को बाक़ी न रहे,
    ऐसे मुर्दों का यह प्राण दयानन्द होगा ॥
ख़ानये भारत में जो है घोर अंधेरा छाया,
    उस में इक शक्ल रोशनदान दयानन्द होगा ॥
शमाए इरफ़ानी वेद पे तन मन धन से,
    मिस्ले परवाना कुर्बान दयानन्द होगा ॥
गुल्शने क़ौम के गुल हाय गिरे जाते हैं,
    उन सबका मुहाफ़िज़ वो निगहबान दयानन्द होगा
जां बलब गायें व बेवा हैं और क़ौमी बच्चे,
    खोल के सीना मेहरबान दयानन्द होगा ॥

भजन नं० १२१

आर्य-तुम्हें बदनाम वे भगवन सरे बाज़ार करते हैं।
महर्षि-मुझे मशहूर करते हैं बहुत उपकार करते हैं ॥
आर्य-बिठाकर एक गधे पर आदमी मुँह कर दिया काला।
    पुकारें नाम ले भगवान पर अत्याचार करते हैं ॥
महर्षि-मुनव्वर चांद का मुखड़ा तो है असली दयानन्द का।
    पर मक्कारों दयानन्दों को यही ख्वार करते हैं ॥

आर्य्य-उठा पत्थर यह मारें स्वामी पर और कहते हैं।
यह देखो किस तरह स्वामी का हम सत्कार करते हैं॥

महर्षि-यही पत्थर था उनका इष्ट जिसे यह फैंकते हैं अब।
यह गोया इस तरह से इष्ट का तिरस्कार करते हैं॥

आर्य्य-यह देते सैंकड़ों ही गालियां हैं शोक! भगवन् को।
यह दुर्वचनों की भगवन् नाम पर बौछार करते हैं

महर्षि-जो दुर्वचनों का होगा खात्मा शुभ वचन सीखेंगे।
इन्हें हम आप शिक्षा के लिये तैय्यार करते हैं॥

आर्य्य-तुम्हें यह नीच जाति से बताकर गालियां दीतें।
तुम्हारी जात से नफ़रत का यह इज़हार करते हैं॥

महर्षि-ब्राह्मण जन्म से मैं था मुझे यह नीच कहते हैं।
जन्म से नीच हैं सार यह खुद प्रचार करते हैं॥

आर्य्य-तुम्हारे जिस्म की शक्ति का यह खाका उड़ाते हैं।
जो देकर सांड से तशबीह बहुत धिक्कार करते हैं॥

महर्षि-प्रभु का शुक्र है सारे मेरी शक्ति के हैं कायल।
जना ब्रह्मचर्य्य की अज़मत जगत उपकार करते हैं॥

आर्य्य-जवां को आपकी नश्तर कहें छोटे बड़े मगर।
हि क्रोध से यह सानगों फटकार करते हैं॥
करते हैं बुरा है डाक्टर नश्तर चुभोने से।
की दयालुता का प्यार में इकरार करते हैं॥

आर्य-गरज़े कि भगवन् यह निन्दा मु: हर प्रकार करते हैं।
महर्षि-यह है उन की दया वह दास का उद्धार करते हैं॥

भजन नं० १२२

पलका सा मच गया काशी में जब प्रचार से।
मर गया दिल में करन जोशो जनूं के आसार से॥
ज़ेब तन की उसने तलवारें कमर धरता हुआ।
यानी स्वामी जी को समझाने चला तलवार से॥
खून आंखों से टपकता था यह दिल में जोश था।
यों खताब आकर किया स्वामी जी नेकोकार से॥
क्यों यह कहते हैं टीके और गंगाजल को आप।
खाक भी हासिल न होगा मुफ्त की तकरार से॥
हंस के स्वामी ने कहा सुनके सदा अय करन की।
ऐसी बातों का पता ले वाक़फे असरार से॥
दिल दुखाने से मुझे कुछ मुद्दये हासिल नहीं।
है ग़रज़ कोई मेरी तो देश के उद्धार से॥
तोप के मुंह पर भी रख दो तो भी सच बोलूंगा मैं॥
तुम डराते हो मुझे गज़ भर की क्या तलवार से॥
जो बनेगी मुझ पै झेलूंगा खुदी से जान पर।
रुक नहीं सकता मैं अमरे वाजिबुल इज़हार से॥

नूर वहदत से मिटाना है स्वादे कुफ़र को।
दूर करना है ज़ुल्मो जेहल को तलवार से॥
गंगाजल पानी है तो टीका है चन्दन की लकीर।
ना वह अमृत है ना यह मुक्ती का साधन यार से॥
वेदवानी और पुराणों की कथा में फरक है।
झूठे मोती को नहीं निस्वत दुरे शाहवार से॥
रास्ती पर हूं मैं तो नारास्ती पर है करन।
क्या तेरी तलवार को निस्वत मेरी तलवार से॥
यह सदा लगती सुनी तो और भी जल भुन गया।
वार स्वामी पर किया कमबख़्त ने तलवार से।
जब के ब्रह्मचारी ने देखा अपनी नज़रें खोलकर।
गिर पड़ी तलवार धरती पर करन बदकार से।
सख्त शरमिन्दा हुआ शिशदर हुआ नादम हुआ।
कट गया ब्रह्मचर्य की तलवार जौहर दार से॥
दूसरी तलवार लेकर फिर वार स्वामी पर किया।
मुंह की खाकर फिर भी ना बाज़ आया अत्याचार से।
यह भी स्वामी ने कलाई से पकड़ कर छीन ली।
और टुकड़े कर दिये उसके भली प्रकार से॥
स्वामी को करज शशदर हुआ।
होसले दिल के गिरे सब एक दम दीवार से॥

पानी पानी होगया औसां ठिकाने हो गये।
सब मनूं जाता रहा दीदारे सिफ़त आसार से ॥

भजन नं० १२३

डराता है मुझे क्या ये करण तू तेग़ो ख़ंजर से।
मेरी भगवान रक्षा करता है हर आफ़तो शर से ॥
मुझे मक्सूद है प्रचार वैदिक धर्म दुनियां में।
इसी के वास्ते फिरता हूं मैं बांधे कफ़न सर से ॥
जो शास्त्रार्थ करना है तो जा अपने गुरु को ला।
जो लड़ना है तो जाकर लड़ किसी राजा व ठाकुर से ॥
दशा भारतवर्ष की देख कर मैं खून रोता हूं।
निकलती हैं हमेशा आहें मेरे कल्बे मुज़्तर से ॥
भड़कता है मेरे खण्डन पै तू जो तुझ को क्या मालूम।
बहुत हैं दूर यह बातें तेरे हद्दे तसव्वर से ॥
अरे क्या पड़ गये पत्थर तुम्हारी अक्लो दानिश पर।
मुरादें मांगते हो बेवक़ूफ़ो ईंटों पत्थर से ॥
प्रभु ने गर मुझे तौफ़ीक दी तो देखना इक दिन।
निकलवा करके छोडूंगा बुतों को मैं मनादिर से ॥
बजाये इस के होंगे सन्ध्या और यज्ञ हवन हरला।
पुनि उठा करेगी ओ३म् की भारत के हर घर से ॥

मुझे जागीरें और गदियों का लालच दिखाते हो।
मैं मुस्तगनी हूं बिलकुल ज़रो सीमो जवाहिर से ॥
मैं अपना जिस्मो जां सत धर्म पर कुर्बान करदूंगा।
यही प्रण कर के निकला था मैं अपने बाप के घर से ॥
मेरी बातें बुरी लगती हैं तुमको आज पर इक दिन।
नज़ा मेरे वचन देंगे सिवा कन्दे मुकर्रर से ॥
करन ने जब सुनी है प्रेम गुफ्तार स्वामी से।
गिरा कदमों पे निकलो ताजे नखवत यकदम सिर से ॥

भजन नं० १२४

दयानन्द नेकसीरत जो अमृतसर में आ निकले।
सदाये खैर मकदम आई, हर दियारो दर से ॥
गुज़र होता जिधर से आप की सूरत मुबारिक का।
निकल आये उधर से दर्शनों को लोग घर २ से ॥
सदाये ओ३म् से पाको मुसफ्फा होगई वायु।
मुकानतो महल सब गूंज उठे वेद के मंत्र से ॥
लगा कर कान तुम मुझ से सुनो इक शाम का किस्सा।
किया खुश आप ने पीरो जवां को अपने लैक्चर से ॥
मनोहर और दिलकश आप का उपदेश था ऐसा।
हुई काफूर जिस से बेदली हरजाने मुज़तर से ॥

फ़िदाये वेद हूं सब को बराबर मैं समझता हूं।
मुहब्बत है मुझे यकसां ब्राह्मण और शूद्र से॥
अमूरत है अचल है एक ही भगवान की हस्ती।
बदल सकता नहीं इस भाव को मैं मौत के डर से॥
सुनी जब यह दलेराना फलक गुफ्तार स्वामी की।
मुखालिफ़ जिस कदर थे रह गये हैरान शशदर से॥

भजन नं० १२६
रियासत उदयपुर की घटना

(उदयपुर नरेश की विनय ऋषि दयानन्द से)

कहा कर जोड़ शाहे उदयपुर ने ऋषिवर से।
गुरुजी ! आपकी है नजर गद्दी मेरे मन्दिर की॥
है लाखों का मुनाफ़ा साथ इस गद्दी के ऐ भगवन्।
यह गद्दी सर जमीं पर कान है गोया जवाहर की॥
खुशी से ज़िन्दगी के दिन गुज़ारो बैठकर इस जा।
कमी कुछ रह नहीं सकती यहां पर माल और ज़रकी॥
मुखालिफ़ आपकी दुनियां है सारी आप हैं तनहा।
मुझे डर है न कर बैठे मुखालिफ़ बात कुछ शर की॥
ज़हे किस्मत कि आप आये मुझे उपदेश देने को।
मुझे थी जुस्तजु मुद्दत से स्वामी एक रहबर की॥

मेरा परिवार ख़िदमत में रहेगा आपकी भगवन् ।
मैं खुद हरवक्त दर्बानी करूंगा आपके दर की ॥
बहुत पापों में डूबा है यहुन मुद्दत का बिगड़ा है ।
सुधारो अब कृपा कर के प्रभो हालत मेरे घर की ।
फ़कत इक मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ना होगा ।
न पूजें आप खुद बेशक कभी मूरत को पत्थर की ॥

भजन नं० १२७

(महर्षि दयानन्द का उत्तर)

यह सुन के बात राजा की ऋषि ने हंस के फ़रमाया ।
तेरी ख़्वाहिश करूं पूरी या मर्ज़ी अपने ईश्वर की ॥
मेरे जीवन का मकसद गुमराहों को राह पर लाना है ।
मुझे इज़हारे हक़ के काम में परवाह नहीं सर की ॥
राहे हक़ पर जो सर चलते हुए तन से जुदा होगा ।
मेरी गर्दन रहेगी मुद्दतों मम्नून खंजर की ॥
जिन्होंने ज़िन्दगी के कर लिया उद्देश्य को पूरा ।
नहीं फिर मौत उनके वास्ते वस्तु कोई डर की ॥
कदम इक इञ्च हट सका नहीं राह सदाकत से ।
अगर मिलती हो मुझ को सल्तनत भी कुछ सिकन्दर की ।
तेरी गद्दी हि क्या गद्दी है जिस पर धर्म को छोड़ूं ।
न छोड़ूं साथ मिलती हो अगर गद्दी भी गर इन्द्र की ॥

किसी दुनिया के कुत्ते ही को पालो ज़र के टुकड़ों पर।
न बांधो हम गरीबों को मगर जंजीर से ज़र की॥
मैं अपने दिल के उस मन्दिर का मुद्दत से पुजारी हूं।
कि जिस मन्दिर से आती है सदा दिन रात हर हर की॥
मैं उस दर का गदा हूं रिज़क जो हर घर को देता है।
गदाई हो नहीं सकी है राजन् मुझ से दर दर की॥
मेरा मालिक वह मालिक है जो शाहों का शहनशाह है।
मैं खिदमत छोड़ कर उसकी करूं फिर तेरे घर की॥
वही मालिक वही खालिक वही पालक जहां का है।
हकूमत है उसी कादिर की लहरों पर समुद्र की॥
मैं चुप कैसे रहूं ऐसे प्रभु को छोड़ कर राजन्।
परस्तिश कर रही है जब कि दुनियां ईंटों पत्थर की॥
बग़ल में कद के यह आसन दबाया बस ऋषिवर ने।
कमंडल हाथ में ले छोड़ दी भूमि उदयपुर की॥
हुआ जब आशकारा आत्मिक बल नज़ारा यूं।
तो कदमों पर ऋषि के झुक गई गर्दन मुसाफ़िर की॥

भजन नं० १२८
(अजमेर के आर्य्यों का महर्षि को जोधपुर जाने से से रोकना और उन का उत्तर)

(१)

आर्य्य-हमारी है विनय स्वामिन् वहां पर आप मत जावें ।
ऋषि-रुकूंगा मैं नहीं चाहे हज़ारों विघ्न आजावें ॥ टेक ॥
आर्य्य-वहां तो रहते हैं खूंखार धोखेबाज़ और जाहिल ।
नहीं वे कुछ समझते हैं जो हित उन के लिये जावे ॥
ऋषि-उन्हें बस इस लिये ही तो दिखाऊं मार्ग मैं जल्दी ।
गिनूंगा सुख उन्हें दुख जो धर्म के काम में आवें ॥
आर्य्य- विनय सुनिये हमारी गर अवश्य ही आप जाते हैं ।
करें पर काम कोमल हो जिन्हों के दिल न दुःख पावें ।
ऋषि-नहीं मैंने पाप के पौदे को टैंची से कलम करना । .
मगर जड़ से उखाडूंगा कि वे फिर से न उग आवें ॥
आर्य्य-कहें क्या आप से भगवन् हमारा दिल धड़कता है ।
वे हैं निर्दई बड़े ही पाप करने से न घबरावें ॥
ऋषि-डरो मत ये मेरे भाई सहायक साथ है हरदम ।
छिपाऊंगा न मैं सच को जो सच दुःख मिलके आजावें ।
जो मेरी उंगलियों को काट कर बत्ती बना लेवें ।
सहूंगा धर्म की खातिर मेरे सर प्राण भी जावें ॥

भजन नं० १२९

(२)

आर्य्य-न आओ जोधपुर भगवन् विनय यही हमारी है॥
अकेले आप हैं दुश्मन यहां की प्रजा सारी है॥
दयानन्द-है मेरा मुद्दआ प्रचार वेदों का हो घर घर में।
तो फिर क्या जोधपुर जाने में मुझ को शर्मसारी है
आर्य्य-विमुख है देश भारतवर्ष वैदिक धर्म से सारा।
सफलता हर जगह लेकिन यहां तो उठती ख्वारी
दयानन्द-नज़र में डाक्टर की सब बड़े छोटे बराबर हैं।
लगाये उसके फोहा जिसके तन पर जख्म कारी है
आर्य्य-यहां के लोग अक्सर तंगदिल खुद सर घमंडी हैं।
कभी अड़ बैठें भगवान् से हमें यूं बेकरारी है॥
दयानन्द—धर्म से दुनिया की आफ़त हटा सकती नहीं मु
तपा जो आग पर सोना उसी में आबदारी है॥
आर्य्य—है उन में जोश सा कोई बुरी हरकत न कर बैठें।
वह भी खाली न रह जावें जिन्हें उम्मीद भारी है॥
दयानन्द—मेरी उंगलियों की बत्ती बनाकर भी जलायें गर
हो सब तारीक घर रोशन यह अपनी जीत भारी है
आर्य्य—मधुर शब्दों में ही प्रचार करना उस जगह जाकर।
यही नीति है पालिसी इसी में होशियारी है॥

डरे थी दुनियां तो सारी, तेरी हिम्मत० ॥ ५ ॥
चलाई ब्रह्म की पूजा समाज बन गई हर जा।
तेरा उपकार है भारी तेरी हिम्मत ॥ ७ ॥
भारत के भाग खोटे थे हुआ स्वामी जुदा हम से।
हुआ दुःख सब को है भारी तेरी हिम्मत ॥ ७ ॥

भजन न० १३१

ऋषि सदा यह सुना गया तू, कि दुनिया भरको गुंजा गया
वह जामे वहदत पिला गया तू, तपिश दिलों की बुझा गय
बना जिन हरफ़ों में नाम तेरा, बतायें खलकत को काम ते
है सच तो यह, कि उन्हीं के दमसे, मुखालिफ़ों को हिला गय
दया अगर थी तो 'दाल' से थी, हरएक जाति के लाल से
कि दे के वेदों को सब के हाथों, वह राह रहमत दिखा गय
अगर यतीमों का दिल टटोला, अगर गरीबों का हाल पूछ
मिला था 'ये' से यह बरकयारी, करोड़ों बच्चे बचा गया तू
अलिफ से पहले वतन को अपने, सुनायें तौहीद के वह न
...ये तौहमात किये मुसफ्फ़ा, कुफ़रका नक्शा मिटा गय
...में रूहे उल्फ़त, कि नून से सब मिटाई नफ़
...गले लगाकर, करोड़ों बिछड़े मिला गया तू
...ऐसा लगाया नूं से, कि जिसको सींची जिगर के

मथुरा नगरीसी आई, दित्ती कुटिया दिखाई।
स्वामी पुछदा है माई, ऐथे रहंदा है कौन ॥ वेदां० ॥
केहा रहंदा इक स्वामी जेड़ा वेदां दा हामी ।
विरजानन्द जी नामी, हिरदा ईश्वर दे कोल ॥ वेदां० ॥
स्वामी आन पधारे, विरजानन्द द्वारे ।
कर जोड़ पुकारे, रख लो चरनां दे कोल ॥ वेदां० ॥
चारों वेद पढ़ाये, सचे अर्थ सिखाये ।
सत्य शास्त्र धियाय, दित्ता नयनां नूं खोल ॥ वेदां० ॥
कीती ख़तम पढ़ाई, गुरु दक्षिणा चढ़ाई ।
गुरु आख्या हे माई, नहीं है लौंगां दी लोड़ ॥ वेदां० ॥
गुरु आज्ञा जो पावां, उसनूं तोड़ निभावां ।
चाहे प्राण गंवावां, देवां जिंदड़ी नूं घोल ॥ वेदां० ॥
देश देश में जावीं, चारों वेद फैलावीं ।
सच्चा ईश पुजावीं, देवीं बन्धना नूं तोड़ ॥ वेदां० ॥
ऋषि हुक्म जो पावां, चरणीं शीश नवावां ।
वैदिक धर्म फैलावां, वजे वेदां दे ढोल ॥ वेदां० ॥

भजन नं० १३४

जिसका इक मुद्दत से खटका था वह दिन आने को है।
सफ़ाए हस्ती से अपना नाम मिट जाने को है॥
मिट चली हैं हैफ़ यह दुनियां की कौमें नामदार।
एतराफ़ अज़मत का जिस की अपने बेगाने को है॥
होते हैं हर साल हम में से जुदा सोलह हज़ार।
सोच लो रफ़तार यह क्या रंग दिखलाने को है॥
पिछले चालिस साल में मुस्लिम बढ़े हैं दो करोड़।
ख़ौफ जिस से हिन्दू जाति तेरे मिट जाने का है॥
पिछले चालीस साल में ईसाई बढ़े अड़तीस लाख।
और नीची कौमें अभी गिरजा में तो जाने को हैं॥
लग रहे हैं कुफ्ल मन्दिर और शिवालों को जनाब।
सेठ लेकिन फिर भी मन्दिर और बनवाने को हैं॥
कौन मन्दिर और शिवालों में चलेगा सोच लो।
क़ौम की हस्ती ही जब मिट्टी में मिल जाने को है॥
हो रहे हैं क़ौम में बच्चे ईसाई व मुसल्मान।
जो बचा वह हैफ़ जाता सीधा मयख़ाने को है॥
लीडरी का फ़िकर हरदम हमसरों को है मगर।
ज़िन्दगी का फ़िकर तेरी तेरे दीवाने को है॥
है लगन दिल में मुसाफ़िर के वही बस कौम की।

हमारे वास्ते गैरों ने छाती खोल रक्खी है।
मगर अफ़सोस अपने होके भी हमको गिराओ तुम।
गुज़ारिश दस्तबस्ता चन्द्र की है क़ौमवालों से।
तुम्हारे पांव ही तो हैं इन्हीं पर रहम खाओ तुम॥

भजन नं० १३६

अछूतों से यहां तक आप क्यों नफ़रत जताते हैं।
गज़ब है क़ीमती रत्नों को मिट्टी में मिलाते हैं॥
बने हो तुम और यह भी बने हैं पञ्च भूतों से।
यह सिक्के एक ही टकसाल से बन बन के आते हैं॥
हुआ क्या गर यह निर्धन है मगर भाई तो हैं आख़र।
पिता है एक ही सन्तान हम जिस की कहाते हैं॥
दया है धर्म का मूल और अभिमान पापों का।
करो तब तक दया ज़ब तक कि घट में सांस आते हैं
ज़रा सोचो है कितना ज़ुल्म इन हमज़ात भाईयों को।
जुदा करते हो तुम और गैर अपने में मिलाते हैं॥
नहीं चूल्हे में चौके में धर्म तो है अहिंसा में।
तो फिर क्यों आप अपने भाईयों के दिल दुखाते हैं॥
यह मां जाये हैं बन्धु और बड़ा छोटा यह रिश्ता है।
नहीं कड़वे यह आंसू आप आंखों से गिराते हैं॥

सबको लगा गले से प्रीति बढ़ाओ प्यारो ॥
गोरों से लाल अब तक निकले बहुत तुम्हारी ।
भूखों को पेट भर भोजन कराओ प्यारो ॥
वैदिक धर्म का झण्डा प्रेमी घुमाओ दरज ।
इक दिलो जान होकर प्रीति दिखाओ प्यारो ॥

भजन नं० १२९

ऐ हिन्दू क़ौम तेरा गो है निशान बाक़ी ।
लेकिन नहीं है तुझ में बिल्कुल ही जान बाक़ी ॥१॥
सब गोश्त पोस्त तेरा अफ़सोस सड़ चुका ।
अब रह गये हैं तुझ में कुछ उस्तख़्वान बाक़ी ॥२॥
सिर हाथ पैर टांगें तेरी अलग २ हैं ।
हैरान है किस तरह फिर तुझ में है प्राण बाक़ी ॥३॥
मतभेद से हज़ारों फ़िरके हुए हैं तुझ में ।
जिन में नहीं है कुछ भी जुज़ ऐंठ तान बाक़ी ।
हर एक दूसरे का बदख़्वाह हो रहा है ।
दिल में नहीं किसी के कुछ तेरा ध्यान बाक़ी ॥५॥
ऐ हिन्दू क़ौम तेरे बेटों के पास अब तो ।
बस रह गई है ख़ाली ज़िल्लत व हान बाक़ी ॥६॥
ईसाई खा रहे हैं मुर्दा समझ के तुझ को ।
खालेंगे जो रहा है पहले कुरान बाक़ी ॥ ७ ॥
हालत यही रही गर कुछ दिन भी तो विलाशक ।
कायम नहीं रहेगा तेरा निशान बाक़ी ॥ ८ ॥
जो तेरे थे मुहाफ़िज़ दुनियां से चल बसे वह ।
कोई नहीं है तेरा अब पासबान बाक़ी ॥ ९ ॥
राम और कृष्ण जैसे सच्चे सपूत तेरे

मक़तल में थी नंगी फर्मा-शमशीर किसी की ॥
लुटवाता था महमुद कभी आनकर मन्दिर ।
खिचवाता खाल आके जहांगीर किसी की ॥
क्या क्या ना सहे जातों के यवनों ने मज़ालिम ।
छाती में किसी के छुरा तीर किसी की ॥
मुग़लों के ज़माने में हुआ ऐसा भी अकसर ।
हमदार पः खैंचे गये तक़मीर किसी की ॥
कोशिश तो मुसाफ़िर ने बहुत की गर लेकिन ।
कर सकता है । क्या मदद यह राहगीर किसी की ॥

भजन नं० १४१

मुर्दा हो रही हिन्दू क़ौम कोई दिन में उठे जनाज़ा
टूटा ब्राह्मण रूपी सिर, ज़िन्दा कैसे रहेगा फिर ।
होके वेदों से मुनकिर, पढ़ते हैं मुल्लां दो प्याज़ा ॥ १ ॥
जो थे मुल्कों में विख्यात, टूटे क्षत्री रूपी हाथ ।
दुख में छोड़ दिया है साथ, जिसका भुगत रहे खुमियाज़ा ॥२
जबकि वैश्य हुए खुदगर्ज़ आके बढ़ा कब्ज़ का मर्ज़ ।
ज्यादा कहूं क्या अलगर्ज़, अब तुम खुद करलो अन्दाज़ा ॥३
करके, अन्य लोग अब वैर काटें शूद्र रूपी पैर ।
देखो चन्द्र नहीं है ख़ैर, घाव लगा जिगर में ताज़ा ॥४॥

नहीं दुनियां पर रहम खाते हो।
नित्य विषयों में धन को लुटाते हो॥
कोई बेवा विचारी की सन्तान ही।
सच है बेवस का कोई रखैय्या नहीं॥
गौऊ माता की हालत कैसी बनी।
नित्य घी दूध माखन देवे खड़ी॥
देखो कैसी बेचारी पै विपता पड़ी।
सच है बेवस का कोई बचय्या नहीं॥
ऐ आर्य्य जाती देख नय्या तेरी
समुद्र में जा मंझधार पड़ी॥
हाथ बांदे है बिजली अन्धेरी झड़ी।
बिन प्रभू जी के कोई बचय्या नहीं॥

भजन नं० १४७

न जीती है न मरती है न सोती है न उठती है।
तेरी ऐ कौम दुनियां से मिट जाने की बातें हैं॥
खुले फाटक तेरे घर के शवे तारीक है सिर पर।
लुटेरे फिर रहे लाखों यह मिट जाने की बातें हैं॥
हमारे दिल ने दल डाला हमें विषयों की चक्की में।
जिधर देखो उधर इस दिल के बहकाने की बातें हैं॥

नहीं दुनियां पर रहम खाते हो।
    नित्य विषयों में धन को लुटाते हो॥
कोई गैया विचारी की सन्तान हीं।
    सच है बेवस का कोई रखैय्या नहीं॥
गौऊ माता की हालत कैसी बनी।
    नित्य घी दूध माखन देवे खड़ी॥
देखो कैसी बेचारी पै विपता पड़ी।
    सच है बेदस का कोई बचय्या नहीं॥
ऐ आर्य्य जाती देख नय्या तेरी
    समुद्र में जा मंझधार पड़ी॥
हाथ बांदे है बिजली अन्धेरी झड़ी।
    बिन प्रभू जी के कोई बचय्या नहीं॥

भजन नं० १४७

न जीती है न मरती है न सोती है न उठती है।
    तेरी ऐ कौम दुनियां से मिट जाने की बातें हैं॥
खुले फाटक तेरे घर के हाथे तारीक है सिर पर।
    लुटेरे फिर रहे लाखों यह मिट जाने की बातें हैं॥
हमारे दिल ने दरा डाला हमें विषयों की घाटी में।
    जिधर देखो उधर हर दिल के बहकाने की बातें हैं॥

ऋषि मुनियों के बच्चे मुसलमाँ ईसाई बन जावें।
तुम अपनी आंख से देखो यह मरजाने की बातें हैं
हम अख़बारों में विधवाओं की हालत रोज़ पढ़ते हैं।
बुरा मत मानिये सब नाक कट जाने की बातें हैं।
कहीं दोज़ख है न जिन्नत है यह बिलकुल लग़व किस्से हैं
जो सच पूछो तो यह लोगों के बहकाने की बातें हैं
खियाले इसाकिया है यह न मरदान की बातें हैं।
यह मर्दों के समझने और समझाने की बातें हैं॥

भजन नं० १४८

हिन्दुओं के दिल से या रब नक़्शे दुई मिटा दे।
बिछड़े हुये हैं मुद्दत से अब तो गले लगा दे॥
बरबाद हो रहे हैं आपस में लड़ झगड़ कर।
आकर पिता तू मै प्रीत की पिला दे॥
दरदे ज़वां बना है नग़मा जुदाईयों का।
लै प्रीत की सुना दे पथ प्रेम का बता दे॥
भाई का आज भाई दुश्मन बना हुआ है।
आ प्रेम की गङ्गा इस देश में बहा दे॥
बाईस क्रोड़ हिन्दू फिर ऐसी दुर्दशा हो।
ख़्वाबे गिरां से या रब इस क़ौम को जगा दे॥

यह दिन हमें दिखाये सङ्गठन की कमी ने।
अब बिखरे भाइयों को हीरो शकर बना दे॥
तू एक है मगर यां मत हैं अनेक भगवन।
इन सब को एक कर दे और तफरके मटा दे॥
गुमराह हो रहे हैं दर दर भटक रहे।
कुछ तो हमें हमारी मंज़ल का तू पता दे॥
जुलमत में सूझता है कब राह कारवां को।
यह नूर वेद अक़दस का फिर दिखा दे॥
आपस में मिलके बैठें सब प्रेम से परस्पर।
सतयुग का दौर दौरा परमात्मन चला दे॥
क्या लाभ कौम को है बुजदिल की जिन्दगी से।
हम को बहादुरों का जीवन जगत बता दे
खिदमत में भाईयों की सब कुछ निसार कर दें।
बल वीर्य धीरता दे शंकर उदारता दे॥
जर चीज क्या है नकद जां तक भी हम लुटा दें।
जातीयता की वेदी पर सीस तक चढ़ा दें॥

भजन नं० १४९

यतीम बच्चों की फरयाद।

यह हीरे मिल रहे मिट्टी में तुम इन को उठा देना।
यह बे दरबेदा बन्धु हैं ठिकाने पर लगा देना॥

अरे दौलत के मतवालो रहो तुम सुख से महलों में।
मगर जो भाई बेघर हैं उन्हें भी आसरा देना ॥
तुम अपने पेट भरकर चैन से सोलो गदेलों पर।
मगर इन भूखे बीमारों को भी तुम कुछ दवा देना
शरावें तुम को पीने से अगर दमभर मिले फुरसत।
यह खूने दिल जो पीते हैं उन्हें पानी पिला देना ॥
बिना उन के सहारे के तुम आगे बढ़ नहीं सकते।
अगर तुम उन्नती चाहो तो उन को मत भुला देना
मिटाना है अगर भाईयो तुम्हें अफलास भारत का।
तो है ज़ेबा उन्हें पहले बराबर का बना देना ॥

७—आर्यवीरों का जीवन ।

भजन नं० १५०

पंडित लेखराम जी का धर्म प्रेम ।

रिसाला हाथ में लाकर दिया जिस घड़ी माता ने,
तो झट खोलकर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को ।
लिखा था उस में कुछ हिन्दू मुसल्मान होने वाले हैं,
तो धोकर हाथ जल्दी से हुए तैयार जाने को ।
कहा माता ने ऐ बेटा । अभी तू आके बैठा है,
अभी फिर होगया तैयार तू परदेश जाने को ।
तू माता और बीबी को कुछ ऐसा भूल जाता है,
नहीं आता महीनों ही कभी सूरत दिखाने को ।
अगर कुछ कुछ समझती तू न [illegible] है [illegible] बेटा,
मगर कहना [illegible] है नहीं [illegible] है [illegible] को ।
मेरा [illegible] बेटा बस आता है तो [illegible] दो,

भजन नं० १५१

शहीद अकबर वीर लेखराम।

शहीदे अकबर का खून नाहक,
यह कह रहा है सुना सुनाकर।
कि वेद मत के चमन को सींचो,
लहू को अपने बहा बहाकर॥
मिशन से ऐ उंस रखने वालो,
दिलों से तुम बुज़दिली निकालो।
सरे तुअसबको काट डालो,
कलम के खंजर चला चलाकर।
कसम है वेदों की तुम को मित्रो,
ज़रा झिझकना ना धर्मवीरो।
मुखालफों को शिकस्त दे दो,
सिपाह बरहा बढ़ा बढ़ाकर॥
ज़रा शजायत से काम लो अब,
बरआयगा बस इसी से मतलब।
करेंगे सिजदे में ओ३म् के सब,
सिरों को अपने हिला हिलाकर॥
किसी का मुतलिक ना खौफ लाओ,
बहादुराना झलक दिखाओ।

वह तेगेवरां दिखा दिखा कर।
कहां को जाते हो देखो माले,
ना ज़िन्दगी को खतर में डालो॥
मंवर से वेडे को अब नकालो,
सब अपनी ताकत लगा लगा कर।
अलगं हुए जो तुमारे मत से,
कभी थे माई तुम्हारे सच्चे।
विठाओ पहलु में प्यार करके,
गले से अपने लगा लगा कर।
मकान नफ़रत को जड़ से ढाओ,
गलानी में से फ़िदा मटाओ।
रसोई हाथों से उन्के खाओ,
तुंम अपने घर में बुला बुला कर॥

भजन नं० १५२

यादें शहीद।

ग़म शहीद धर्म का खायें ना क्यों।
अबर खून आंखों से वरसायें ना क्यों॥
नरके जिस्ने हम को वखशी ज़िन्दगी,
याद में हम उस्की मर जायें ना क्यों।

मिसाले तुख्म जो हस्ती को अपनी खुद गलाता है ॥
अदब से रूबरू खुरशीद उस के सिर झुकाता है ।
जो यनफ़र सुबह सादिक़ सोते आलिम को जगाता है
है बेहूदा जो मिट्टी माहे कामिल पर उड़ाता है ।
यह पागल है दिया दिन में जो सूरज को दिखाता है ॥
धर्म इन्सान से इन्सान को उल्फ़त सिखाता है ।
धर्म के नाम पर बुज़दिल है जो खंजर चलाता है ।
वही सुरअत से खुरशीद सदाक़त चलता आता है ।
वह दीवाना है जो शमा काफ़ूरी जलाता है ॥
वह दुनियां में मुसाफ़िर यादे मुर्दन नाम पाता है ।
मिसाले लेखराम अपनी जो हस्ती को मिटाता है ॥

भजन नं० १५४

सिकन्दर को दण्डी स्वामी का जवाब

बादशाहत है तुझे गर्दिश में लाने के लिये ।
यह फ़क़ीरी है मेरी आराम पाने के लिये ॥
दुश्मने ईमानो जां है तेरे तेरे ही हवास ।
इन्द्रियां सरकश नहीं मेरे सताने के लिये ॥
क्योंकि ये हाथी समझ दुश्मन दिखाई दें तुझे ।
मुझ पे हैं सब मित्र की दृष्टि दिखाने के लिये ॥

मांगता है अब भी तू ईश्वर से दुनियाभर का राज ।
हाथ फैलाता नहीं मैं एक दाने के लिये ॥
शाह बतला तो सही तू है धनी या मैं धनी ।
'चन्द्र' आया है मुझे जो आज़माने के लिये ॥

भजन नं० १५५

प्रहलाद का निष्क्रय प्रतिरोध ।

पिता अधिकार है तुम को हमें गिरिसे गिराने का।
जलाशय में डुबाने और पावक में जलाने का ॥
तुम्हें अधिकार है राजन् करादो देश निष्कासन ।
तथा बन्दी बना डालो हमें इस जेलखाने का ॥
हमें भी सोलहो आना दिया है स्वत्व ईश्वर ने ।
प्रतिज्ञा पालने में शान्ति सब दुख उठाने का ॥
तुम्हें अधिकार है हम को दुख नहीं दिला दीजे ।
हमें अधिकार तिस पर न पीछे पग हटाने का ॥
अहो सरेन्द्र ने इस भय से न तुम भयभीत कर सके ।
है आत्मिक बल मय हम में सफलता सुख पाने का ।
किया है सत्य प्रण जो कुछ न जौ मर अब टलेंगे हम ।
कलंक कालिमा अब तो नहीं मुख पर लगाने का ॥
हुआ प्रह्लाद था जिसने ठना था हर के सत्याग्रह ।

धर्म पर कर गये गुरु तेग़ अपनी जान को कुर्बां।
हुआ सर सबज़ जिनके खून से यह बाग़े हिन्दुस्तां॥
धर्म के वास्ते गोविन्द ने खुद जान तक वारी।
सहे दुख हर तरह के और मुसीबत झेल ली सारी॥
गुरु गोविन्द जी के लाडले बेटे ने सिर वारा।
चुने ईंटों में खातिर धर्म की लेकिन न जी हारा॥
धर्म्म के वास्ते प्रहलाद ने सौ आफ़तें झेलीं।
बलायें सैंकड़ों सिर पर हज़ारों आफ़तें लेलीं॥
धर्म्म के वास्ते पूर्ण ने कटवाये थे दस्तो पा।
ध्रुव ने भी धर्म के वास्ते बन में किया डेरा॥
हरिश्चन्द्र ने छोड़ा था धर्म्म की धुन में राज्य अपना।
हवाले विश्वामित्र के किया था तख्तो ताज अपना॥
लिया बनवास प्यारे राम जी ने धर्म्म की खातिर।
धर्म के वास्ते दशरथ ने दे दी जान तक आख़िर॥
दिखा दूंगा कि इन वीरों की इक औलाद हूं मैं भी।
धर्म्म पर जान देने के लिये दिलशाद हूं मैं भी॥
तफ़ाज़े खौफ से अपने अक़ीदे को न छोड़ूंगा।
मरूंगा जान दे दूंगा धर्म से मुंह न मोड़ूंगा॥
सुनो ऐ हाज़रीन तुम भी धर्म्म पै जान दे देना।
ग़मो रंजो अलम सिर पर जो आजाये वह ले लेना।

फ़िदायाने धर्म अब हिन्द से क्या उठ गये सारे।
चमकता क्यों नहीं अब कोई वक़्फ़े इम्तहां होकर॥
बताओ क्या हुए वह मर्दे मैदाने धर्म मेरे।
पड़े उन की जगह पर कौन है यह नीम जां होकर॥
बताओ कुछ पता उन शास्त्र और वेददानों का।
किधर को इस जगह से हैं गये वह नुक़्तदां होकर॥
हुई क्या हिन्दुओं की आह वह मरदानगी हिम्मत।
कि जब अड़ते थे मुझ से नातवां शेरे जियां होकर॥
बहुत अरसा हुआ गो आप से बिछुड़े हुए मुझ को।
पड़ा हूं गोशा ए मरक़द में गो मैं बे निशां होकर॥
मगर अब तक भी मुझ में वह ही जोशे धर्म क़ायम है।
भरी है इस की उल्फ़त मुझ में मग़ज़े उस्तख़ां होकर॥
हक़ीक़त का किया इज़हार था मर कर हक़ीक़त ने।
न पाया आपने पर भेद हाये राज़दां होकर॥
इशारा था कि बिन वैदिक धर्म जीना निकम्मा है।
हयाते चन्दरोज़ा छोड़ दी मैंने अयां होकर॥
मगर तुम हो कि दुनियां ले रहे हो दीन के बदले।
जमे हो इस के दर पै आह संगे आस्तां होकर॥
अज़ीज़ो छोड़ दो ग़फ़लत करो वैदिक चलन अपना।
यही काम आएगा आख़र हमारा राज़दां होकर॥

वरना इस रास्ते यह कौन है जाये क्योंकर ॥
बन चुका फ़र्ज़े शनास ऐसा तूही मरघट में।
वरना धीधी पै कोई तेग़ उठाये क्योंकर ॥
मुल्क को कौम को है फ़ख़र तेरे कामों पर।
इसलिये चन्द्र तेरे गीत ना गाये क्योंकर ॥

भजन नं० १५९

जान देना धर्म पर उस वीर का ही काम है।
मौत की परवाह न की जिसका यह नेक अंजाम है ॥
बाप मां औरत को छोड़ा राहे हक में जान दी।
सिर कटाया शौक से जिस का हकीकत नाम है ॥
मौत आने के लिये है जान जाने के लिये।
धर्म से मुंह मोडना यह बुज़दिलों का काम है ॥
दौलते दुनियां को छोडा छोडा उल्फ़त खेश की।
धर्म मत छोडो कभी धर्मी का यह पैगाम है ॥
मर गया मगर नाम तो दुनियां में रोशन कर गया।
है हमेशा ज़िन्दा वह जिसका कि ज़िन्दा नाम है ॥
नामुरादो रूस्वाह कातिल हुआ खाना खराब।
चार सू रोशन हुआ धर्मी का लेकिन नाम है ॥
ज़िन्दगी धर्मी की हमको खूब देती है सबक।

नेक को मिलती है नेकी बद का बद अंजाम है॥
चार दिन की ज़िन्दगी में भूलना मत मौत को।
सोच कर चलना भला माया का फैला जाल है॥

भजन नं० १६०

गुरु गोविन्दसिंह के नौ निहालों की शहादत।

ज़िक्र इसलाम का इस वक्त न हम से कर तू।
जिस्म तो दब चुका अब सीस पै पत्थर धर तू॥
लुत्फ़े गोविन्द के हैं जिन से दहलती शाही।
सिंह पुत्रों को न गीदड़ के बराबर कर तू॥
जिस्म फ़ानी तो मिला खाक में मिलना है जरूर।
रूह को मार के दिखलादे तो जानूं नर तू॥
हुक्म ईश्वर का यूं ही इसमें अजारा क्या है।
तमा क्या देता है ले जायगा हमराह ज़र तू॥
सर को दे तेग़ बहादुर ने ली थी सरदारी।
हम को भी आज उसी ज़ैल में ज़ालिम धर तू॥
शुक्र सद शुक्र हुए धर्म्म के बदले कुर्बान।
गौर से देख हक़ीक़त की हक़ीक़त पर तू॥
धर्म्म से प्रेम करें जिस्म से उल्फ़त तोड़ें।
सख़्त आसान नहीं मरने से पहिले मर तू॥

हाथ तो धो चुके अब आँखें उठाकर यह दास।
अर्ज़ ईश्वर से यही मकाँ से मारत भर तू॥

भजन नं० १६१

अकबर का पैग़ाम राणा प्रताप को।

पहुंचा जब अकबर का क़ासिद वक्त था वह शाम का
दश्त राना था तिन्हा साथ था समसाम का॥
अस्प प्यासा खुद भी प्यासा आब का क़तरह न था।
रेग बिस्तर और ढेला तकिया था आराम का॥
खत दिया क़ासिद ने जिस में था लिखा ऐ नामवर।
है जबांजद आज कल किस्सा तेरे आलाम का॥
किस लिये नाहक़ उठाता है तू यह रंजों अलम।
पड़ चुका है हिन्द में सिक्का हमारे नाम का॥
यह नहीं मुमकिन कि बरसर हो सको तुम जंग में।
क्या करेगा तू बता सामान नहीं गर काम का॥
ख़तम कर अब जंग और शरतें इताइत कर कबूल।
है नतीजा हेच तेरे मुद्दआय खाम का॥
रहम आता है मुझे सुनकर तेरी फ़ाक़ाकशी।
काट तेग़े सुलह से फन्दा बला के दाम का॥
तू दिलावर मंचला है शक नहीं इस में ज़रा।

तुम से दो दम रज़म करा मुंह रुस्तमो बेराम का ॥
आ मेरे दरबार में और कुर्सिये ज़री पे बैठ ।
ऐश कर और दौर रख हर दम शराबे जाम का ।
मैं फ़क़त यह चाहता हूं ऐ दिलेरे होश मंद ।
दूर करदे दस्ते उलफ़त से अलफ़ इसलाम का ॥

भजन नं० १६२

राणा प्रताप का अकबर को जवाब ।

यूं जवाब अकबर को राणा ने दिया पैग़ाम का ।
सिर झुकाऊं किस तरह फ़रज़न्द हूं मैं राम का ॥
पृथिवी है मेरा तख़्त और फ़लक अपना है कफ़न ।
कौम का ग़म खाता हूं भूका नहीं इनाम का ॥
साथियों के वास्ते कब ऐशो इशरत है रवा ।
दर्दे मिल्लत का हूं आदी ग़म नहीं आराम का ॥
हूं सराफ़ा मैं पला हुब्बे वतन में ऐ ग़ुग़ल ।
मुझ को गर्दिश में मज़ा मिलता है दौरे जाम का ॥
मुझ को है हरदम यह ग़म आज़ादिये मुल्क वतन ।
है मुझे दरपेश क़िस्सा हिन्द की अक़्वाम का ॥
जिसने आपा का मैंने रक्खा है रंगे विना ।

खास मतलब है मेरे आग़ाज़ का अंजाम का ॥
जिन्दगी बाक़ी अगर मेरी है तो चितौड़ में।
एक दिन जारी करूंगा सिक्का अपने नाम का ॥
लो श्री प्रताप ने जो कुछ कहा पूरा किया।
बेगुमां वह मर्द था और आदमी था काम का ॥

भारत सम्बन्धी।

भजन नं० १६३

ऐ आफ़ताब तूने देखा है सब ज़माना।
अहदे युधिष्ठिरी की वह शाने खुसरवाना॥
उज्जैन राजधानी वह नौ-रत्न का मजमा।
विक्रम की सलतनत के अहकाम आदिलाना।
हाथों में भीम के वह फिरना गदा का रण में।
अर्जुन से सफशिकन की जंगे बहादुराना॥
काशी के मरघटों में तुझ को नजर था आया।
दानी हरिश्चन्द्र खैरात में यगाना॥
हैं बैजू बावरे के कानों में गीत तेरे।
और तानसैन का भी तूने सुना तराना॥
खिड़की में बैठकर वह गौरी के बोलते ही।
आवाज़ पर पिथौरा का मारना निशाना॥
जिसको कि पहले भूप करते हैं आज सिजदा।
कुछ याद है कपिल की वह बहसे फ़िलसफ़ाना॥
ओ आफ़ताब तेरे ही सामने हुई थी।
विद्या में जैमिनी की तसनीफ़ आलिमाना॥
धन्वन्तरी से तूने आंखें मिलाई अपनी।

सुथरा मरक़ का तूने देखा दुराशिलाना॥
जो गुलनशीन नक़्शा धरन किये हैं तूने।
हो कर के आलिमों के उस्ताद फ़ाज़िलाना॥
आती रही है ख़ुशबू तुम को अवध के अन्दर।
रामो लखन भरत की उल्फ़त बिरादराना॥
ऐ पाक हिन्द! तू अब तक भूला नहीं है हरगिज़।
अपने पति से सीता का प्रेम मुख़्लिसाना॥
है लौहे दिल पे तूने सब कारनामा लिक्खे।
गुज़रा है तेरा सारा जीवन मुअर्रखाना॥
हम काग़ज़ी शहादत देते हज़ार लाकर।
होता न पुस्तकों पर गर ज़ुल्म वहशियाना॥
हम शानदार अपना इतिहास पेश करते।
होते अगर न जौरो बेदाद जाबराना॥
तारीख़ आर्यावर्त अब आफ़ताब तू है।
कर फ़ैसला हमारा निर्पक्ष मुन्सिफ़ाना॥
इल्मों हुनर को हम ने पाला था अपने घर में।
हासिल हुई थी हम को पदवी वह आलिमाना॥
मौजूदगी में तेरी अन्धेर है यह कैसा।
क्या रास्ती अदम को है हो गई रवाना॥
तू इब्तिदा अब तक नाज़िर है हम सबों का।

तू करदे अपनी जाहिर राये मुकरियाना ॥
तेरे सिवा पुराना रोशन नहीं है कोई ।
तकलीफ़ तुम को दी है ये तकल्लुफ़ाना ॥
ऐ आफ़ताब बतला हम किस लिये मिटे हैं ।
और तनज़्ज़ली के क्यों हो गये निशाना ॥
गल्ले से कोठी खाते जिन के भरे हुए थे ।
उन को नहीं मुयस्सर होता है एक दाना ॥
इशरत ने अपनी सूरत अशरत में है छिपाई ।
मातम वहां है जिस जा बजता था शादियाना ।
विद्या से दूरता से अब हो गये हैं खाली,
जो काम हैं हमारे सब हैं वह बायगाना ॥

भजन नं० १६४

[illegible] मरदों के कारनामे, यह कह रहे हैं सुना २ कर ।
[illegible] रहे हैं यह इन्सांने कामिल सबक [illegible] २ कर,
[illegible] यह जो काम किये थे, ध्यान ज्ञान का [illegible] कर दो ।
[illegible] बुजुर्गों ने [illegible] पूरे, हज़ार [illegible] उठा २ कर ॥
[illegible] हैं भीष्म पितामह लाखों, [illegible] आंखों ।
[illegible] थे आख़िर तलक गुज़ारे, दिलों पे काबू [illegible] २ कर ॥

बिका था काशी में हरिश्चन्द्र, ग़ुलाम भंगी के घर का बनकर।
निभाया अपने था पृण को लेकिन, शहर के मुर्दे जला २ कर॥
रिवाज रघुकुल का ऐसा पाया, वचन न छोड़े गो ग़म उठाया।
बनों में रहते थे राम लछ्मण, फ़क़ीरी बाना बना २ कर॥
कहां है पूताप जैसा राणा, मिला न जंगल में आबो दाना।
न कौल हारा किया गुज़ारा, जंगल के पत्ते चबा २ कर॥
कहां हैं गुरु गोविन्द के लड़के, जिन को ज़ंजीर में जकड़ के।
दिवार में भी चुनाया जिन को, था ईंट गारा लगा २ कर॥
कहां शिवा और कहां धुरू हैं, न पूह्लाद अपने की आवरू है।
फ़लक ने लाखों दफ़ा उखाड़ा, डटे थे पांवों जमा २ कर॥
गया कहां पर दिलावर हक़ीक़त, उठाई जिस ने कड़ी मुसीबत
कटाई मरदाना वार गर्दन छुरे के नीचे झुका २ कर॥
दिखाई देते नहीं हैं गौतम, जिन्हों ने छोड़ा था राज्य उत्तम।
सिखा गये थे जो रहम करना गले में अलफ़ी सजा २ कर॥
थी हिन्द में जब कमाल ज़ुलमत, करी थी शंकर ने आके
दिलों को रोशन वह कर गया था अजीब दीपक जला २ कर॥
ज़माना ज्यादा न होने पाया, इक मर्द मैदां में और आया।
हज़ारों खाई थी ईंट पत्थर, अमूल्य मोती बता २ कर॥
सुनाया भजन में हाल जिन का, रगों में है गर खून उन का।
गिरे हुए हैं चन्द्र हिन्दू; उठा दो हिमत बढ़ा २ कर॥

भजन नं० १६५

ऋषियों के आ जमाने इक बार फिर भी आ जा।
तन मन तेरे निछावर अपनी झलक दिखा जा॥
चारों दिशा में वेदों का डंका बज रहा है।
वह साम गान ऋषियों के मुख से फिर सुना जा॥
वह दूध की नदियां बहती कभी यहां थी.
पांवों पड़ूं मैं तेरे इक बार फिर भी आ जा॥
घर २ में हो सुगंधी नित्य होम यज्ञ हवन से।
हैजा प्लेग चीचक सब रोगो को उड़ाजा॥
अपनी ऋतु में वर्षा जल वायु सुख का दाता।
धन धान से तू भारत पहिला सा फिर बना जा॥
वह सांख्य योग न्याये मीमांसा के कर्ता।
भारत की गोदियों में इक बार फिर खिला जा॥
वह तेज वीरता बल बुद्धि सभों में हो फिर।
भीष्म से ब्रह्मचारी बनना हमें सिखा जा॥
विद्या का कोष हमारा वापस हमें तू दे दे॥
औरों को भी सिखाने की रीति फिर सिखा जा॥
आलस्य द्वेष अविद्या हम तो न तेरी चाहें।
पीछा हमारा इन से आकर फ़ौरन छुड़ा जा॥

रूठा क्यों हम से इतना तेरा है क्या बिगाड़ा।
सखे की मान बेनती इकबार फिर भी आ जा॥

भजन नं० १६६

गया कहां पर बतादे भारत, वह पहला जाहो जलाल तेरा।
कहां गई तेरी शानो शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा॥
कहां गई तेरी वेद विद्या, वह ईश्वर ज्ञान का खज़ाना।
अजल में ईश्वर ने था जो सौंपा, किधर गया है वह माल तेरा
कहां वह ज्योतिष कहां वह मन्तक, कहां वह तेरा योगसाधन।
फलक से ऊपर जो पहुंचता था, किधर गया वह ख्याल तेरा॥
कहां वह बुद्धि वह बल कहां है, कहां है वह तेजकी चमक अब
कि जिससे मानन्द महरे मनवर, चमक रहा था जलाल तेरा॥
कहां गया तेरा सत्य भाषण, पवित्र बुद्धि व सदाचरण।
कहां गई वह प्रीतम भक्ति, कि था जो अनमोल लाल तेरा॥
समाधिकर्त्ता व योग बल से तू ध्यान ईश्वर मे नित्यमग्न था।
रहे थे भरपूर ब्रह्मविद्या से देश हरदम कपाल तेरा॥
न था दुनिया में सानी तेरा, हसूल इल्मो हुनर में कोई।
सब ममालिक के माहेकामिल से, ज्यादा रोशन हिलाल तेरा
न था पेसा पा शिकस्ता नहीं था पेसा खराब खस्ता।

नहीं था ऐसा जलीलो रुस्वा, नहीं जबूं था यह हाल तेरा ॥
नहीं थी तुम को मुकद्दमे बाजी, नहीं थी यों तुम में कीनासाजी
सदा रहता था तुम से राजी कादिर जुल जलाल तेरा ॥

भजन नं० १६७

क्या है परवाह अगर यह जान रहे या ना रहे
जिस्म की कैद में यह जान रहे या ना रहे ॥
शान कायम हो अगर प्यारे वतन भारत की।
सिर बला से जो मेरी शान रहे या ना रहे ॥
देश के वास्ते सूली पः चढ़ादो मुझ को।
गम नहीं कुछ भी अगर प्राण रहे या ना रहे ॥
आज ही शौक से मर देखें तो अच्छा क्या है
क्या खबर कल की है इन्सान रहे या ना रहे।
मुझ को सेवा है तेरा मान से जीवन मन्जूर।
मेरे जीवन का यह अरमान रहे या न रहे ॥

भजन नं० १६८

एक नौजवान की उम्मेद।

पसे मुर्दन भी होगा प्यार में यह ही बयां मेरा
मैं हूं भारत की मिट्टी है यहीं दिल्दार मेरा

मैं इस भारत के उजड़े हुए खण्डर का हूं जर्रा ।
यही पूरा पता मेरा यही है कुल निशां मेरा ॥
खिज़ां के हाथ से मुर्झाये जिस गुल्शन के हैं पौदे ।
मैं इस गुल्शन की बुलबुल हूं यह ही गुलिस्तां मेरा ॥
अगर यह प्राण तेरे वास्ते ऐ देश ना जावे ।
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामो निशां मेरा ॥
मैं हूं तेरा सदा तेरा रहूंगा बावफा खादिम ।
तुही है गुलिस्तां मेरा तुही जन्नत निशां मेरा ॥
मेरे सीने में तेरे प्रेम की अग्नि भड़कती है ।
निगाहों में मेरा भारत तुही है कुल जहां मेरा ॥

भजन नं० १६९

(भारत माता का रुदन)

मेरे गम की कहानी मुझे किस्सा ख्वां न समझो ।
अभी सुन के रो पड़ोगे इसे दास्तां न समझो ॥
शौक से उडा दो मेरे तनके टुकडे टुकडे ।
रुकेगा जज़्बाए दिल मुझे बे जवां न समझो ॥
अरूज है किसी को कमी है किसी को पस्ती ।
फलक की गरादिशें हैं दौरे जमां न समझो ॥

मेरे लाल आँखें खोलो जरा हाथ पाओं धोलो ।
न जगे वो अपनी हस्ती ज़ेरे आस्मां न समझो ॥
यहीं कोहेनूर गौहरा जिसका था फुल जमी पर ।
है जहां में अभी तक मुझे वे निशां न समझो ॥
न जिगर में आग भड़की न कलेजा जल रहा है ॥
यह गुबार आहे दिल है मेरी धुआं न समझो ॥
यही रोहयो शानो शौकत यही जलाल अपना ।
है जर्फ लाल लेकिन अभी नातवां न समझो ॥
न मचलिये हज़रते दिल जरा सब्र कीजियेगा ।
अभी नाज़ हो रहे हैं इन्हें सख्तियां न समझो ॥
मुझे भूलता है पागल मैं तेरी ही खास मां हूं ।
किसी बेनवा को हिन्दी गिरिया कनां न समझो ॥

भजन नं० १७०

कर जाओ काम दोस्तो भारत की शां रहे ।
दुनियां में तुम रहो न रहो पर निशां रहे ॥
अब गौर करने सोचने का वक्त है कहां ।
पूरा करदो अपना जिससे कि यह नीमजां रहे ।
तुम मरद के हर्फाल बनो कुछ तो कर दिखाओ ।
ता नाम लेवा कोई तो ये मेहरबां रहे ॥

तूफ़ान है रात तीरा है लहरें हैं जोश पर।
उठ बैठो जिस से कश्ती बचे बादवां रहे ॥
कैसा जमाना आया है कि पर्दा पलट गया।
अब वह न गुल न बाग़ न वह बागवां रहे ॥

भजन नं० १७१

शेहर—देखिये यारो जमाना की अजब रफ़तार है।
है बदलता दिन बदिन नित्य निय नई यह बहार है॥
कभी धूप है छाया कभी कभी है सुमा कभी शाम है।
गरमी और बरषा कभी कभी शीत की भरमार है॥
वस्तीसे सेहरा कभी सेहरा से होजाता है शेहर।
कभी शाह थे वह गदा हुये और गदा से सरदार हैं॥
जो कभी उस्ताद थे वह अब हुये नाक़स अक़ल।
थे कभी मोहताज जो अब होगये ज़रदार हैं।
फ़खर था दीदार जिनका उनसे अब नफ़रत हुई।
प्यार था जिन यारों से अब न यार हैं ना वह प्यार है॥
राजा के सिरताज सब मुल्कों के शेहनशाह थे।
उनकी अब औलाद को मरना शिकम दुशवार है॥
वीरता मुल्कों में जिनकी हर जगा मशहूर थी।
उन के अब ऐसे पिसर मक्खी न सकते मार हैं।

दूमी प बलदेव सिंह हो जायगा उसकी नजर ॥
याद कर उस को जो कुल मख़्लूक का मरतार है ॥

भजन नं १७२

यह दिलचस्पी है री बाग़े वतन तेरी बहारों में
नज़र आती नहीं रूयेजमीं के लाला ज़ारों में
अज़ल से है लक़ब गलज़ारये शाईस्तगी तेरी
रही है मिलती तदजीब तेरे मरग़ज़ारों में
यह नगमें मुद्दतों से है गंवारों की ज़बानों पर
जो पोशीदा हैं साजे मन्तके मग़रब के तारों में
हर इक ज़राये तेरा माइमूरये नुरे तक़दुस है
मोड़ों माहे आलमताब है तेरे ग़वारों में
तेरे गरदों की शानेदिल फरेबी और ही कुछ है
यगरना सैदानी मौजूद हरजा है सितारों में

भजन नं० १७३

मेरा हो तन स्वदेशी मेरा हो मन स्वदेशी
चोटी से हो चरन तक सारा बदन स्वदेशी

घरबार हो स्वदेशी ईश्वर की गर दया हो
कशमीर से कमारी तक हो वतन स्वदेशी
देसी विचार मेरे भारत सुधार सोचें
हो शुद्ध और निर्मल मेरा चलन स्वदेशी
ऐसी स्वदेश से हो मेरी अटल प्रीती
भारत के वास्ते हो जीवन मरन स्वदेशी
फल फूल हो स्वदेशी भारत के गुलस्तां का
बुलबुल भी हो स्वदेशी और हो चमन स्वदेशी
जब तक जियों स्वदेशी सिंगार हो बदन पर
मर जाऊं तो भी होवे मेरा कफ़न स्वदेशी

भजन नं० १७४

कहां है वह मेरा दमख़म कहां ताबो तवां मेरी
गनीमत है जो बाकी है बदन में हड्डियां मेरी
अदू ताज़ीम ख़म करते थे अपना सर मेरे आगे
शहन्शाहे जहां तक चूमते थे आस्तां मेरी
बजा था हर तरफ दुनियां में उन्का मेरी ताकत का
चमकती थी जमाना में कभी तेग़ोसनां मेरी
निगहेबां धर्म था मेरा जबां वेदों की बानी थी
वफ़ा थी राज़दां मेरी हुई थी पासबां मेरी

गया वह दौरदौरा दारिये यखते जबूं आया
उड़ादीं गरादिशे फ़लक़ ने धज्जियां मेरी
नहीं अपना रहा कुछ पास मेरे सब है गैरों का
गिज़ा मेरी मेरा फैशन चलन मेरा ज़बां मेरी
फफोले दिल में पड़ते हैं झुलसती है ज़बां मेरी
अजब क़िस्सा है अपना निराली है दास्तां मेरी

भजन नं० १७५

आग में पड़कर भी सोने की दमक जाती नहीं।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं॥
सिल पर घिस देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू।
फूल की मिट्टी में मिलकर भी महक जाती नहीं॥
फूंककर आता नहीं कुछ लाल की रंगत में फ़रक।
तोड़ देने से भी मोती की चमक जाती नहीं॥
रंज में आता नहीं नेकों की पेशानी पे बल।
धूप की तेज़ी में सबज़ा की लहक जाती नहीं॥
आ नहीं सकती बवंडरों में शेरों की धहाड़।
दस्ते गुलचीं में भी गुंचों की महक जाती नहीं॥
सौफो खतरे में बदल सकती नहीं मरदों की खूं।
अंदलीबों की कफ़स में भी चहक जाती नहीं॥

मालूम दिखता नहीं इपना गुफ्तगिरु से कभी.
जोर से आंधी के शाखिरा की भड़क जाती नहीं ॥
मारा जल सकता है आशुतो हपल्म में देख,
बादलों में फिर से बिजली की कड़क जाती नहीं ॥
दुःख की उलझन का जजबा दिल से मिट सका नहीं,
कौम की खिदमत में ज्यादह के फलक जाती नहीं ॥

भजन नं० १७६

भारत क्या किया तुम ने हिन्दुस्तान बनकर.
दाग़ सा तू बन गया है जिस्म निशान बनकर
ब्राह्मण जगत के शिक्षक क्यों बन गये हैं भिक्षुक
गौतम कणाद ऋषिवर शंकर समान बनकर।
मुनियों से थे सुलक्षिण जो जात क्षत्रियों के।
डाकू व चोर क्यों हैं शाही जहां बनकर ॥
अर्जुन से शस्त्रधारी भीषम से ब्रह्मचारी।
गीदड़ पड़े बने क्यों शेर जवां बनकर ॥
फ़ाक़ाकशी से तेरे बच्चे तड़प रहे हैं।
गफलत में क्यों पड़ा है ऐसा अनजान बनकर ॥
तेरे रईस व राणे धनवान सेठ सारे।
कंजूस सूम क्यों हैं दानी महान बनकर ॥

इन्ने वतन मे क्यों है तेरा दिमाग़ खाली।
राना प्रताप व दानी भामां समान बनकर ॥
ख़िदमत वतन की कर ले सुखलाल गर है ख़ाहिश।
ज़िन्दा रहे जहां में मैं बेनशान बनकर ॥

भजन नं० १७७

नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते।
जान पर खेल ही जायेंगे अगर हम तो भी।
सैकड़ों को ही जिला जायेंगे मरते मरते ॥
मरे तन होंगे जुदा उनको तो होना ही है।
हम तो बिछुड़ों को मिला जायेंगे मरते मरते ॥
वह कोई और होंगे जो रो रो के कला के मरते।
हम रकीबों को हंसा जायेंगे मरते मरते ॥
खाक में जिस्म और किसी का मिलता होगा।
हम तो भूखों को खिला जायेंगे मरते मरते ॥
निशाना जब आयेंगे जिस वक्त हर्षांपे भादान।
खून तक अपना पिला जायेंगे मरते मरते ॥

भजन नं० १९८

यह असीरे दामे बला हूँ मैं, जिसे सांस तक भी न आ सके।
यह कतीले खंजरे नाज़ हूँ। जो न आंख अपनी फिरा सके॥
मुझे आसमान ने मिटा दिया, मुझे हर नज़र से गिरा दिय
मुझे खाक ही में मिला दिया, न हाथ कोई लगा सके॥
मेरी दुश्मनी पे हज़ार हैं, मेरे खातरों में गुबार हैं।
मेरे दिल में ज़ख्म हज़ार हैं, इन्हें कोई क्योंकर दिखा सके
मेरे सूरबीर कहां गये, मेरे किलागीर कहां गये॥
वह महमुनीर कहां गये, जो फिर पलट के न आ सके।
मेरे लम्बे बरछों को क्या हुआ, न कहीं कमां को जेर किया।
मुझे थोथे तीरों पे रख लिया, कभी इक निशाना उड़ा सके॥
मेरा हिन्दुकश हुआ हिन्दुकुश, वह हिमालया है दिवालिया।
मेरे गंगा जमना उतर गये, बस अब इतने हैं कि नहा सकें॥
न वह माला मोतियों के भरे, न वह चित्र सिर पर लगे हुए।
मेरे बाल खाक में हैं अटे, नहीं इतना कोई धुला सके॥
न वह दिल्ली है न वह आगरा, न बिहार और न कलकत्ता।
जो नगर है उजड़ा पड़ा हुआ, नये सिर से कौन बसा सके॥
मेरे ऊंचे २ जो कोट थे, वह हैं अब ज़मीं से मिले हुये।
वहां उल्लू आके हैं बोलते, जहां बाज पर न हिला सके॥
वह तख्त जिस पे कि मोर था, वह जहां में जिसका शोर था

के छीनछान के ले गये, वही जोर मुझ पै जता सके ॥
तो कोहनूर यहा दिया, उसे टुकडे करके उडा दिया।
हर तरह से मिटा दिया, कि नजर में ही न समा सके ॥
रे बचे माल हैं मांगते, इन्हें टुकडा रोटी का कौन दे।
हां आयें कह दें परे परे, कोई पास भी न बिठा सके ॥
रे लाल जो कि सिखाते थे, वही अब हैं औरों से सीखते।
खुदा की शान तो देखिये, मेरी बिगड़ी कौन बना सके ॥
फ़न थजे उसकी ही बंसरी, न रहे किसी की न है रही।
वही फिसलनी ज़मीन है, यहां पांव कौन जमा सके ॥

भजन नं० १७९
(दिलों में छाले पड़े हुए हैं)

या! कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पडे हुए हैं।
र २ पर हमारी ख़ातर, सितम के छाले पड़े हुए हैं ॥
मदमात जो आये बन कर यह ज़ुल्म करने लगे हमीं पर।
है अपने मकान वाले, मकान से बाहर खड़े हुए हैं ॥
पै आफ़त पड़ी हुई है, गले में ख़ंजर अड़े हुए हैं।
में नश्तर घुमे हुए हैं, जिगर में छाले पड़े हुए हैं ॥
पे बचों से बाप बिछुड़े, यह लेगे किस्मत के हांके हुए हैं।
नों के सुहाग उजड़े, घरों में ताले पड़े हुए हैं ॥
ज़माना की बिगड़ी नम्बर! यह ज़ुल्म होने लगे सरासर।
फरयाद किस को जाकर, दिलों में छाले पड़े हुए हैं ॥

स्त्री भजन।

—:◯:—

भजन नं० १८०

प्रभू लगावे पार वे हरी नाम सिमर लै।
नेक कमाई कर कुछ प्यार, इन्द्रियां नूं दे मार।
वे प्रभू नाम सिमर लै॥
धर्म बिना कोई संग ना जावे, कहंदे ने वेद पुकार
वे प्रभू नाम सिमर लै॥
विशे भोग विच गई जवानी, अजे वी सोच विचार।
वे प्रभू नाम सिमर लै॥
मानस जन्म अमोलक हीरा, मिले ना वारमवार।
वे प्रभू नाम सिमर लै॥
ना कर नीन्द्र कठन है पैंडा, होसैं बहुत खुवार।
वे प्रभू नाम सिमर लै॥
मूढ़ मना हो सोचें नाहीं, मैं तो अती गंवार।
वे प्रभू नाम सिमर लै॥

———

भजन नं० १८१

उपदेश

जो चाहो साँई अचार कर हथ बन्द के हाज़र आन खड़ी ।
कथा नहीं जो आख सुनायां तुम बिन जो मैं संग गुज़री ।
भटक भटक मैं बहुत दुख पाया शरण तेरी अब आन पड़ी ॥
मैं मूरख निर्लज कमीनी अधम नीच हूं पाप भरी ।
सागर देख भोजन मोहे दीना चित हरी अब देर करी ॥
शरण तेरे हृदय में मेरे समस्त चित की सुध बिसरी ।
शरण पड़ी हूं आन तुम्हारी पत राखो करुणामय हरी ॥

भजन नं० १८२

सिख्यो नी मैं किन रल जावां नाहीं किते मेरू ठोई ।
निपट अयानी सां नव मन भाई अइयां लगां मायें रोई ॥
होरी देवे खुश २ लेंदे ओ, करन न मल दे ओरी ।
अद धी होश सम्भाली मैं वाली, काढ़ी सन्द न पूर्णी छोई ॥
रानन मेरिया सब कुछ जानन, वेवे उमर मैं ढोई ॥
पढ़ न सिख्या पढ़्या न लिख्या, सबां न मूं पगोई ॥
निज २ माई रही समझाई, इक भी न मत्त लैनू ओरी ।
रानन मेरियां सब कुछ जानन, वेवे उमर मैं ढोई ॥

गल्ला कतिया कढ दंडाया, अगे कतण नूं हथ नहीं लाया।
हुन वैठी पछतावां ॥
मेघचन्द ब्रह्मण लैन नूं आया, रुदन लगा मेरा मां जाया।
किकण सौहरे जावां ॥
इस सोचश्रा में हां कुवश्री, इसदे कुचजियां में जासां कश्री।
जे कन्ते मन भावां ॥

——

भजन नं० १८४

करसां मैं हार श्रृंगार, जिस विच पिया मेरे बस आवे
प्राण आधार नी सैय्यां०

जिन भूषण विच होवे न दूषण सो मेरे दरकार। नी०
न ओह टुट्ट न घिस जाए न लेवे चोर चकार नी०
यह पंचे ओह सोना चांदी जो लगे कन्नां नूं भार। नी०
गजरयां बंगां थीं हुण मंगां कथा कल उतार। नी०
अन्त मुलम्मा है गहणा निकम्मा यह सौदा सुविचार। नी०
न धन रहसी न धन वालियां यह जोबन दिन चार। नी०
प्रेम दी माला ओ३म् दा नामा, पाओ नी गल विच हार। नी०
दान अन्त धर्मदा धागा, पुरमुदा धर्म पुकार। नी०
सेवा चूड़ा करनी कङ्गण, आरसी सत्य विचार। नी०
दया दी हाओपी झुमके क्षमा पाले. टिक्का उपकार। नी०

[illegible]स वे आस खलोती, करदी हां रो २ पुकार।
[illegible]राम' विपदा अति दुस्तर, लाज रखे कर्तार॥

भजन नं० १८६

माए नी मैं भई दिवानी, देख जगत् में शोर।
इकनां डोली इकनां घोड़ी इक सोए इक गोर॥
नंगी पैरीं जांदे डिठे, जि[illegible] के लाग क्रोड़।
इक शाह इक दरिद्री आहे, इक साधु इक चोर।
कहे 'हुसैन' फकीर नमाणा, भले असां थीं ढोर॥

भजन नं० १८७

[illegible]रे प्राणपति से जाय कहियो, दर्शन की [illegible] रही अभिलाषा।
[illegible]दिन तरसत हैं मोरे नैना, ज्यों जल बिन चातक प्यासा॥
[illegible] बिन सब कुछ फीका लागत, आभरण भूषण मलमल
[illegible]मा करो अपराध प्रीतम, अब शरणं [illegible] में देओ॥
[illegible]र २ यौवन धन है सबदोनन, जिसकी पति पूरी करे आशा।
[illegible]म कहाये किस के ढिग जाय, 'अनीचन्द' दासन अनुदासा॥

भजन नं० १८८

मेरे रामजी मैं भगवत के गुण गाना ।
राजा कंह मगरी गांव प्रभु मेरे कहां जाना ।
राम में मेरा ईश्वर प्यारा अमृत कर पी जाना ॥
दुनिया में काला माल जो मेरा ओ३म् प्यार कर जाना
मीरांबाई प्रेम दीवानी प्रभु प्रीतम घर पाना ॥

भजन नं० १८९

मैं जिन्दुजान गुणां धी पोली, सैय्यो बाबल जातयोनीं ।
मरजाइयों रातडो भज कोई डोली ॥ १ ॥
कई थाऊ रे धर्मो वरोले, मांम न मजियां मैं गुड़ियां पटोले।
लड़न थी अजे था नहीं। नपड़ा पया विछोड़ा हे.कां ॥२॥
आंजियां कीती गुर्ने प्यारीं, पाइलियां गल कंठ मंगारे।
सुन २ कूच दे ढोल नगारे, डोरियां झांगाडोली ॥ ३ ॥
पैर डोली विच भूल न धरसां, सैय्यो गुमां धी दिछड़ी।
दम २ याद तुसां नूं करसां, किधर गई मेरी टोली ॥ ४ ॥
डोली पकड़ विठाई माईयां, मिलन न दितियां धाविपां त
अंयडी नाल मैं विछ्या न होई, बाबल नाल न बोली ॥ ५
डोली चाई चहुं कहारां, रोयां कूकां आंदी मायां ।
मथयों धड़ी सुन्धर उतारां, गल थीं साहाथां खोली ॥ ६ ॥

अचरज कारीगरी है सिदाई, अक्ल फिकर चकित होजाई
गली २ महले २ चरखे डाह कुड़ियां धई महे।
कोई खुशी हो रही गीत नाद, कोई हसते होरां हसाई॥
जे ... विल निजन आके, लगो फत्तन जिया लगा के।
ओही सुघड़ स्यानी मदोई, सो तुर्ने छिक्कू भर लाई॥
ओहो छैलियां दाज बनाई, चरखी वार जेड़ा संग जाई।
भला दस म्यां तू कीता, कदी नाम कत्तन दा लीता॥
उट्टे करन मरजाइ, तां भी तेनू समझ न आई।
छड खेड अजे है वेला, मो ... प्या २ होया मेला।
रइयां मैय्यां नाल दुप मुकाई, पुनी तुसी न तैं मन लाई॥
जद होसी चरखा पुराना, ए ए कत्तन थी वह नमाणा।
बन्द बन्द ढिल्ला होजाई, लगे जोर तां फेरा खाई॥
तुद कुछ भी न बनसर आना, पछोतासी जा धक वहाना।
दुनियां मां पेओ फिर नाई, रो रो करसीं न्व थीं जुदाई
'गंगाराम' उदास न तूं छोप करत सम्मे फिर तूं।
लैणा फौन्त ने फल दुलाई, तेरी कुछ है सारी कमाई।

भजन नं० १९२

है स्वामी मैं किस विध होना पार कोई मैनों दस देवे
नातो भक्ती चित लाया, ना कोई उत्तम कर्म कराया

जनम गंवाया है स्वामी मैं ॥

न्हु मात पिता ना जाणिया, संत संग मने है ताजिया ।

धर्म ना [illegible] है स्वामी मैं ॥

मार्ट [illegible] गुण [illegible], विषय तृष्णा मैं दिल है लाया

मसाद [illegible] है स्वामी मैं ॥

पर उपकार [illegible], मैं [illegible] लीता

निर्मोघ आये दोना है स्वामी मैं ॥

नाहीं जाना धर्म प्यारा, [illegible] दी [illegible] सहारा ।

कुछ ना विचार है स्वामी मैं ॥

मन्त्र विद्या दा पठन ना पाठन [illegible] नामानंदा साधन

देखियां [illegible] है स्वामी मैं ॥

धन जोड़नदा विदार्थी चस्का, ठगा झूठ ते पाप दा लटका

भुलियां खटका है स्वामी मैं ॥

मैं स्वादि ते विषयां दी पट्टी, कोमुल मलाई ना खट्टी ।

हो मन मर्ती है स्वामी मैं ॥

उत्थे धर्म औ इक संग जावे भाई बन्दना काम कोई आवे ।

गंगाराम जो आज्ञाकारी सोई जान पार उतारी ।

बिन अधिकारी है स्वामी मैं ॥

मैं थोलड़ी औगनहार कोई मैंनो दस देवे ।

होमां किस विध थो जल पार ॥

भजन नं० १०४

ऐसी यह वीरा नारी तुम में थी ।
ी माता यह थी धर्म धारी तुम में थी ॥
सुन्दर सावित्री सत्यवानी विदुषी थी सुखी ।
ाणे लिये जो दुःखों से यह नारी तुम में थी ॥
है मिलो कि तुम थी सब का लिखा जानती हो ।
दमयन्ती लीलावती थी शक्ति धारी तुम में थी ॥
ये धृतराष्ट्र राजा जो कि नेत्र विहीन थे ।
थी नारी दुःख में साथी रहने वाली तुम में थी ॥
में यह सोचा सुख आंखों का सुख धिक्कार है ॥
कर पट्टी नहीं यह गांधारी तुम में थी ।
कर राजा रत्न रानी थी पद्मावती ॥
ण सम्पन और प्रीतम प्यारी तुम में थी ।
े से राजा रत्न को पादशाह जय ले गये ॥
से लाई छुड़ा शस्त्र धारी तुम में थी ।
गई जलकर सती अपने पती के साथ में ॥
। सत छोड़ा नहीं यह धारा नारी तुम में थी ।
लिया विष का कटोरा पर ना छोड़ा धर्म को ॥
म अपने देगई कृष्ण प्यारी तुम में थी ।
ज को छोड़ गई सीता पती के संग में ॥

इस में आज़ादी का असरार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥ २ ॥
चरखा चर्ख़ को नीचा दिखायगा,
चरखा स्वराज्य की राह बतायगा
इस से योरुप का आज़ार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥ ३ ॥
इस से होंगे शरर ज़ीशान फिर,
होगा फ़ख़रे आलम हिन्दुस्थान फिर।
इसी चरखे पे दारोमदार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥ ४ ॥

भजन नं० १९८

वेला सत्तीयां दा तुसीं विसर गईयां ॥
नल दी ख़ातर दमयन्ती ने लाखों कष्ट उठाये,
विच जंगलां सही मुसीबत दशा सुनी ना जाए
ओह कम सत्तीयां दा तुसीं विसर गईयां ।
कपटदा वेष बना के रावण सीता लई चुराय,
सत्य छलण नूं उस सती दे कीते बहुत उपाय,
हाल यह सत्तीयां दा तुसी विसर गइयां ॥

... है बन्न बम हज़ारों ... नहीं घबराना ।
लिया ... मना ... जिन ... है आना ।
ए दास ... ईयां दा गुणां विसर गईयां ॥
... दे ... लड़ाई झगड़ा उल्टा मनईयां माना ॥
... विच ... दे ... होवेगा मुंह काला ।
और पुत्तियां दा गुणां विसर गईयां ॥

भजन नं० १९९

प्रभु के संग में क्यों ना गई री ।
...संग जाती सोना बन जाती, अब माटी के मोल भई री ।
...प्रभु हैं मेरे प्राण आधारे जिनकी क्यों ना मैं शरण लई री ।
...के प्राण को छोड़ नर्मोही माया के जाल में उलझ रही री ।
...को छोड़ा असारसे लिपटी धरिग धरिग मैं मत मन्द भई री ।
...मेरे स्वामी मैं दासी प्रभुकी स्वामी ना भूले मैं भूल गई री ।

भजन नं० २००

मेरी तो लगन लगी इक हर से उस जादूगर से ।
मन मोहन मन मोह लीना मन मोहनी मंत्र से ।
· का पानी पढ़कर मुझ पै डार दिया ऊपर से ॥

भजन नं० २०२ --

(बदकिस्मत विधवा की चन्द आहें)

यह आह मेरी सितम है भारत न मार मुझको सता २ कर।
बिगाड़ देवे न फिर से ईश्वर यह काम तेरा बना २ कर ॥ १॥
मैं साफ कहती हूं याद रखना जो आहें इस दिलसे उठ रही।
मिटा के छोडेगी नाम तुझको चिराग़ तेरा बुझा २ कर ॥२॥
पहाड़ दिन रंजो गम में गुजरा सितारे गिनने में रात काटी।
मेरे सितारों ने मुझ को मारा बुरी तरह से रुला २ कर ॥३॥
यह नयन फूटें जो मेरे नयनों में एक पल भर भी नींद आई।
बहाईं नदियां बनाये कुलजम लहू के आंसू बहा २ कर ॥४॥
लुटा है जब से सुहाग मेरा, यासो हरमां का दिल में डेरा।
मैं जान अपनी खपा ही डालूंगी सोजेगम में घुला २ कर ॥५॥
वह तन से जालिम फ़लक का मेरे, अरुसी जोडा उतार लेना
तलफ़ कर दिये ऐश मुझ पर, सुफेद चादर ओढा २ कर ॥६॥
बसन्त आने को और बहिनें, बसन्ती कपडे रंगा रही हैं।
दुःखों ने चेहरे पर फेरी जरदी, है खून अपना सुखा २ कर ॥७॥
जो सावन आया तो झूलें झूला, मल्हार गावें व देसी ढोला।
इधर किया मुझको नीम बिसमिल, गमों ने चरके लगा २ कर॥
वह मुझपर आफ़त का टूट पडना, वह बाल्यपन का मेरा रंडेप

हुआ जिसके मेरी उम्मीदों पे। गमों की बिजली गिरा २ कर ॥
हम को अपने अज़ीज़ जानें, पराये देते हैं लाख ताने ।
था ज़माने में मुझको रुसवा, हज़ार तोहमत लगा २ कर ॥१०॥

भजन नं० २०३
(एक बाल-विधवा की तड़प)

माता पिता ने मुझ को दुलहिन बना के मारा ।
दो दिन बहार गुलशन मुझ को दिखा के मारा ॥
अंग में मेरे था पहना मातम का बस लगाया ।
बाली उमर में झूठी मेंहदी लगा के मारा ॥
मैं तोड़ देती कंगना होता जो होश मुझ को ।
बस मेरे हाथ कोरा कंगना बंधा के मारा ॥
शादी हो अष्ट वर्षी गौरी के तुल्य हो यह ।
बस ऐसे लेखों ने ही गाथा रचा के मारा ॥
हाय हाय सुहाग का सुख मैं देख भी न पाई ।
"प्रीतम मेरे सिधारे" मुझ को सुना के मारा ॥
सेहरे के फूल ताज़े मुर्झाने भी न पाये ।
जब कि सोहाग मेरा घोड़ी चढ़ा के मारा ॥
फेरों की चोर हूं मैं अब धर्मवीर बेशक ।
मैं और सुख न देखा दुःख ने जला के मारा ॥

वैराग्य ।

भजन नं० २०४

दमड़ा की भरोसा जिन्दे मेरिये नीं ।
पाप कमाके माया जोड़ी आखर होया लख करोड़ी ॥
अन्त ख़ाक विच वासा जिन्दे मेरिये ।
बाल अवस्था खेल गंवाई बाकी विषे भोग विच लाई ॥
आवेगी बासा जिन्दे मेरिये नीं ।
जिस देहि दा मान करेंदी ओढ़ भी तेरा संग न देंदी ।
पहने मलमल खासा जिन्दे मेरिये ।
लाख बरस चाहे जीवन लोड़े आखर इक दिन मौत मरो
जल पर आन पताशा जिन्दे मेरिये ।
जिस सुख में तू आनन्द माने विषय भोग में जो सुख जा
यह स्वप्न तमाशा जिन्दे मेरिये ।
झुटे मित्र चार प्यारे नाले बाग बगीचे सारे ।
रख प्रभु पर आशा जिन्दे मेरिये ।
जीवन मुक्ती जे तूं लोड़ें नाल प्रभु दे मन को जोड़ें ॥
होजा उस्दी दासा जिन्दे मेरिये ।

भजन नं० २०५

रे प्राणी क्या तेरा क्या मेरा जैसे तरवर पंछ बसेरा।
जल के भीत पवन का थम्बा रक्त बन्दु का गारा॥
हाड़ मांस नाड़ी का पिंजरा पन्छी बसे विचारा।
राखो कन्ध उसारे नींवां साढ़े तिन हथ तेरी सीमा॥
बंके बाल पाग सिर डेरी यह तन होगा भसम की ढेरी।
ऊँचे मन्दिर सुन्दर नारी राम नाम बाजी हारी॥
मेरी जात कमीनी कुल होनी ओछा जन्म हमारा।
तुमरी शरणागत में प्रभु जी कहे रविदास चमारा॥

भजन नं० २०६

सब कुछ जीवत को व्योहार।
मात पिता भाई सुत बन्धु अरपन मद की नार॥
तन से प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रीत पुकार।
आध घड़ी कोई नहीं राखे घरते देत नकार॥
मृग त्रिशना जीवन जग रचना देखा हृदय विचार।
कहो नानक भज राम नाम नित जानते होत उधार॥

भजन नं० २०७

फ्नाह हो जानी रे तेरी काया (झूठी तेरी काया)
कहां भरमाया सोच तु भोले दुनियां चित लाया।

चारों दिस दुनियां का सुख है सोच समझ अभिमानी ॥
जिस काया को पाप कमाकर पाले है मन मानी ।
अन्त समय ओह आग जलेगी यह तो संग न जानी ॥
सिर के बाल सफेद होये अब बृद्ध होन नो आया ।
अब तो पट्टी खोल आंख की झूठी है जिन्दगानी ॥
जब लग जावे हर गुण गाये मन चित हित से प्राणी ।
सार छोड़ आसार पकड कर क्यों हुये अभिमानी ॥

भजन नं० २०८

काया कैसे रोई चलत प्राण ।

चलत प्राण काया कैसे रोई छोड चला निर मोही ।
मैंने जाना मेरे संग चलेगी या कारन काया मलमल धोई ॥
ऊंचे नीचे मन्दिर छोडे गाये भैंस घर घोडी ।
त्रिया जो कलवन्ती छोडी और छोडी पुतरन की जोडी ॥
मोटी छोटी गर्जी भगाई बिना काठ की घोडी ।
चार जन मिल ले जो गये हैं फुंक दई फागन की सी होरी ॥
भोली तिरिया रोवन लागी बिछड़ गई मेरी जोडी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जिन जोड़ी दाईने तोडी ॥

भजन नं० २०९

कोई मोड दिलां दियां धागां नूं ॥
मन समझाया समझे नाहीं रात दिने उठ पैंदा राहीं ।
ढूंढन साध समाधानों ॥
यह मन मेरा फोऊ कहै विना हंस क्यों मोती कये ।
मिल हंसां तज कागांनों ॥
और किसीको दोष क्या दीजे जो कुछ किया सो चुन लीजे ।
दोष है अपने मागांनों ॥
कहे हसीन सुनो माई साधो यम कंकर आ जब तुमको बांधे
फिर की करे कलावां नों ॥

भजन नं० २१०

क्या तन मांजता रे आखर माटी में मिल जाणा ।
माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना ।
माटी का कलबूत बनाया जिस में भवर लुभाना ॥
माटी कहे मुझ पर को नित्य उठ मांजे तु मोहे ।
एक दिन ऐसा आवेगा जब मैं माजुंगी तोहे ॥
चुन चन लकड़ी महल बनावे बन्दा कहे घर मेरा ।
ना घर मेरा न घर तेरा चिड़ियां रैन बसेरा ॥

माल पड़ा शाहुकार का चोर लगा सरकारी
इक दिन मुशकिल आन पड़ेगी महसूल मरेगा मारी
पादा चोला भया पुराना कब लग सीवे दरज़ी
दिलदा मैहरम कोई ना मिलिया जो मिलिया अलगरज़ी
दिलदे मैहरम सतगुर मिल गये उपकारन के गरज़ी
नानक चोला अमर भया संत जो मिलगये दरज़ी

भजन नं० २१०

कीजाना दमकोईरे वाया की आणा दम कोई
चिट्टी चादर उतार दे बंदिया पहन फकीरंदी लोई
चिट्टी चद्दर नू दाग लोगा लोई नू दाग ना कोई
जब तक तेल दीवे में बाती सूझत है सब कोई
जल गया तेल निखिट गई बाती लैचल लैचल होई
जब लग जीव पिंजड़े में मांहीं लागू है सब कोई
जब प्राणी ने त्यागी काया काढ़ो काढ़ो होई
भाई कुटम्ब कबीला मात पिता सुत जोई
खावन पीवन दे सब साथी संग चले ना कोई
कोई आवत कोई जावत निसदिन असथिर रहे ना कोई
. करत मया होत प्राणी कर्म लेखही होई।

भजन नं० २११

दोहा—चलना है रहना नहीं चलना बिसवा बीस
ऐसे सहज सुहाग पर कौन गुंदावे सीस

है कोई दमकी यात जगत् में है कोई दम की यात
मुट्ठी बांधे आया जग में हाथ पसारे जात
धन जोबन सुत संपत कुम्भा यह नहीं चलने साथ
पलपल घटता छिन नहीं बढ़ता यौंही जात दिन रात
निर्बल सबल प्रबल गिण। रन यह काल लगाये घात
कहां गये वह संग संगाती कहां गये पितुमात
धर्म ना छोड़ा दम्भ ना छोड़ा क्यों जग ठग ठग खात
नवलसिंह जय अन्त समय हो हाथ मले पछतात

भजन नं० २१२

मेरी इमदाद को ऐ बंसरी वाले आजा ।
हाथ में अपने सुदर्शन को संभाले आजा ॥
खेंचता चीर है बेदर्द दुःशासन मेरा ।
इसको नापाक इरादे से हटाले आजा ॥
आबरू लेने को आमादा है ज़ालिम कौरो ।
पड़ गये आह मुझे जानके लाले आजा ॥
बे नुमाई से सुदामा को बचाया तूने ।
मुझ को इस ज़िल्लतो ख्वारी से बचाले आजा ॥
आहो ज़ारी में मेरी जान घुली जाती है ।
कर रही हूं मैं बड़ी देर से नाले आजा ॥
मिसले तसवीर हैं खामोश कृपा और भीष्म
लग गए द्रोण के भी मुंह पे हैं ताले आजा ॥
भीमो सहदेव तो क्या चीज है अर्जुन
कर दिया है मुझे किस्मत के हवाले
लाज मुझ बेबसो बेकस की बचाने
ऐ ज़माने के ग्वालों के ग्वाले आजा

शीन हमदर्द फुरकत ने मिटा दे मोहन।
खाक हम होंगे गिरां यार को हाले आजा॥

भजन नं० २१३

तू शहनशाह मैं दर का गदा, तुम रूह एक तकदीरें दो।
तू नफ़्स नहीं मैं ख़ाक नहीं, है वतन एक तामीरें दो॥
तू ज़र नहीं मैं ज़रा ख़ाक, है असर एक तासीरें दो।
तू ज़ाहर है मैं बातन हूं, है ख़ाब एक ताबीरें दो॥
तू बस्ती में मैं जंगल में, है मुल्क एक जागीरें दो।
तू फूले चमन मैं ख़ारे दहात, नक़्शा एक तस्वीरें दो॥
तू फ़िकर मंद मैं दरद मंद दिल मयान एक शमशीरें दो।
तू माल मस्त मैं खियाल मस्त, है मरज़ एक तदबीरें दो॥
तू कलम बंद मैं ज़बान बन्द, है बंदिश एक ज़ंजीरें दो।
तू लै में चूर मैं ख़ुद में चूर, है तार एक नख़चीरें दो॥

भजन नं० २१४

—ओंकार भजो अहंकार तजो,
मय न समझो जो मई सो मई।
अभिमान गुमान तजो मन से,
गफ़र रहा

उपकार करो तन मन धन से,
जो गई सो गई, जो रही सो रही। ओंकार॰
दुःख देख दुखन पर क्षेम करो,
और दीनन से मत विरोध करो।
परधन तिरिया देख न मोह करो,
अमीं न सुधरो जो गई सो गई। ओंकार॰
श्रद्धा सत्कार के फूल चुनो,
पाखण्ड घमण्ड के फूल खनो।
उपदेश सुनो तुम आर्य्य बनो,
अब लों यश बेली वई सो वई। ओंकार॰
धन धाम को पाय न मान करो,
अज्ञान तजो और ज्ञान करो।
यह विनती "हजारी" की मान करो,
जो बीती बिन अर्थ गई सो गई। ओंकार॰

भजन नं० २१५

लगा ले कुछ तबीयत को, इधर भी यार थोड़ी सी।
जमह पुंजी करो हर दम यूं ही हर बार थोड़ी सी॥
मिले जो इक घड़ी फुर्सत अजी इस जाल दुनिया से।
न जाने दो उसे भी मुफ़त और बेकार थोड़ी सी॥

जारों लाखों हैं अहसान यह जिसके हैफ़ उसकी भी।
निकले इक ज़रा दिल से कभी इज़हार थोड़ी सी॥
लायक इस क़दर के इस का न हुआ शुक्र हो लेकिन।
मुल कुछ तो कहे हक़ में ज़बान प यार थोड़ी सी॥
सी ना शुकरी के बाइस नज़र तकलीफ़ आती है।
गरना रंज यां ज़्यादा न है नफ़गार थोड़ी सी॥
समझ लो सोच लो भाई अभी करना है कुछ यारी।
बहुत सोई न यह सोना अभी लो यार थोड़ी सी॥
जो इस की याद कर खबर बने बाबू तो देवों से।
दफ़ा करने को काफ़ी है उसी की धार थोड़ी सी॥

भजन नं० २१६

चैतागन भूली आप में और जल में खोजे राम।
जल में खोजे राम जाय कर तीर्थ छाने।
ढूण्ढ फिरी थुट नहीं सुध अपनी आने॥
फूल मांही ज्यों वास काठ में अग्नि समानी।
खोदे बिना नहीं मिले रहे धरती में पानी॥
जैसे दूध घृत छिपा छिपी मैंहन्दी में लाली।
ऐसे पूरण ब्रह्म कहूं तिल भर नहीं खाली॥

पलटो कर सतसंग बीच में करले अपना काम।
पेरागन भूली आप में और जल में खोजे राम॥

भजन नं० २१७

रामनाम रस भीनी चादर, हैं चीनी मई चीनी।
इए कमल का चरखा बांधा, पांच तत्त्वों की पूनी।
नौ दस मास बनदियां लग गये मूरख मैली कीनी॥
जब मेरी चादर बनकर आई रंग रंगरेज़ ने दीनी।
ऐसा रंग रंगा रंगरेजे लालो लाल कीनी॥
चादर ओढ़ शंका मत मानों दो दिन तुम को दीनी॥
मूरख लोग भेद ना जाने दिन दिन मैली कीनी।
ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने पहनी सुखदेव ने निर्मल कीनी।
दास कबीरा ने ऐसी पहनी ज्यों की त्यों धुक दीनी॥

भजन नं २१८

नौ जवानों देख लो इस उमर में क्या गुण भरे।
उमर यह ताज़ीस्त क़ायम रखने की परवाह बार
बाल ब्रह्मचारी कई इस दम: पर अल कर मरे॥
फ़िलहक़ीकत नौजवानी धर्म का है आसरा।

देके सर अपना हकीकत धर्म की रक्षा करे ॥
थे गुरु गोविन्दसिंह के पुत्र भी तो नौजवां।
देदिया सिर हिन्द पर सरहन्द में आकर मरे ॥
भी अयानो पूर्ण भी था अनमोल गौहर धर्म का।
टुकड़े टुकड़े होगया तृष्णा से ना पग हा करे ॥
यूसुफ मिसरी भी था इक नौजवां नेको खसाल।
पाक धाज़ी पर दिया था आफरीं दुनिया करे ॥
ध्रुव और प्रहलाद भी थे नौजवां ये दोसतो।
जिनका जीवन आसमाने ऊज पर चमका करे।
इस जवानी में ही प्यारो धर्म के चुन लेना फूल।
वरना पीरी की खज़ां में फिरना हू हाए करे ॥
आंच देलो इस उरें दिल को तपसिया की ज़रा।
क्योंकि कुन्दन वोह है जो अग्नी में से निकला करे ॥
सब से अफज़ल सबसे बढ़ कर सबसे पहला काम यह।
ज़ब्त रक्खो आपको ईश्वर भला सब का करे ॥
शुकर दाता का करो आजिज़ की होकर मेहरबां।
वेद या दयानन्द जो ब्रह्मचर्य्य की शिक्षा करे ॥

भजन नं० २१९

पीने वाला जो मस्ताना प्याला प्रेम का
नहीं भांग तमाखू मिले यहां थियेटर
यां तो बजता है नक्कारा सत्य धर्म का
नहीं यहां कुछ धोखा नहीं लालच
मगरों ऐलान करे यह तो एक निगम प्रेमका
सीधा रास्ता बताया दयानन्द ने आके
यश क्यों कर नहीं गावें उसके सच्चे प्रेम का
सब जनों से कहता प्रेमी हाथ जोड़ कर
तुम भी पालन करलो आकर ऐसे प्रेम का

भजन नं० २२०

है चन्द मिनट का खाब रे इस टूटी सी खटिया पर।
पार हुआ चाहे तू प्यारे, जल्दी शरन ईश्वर की आरे,
सत रूप यही के म्हारे, ले चल अपनी नावरे।
शुभ कर्मों की नैया पर॥
ये मूरख मतिमन्द मुसाफिर, मृगतृष्णा में धोखा खाकर,
इस शोचवती हालत में आकर, क्यों देता है पांवरे।
इस पाप रूप खटैय्या पर॥
ये मूरख उठ धर्म करले, परम कृपालू के गुण गाले,

दुया समय जाता मतवाले, होंठ का ना तावरे ।
इस धोके की टटिया पर ॥
क्यों नींद गहरी में सोवे तू, वृथा उमर अपनी खोवे तू,
शसिंह क्यों नहीं धोवे तू, अपने खोटे घावरे ।
इस ज्ञान रूप पटिया पर ॥

भजन नं० २२१

ए मित्र तुम बुरा ना मानो एक बात कहता जाऊं ।
पशु मनुष्य में फरक कौनसा यह मैं तुम को समझाऊं ॥
खाना पीना सोना जागना दोनों में है एक समान ।
उठना बैठना चलना फिरना लीजिये बराबर इन्हें भी जान ॥
नाक कान सिर हाथ पैर तुम सब ही को लो एक समान ।
इस से ज्यादा मनुष्य के अन्दर यदि हुआ तो हुआ ज्ञान ॥
वेद कहे नहीं ज्ञान जिन्हें कुछ उन की दिशायें दिखलाऊं ।
मनुष्य में फरक कौनसा यह मैं तुम को समझाऊं ॥
—यही पहचान है रे मित्रो मनुष्य जाती की ।
मनुष्य उसी को माना सब ने जो कि होवे ज्ञानी ।
धर्म करे अधर्म छोड़कर शरफी रहीं यूंगा,
हाये आजकल मनुष्य जाती होगई पशु समान ।
क्योंकि काम करें पशुओं के रहा नहीं कुछ ज्ञान ॥

क्या यह काम है मनुष्यों का दूध घृत को छोड़।
पशु की हड्डियां मुंह में देकर उसको रहे मरोड़॥
क्या यह भी मनुष्यता है मारे बिना कसूर।
लाखों खून हो एक रोज़ में करते चिकनी चूर॥
पशुओं की आहों से जग में फैल गया ताऊन।
आंख खोल के देखो मित्रो खून का बदला खून।
चन्द्र कहे कितने हुए मोटे पशुओं का लहू पी।
सच्ची मानों पशु से बदतर पशु हुये तुम भी॥

भजन नं० २२२

सदा तुम करते रहो सदाचार से प्रेम॥
सदाचार है जीवन भाइयों कर्म धर्म की आन॥
सदाचार ही से फलदायक होता है सतज्ञान॥
जीवन को तुम वृक्ष समझ कर सदाचार जड़ जान।
कर्म धर्म के जल से सींचो हो जावे कल्याण॥
दुराचारी धनवान हो चाहे हो विद्वान।
सदाचारी कंगाल के आगे है वह तुच्छ समान॥
विद्या है इक रत्न अमोलक सदाचार प्रकाश।
जहां मिलें यह दोनों मित्रो अंधकार हो नाश॥

यही दो गुन ये कवि में भाइयो भारत दिया सुधार।
उजड़ा वैदिक धर्म का गुलशन फिर फोली गुलजार॥
संध्या करना शास्त्र पढ़ना वेदों का सतज्ञान।
सदाचार के बिना है निष्फल रक्खो इस को ध्यान॥
सदाचार हो सतविद्या हो कर्म धर्म सतज्ञान।
सुख होवें छूटें दुख सारे मिले आनन्द महान॥
ऐसो इशारत के दिल वाले मन में करो विचार।
सदाचार के बिना तुम्हारा नहीं होगा उद्धार॥
सदाचार का लेकर आश्रय हो जाओ तैय्यार।
काम आदि से विकट हैं शत्रु दीजो इन को मार॥
पूर्ण होकर सदाचारी तुम करो वेद प्रचार।
निस्संदेह फिर याद रक्खो तुम होगा देश सुधार॥
बेकस करता अन्तिम विनती छोड़ो ऐसे आराम।
कहा सुना अब करके दिखाओ है मर्दों का काम॥

सदा तुम करते रहो।

भजन नं० २२३

जां हकीकत की तरह कोई गंवाये तो सही,
ताज शाही कोई सिर से गिराये तो सही।
राम सा बन के कोई हम को दिखाये तो सही॥

मरते २ भी दिया दान था जिस प्यारे ने।
माल मानन्द करण कोई लुटाये तो सही॥
हाथ मंगी के बिका धर्म की खातिर जो था।
अपने में कोई हरीश्चन्द्र बताये तो सही॥
कोई भीष्म सा गुजरद तो बताये हम को
मिसल अर्जुन के कोई तीर चलाये तो सही॥
माया का जाल गया टूट था जिस से इक दम।
कोई मोहन की तरह गीता सुनाये तो सही॥
जिन की दहशत से हिला करते थे शाहों के निशान।
कोई सेवा कोई प्रताप बनाये तो सही॥
यूं तो ऐ श्याम सभी मरते हैं इस दुनियां में।
जान हकीकत की तरह कोई गंवाये तो सही॥

भजन नं० २२४

बंसी वाले मोहन साडी जिंदड़ी न रोल।
इक नाव पुरानी दूजे भर गया पानी।
तीजे आप घबरानी खाने लगी झकोल॥ बंसी०॥
तुम क्यों होया ऐ अलगर्जी, दस की तेरी मरज़ी।
किन्थे सुदां पाई ऐ अरज़ी, पहिले कागज़ां नूं फोल॥बंसी
करन क्यों लगा एं बरबादी, पै गई की ए यादी।

सानू परदा अड़ांदी, मांडे अन्दरे नू खोल ॥ बंसी० ॥
मानूं गीता सुनाजा, दिल दा खोफ मिटा जा।
आजा जल्दी नू आजा, हुन तां तेरी सानूं लोड़ ॥ बंसी० ॥
फंददा गौरीशंकर, घत आया भयङ्कर।
हुन चुगदे नी कङ्कर बैठे परदे दी कलोल ॥ बंसी० ॥

भजन नं० २२५

आवाहन पर भगवान कृष्ण का जवाब

मुझ को आने में तो कुछ भारत में इन्कार नहीं।
पर बुलाने को मेरे आप ही तैयार नहीं ॥
पहिले पैदा तो करो देवकी माता कोई।
गोद उसकी में मुझे आने में इन्कार नहीं ॥
नन्द वसुदेव की सूरत है यहां किस किस की।
कंस और कालयवन से तो मुझे प्यार नहीं ॥
आके बैठूं तो कहो मथुरा व गोकुल में कहां।
कौन से घर हैं यहां मुझ पे जहां वार नहीं ॥
अपनी जन्म अष्टमी को दूर से देखूं हूं सदा।
एक भी भारती करता है मुझे प्यार नहीं ॥
स्वांग भर भर के मेरा हाय नचाते हैं मुझे।

नाचने गाने से या मुझे कोई सरोकार नहीं ॥
झेप क्यों करता मैं कसल से क्यों मांचा जाता।
शोक है शोक है मैं चोर नहीं यार नहीं ॥
देश और जाति को बस देख के ऐसा क्लेश।
बकतीं आंखों से मेरे आंसुओं की धार नहीं ॥
कोई कहता है कि भारत को किया ग़ारत मैंने।
मैं न होता तो यहां होती यह तकरार नहीं ॥
यह किया धर्म ने जो मुझ से कराना चाहा।
निती और योग मेरे वास्ते दो चार नहीं ॥
सुन कर जिस गीता को रणक्षेत्र में कूदा अर्जुन।
उसको पढ़ कर जो बने त्यागी समझदार नहीं ॥
ऐसे हाथों ही में पड़ होगई गीता बदनाम।
हुए वेदान्ती यह आता जिन्हें सार नहीं ॥
कर्म खुद नीच करो और बुलाओ मुझको।
बस करो बस यह मुझे चोचलें दरकार नहीं ॥
कोई अर्जुन हो तो मैं गीता सुनाऊं आकर।
मेरे उपदेश के तुम लोग सज़ावार नहीं ॥
भीषम हो द्रोण सुत कर्ण से दो चार यहां।
भीम अर्जुन के सहित आने में इन्कार नहीं ॥

मैं तो यह मानता हूं सत की जय होती है।
सत पै जो हैं उन्हें होती कभी हार नहीं ॥

भजन नं० २२६

हरा है कोट और कालर इलाया बूट डासन का।
बड़े बांधूं खुदा घरही बड़े फ़ैशन के बन्दे हैं ॥
गले में है वंद नेकटाई मिसले फांसी के रस्सी के।
कमर में मिस्ले मुजरिम देखलो गैलस के फन्दे हैं ॥
खड़े होकर हैं कुछ पेशाब करते ऐसे फ़ैशन से।
कि गोया आज ही जंगल से आये हैं चरिन्दे हैं ॥
कभी शूटिंग को जाते हैं तो चिड़िया मार लाते हैं।
नज़र में शेर चीते इनकी यह बेकस परिन्दे हैं ॥
फिसल जाता है दिल हर खूबरो को देखकर इनका।
बज़ाहर पूरे जेण्टलमैन हैं भीतर से गन्दे हैं ॥
कहा इक रोज़ मैंने दान कुछ खातर धर्म की दो।
कहा क्या पीकर्द इक जाने है और लाख धन्दे हैं ॥

भजन नं० २२७

मेरा गर मुहाफ़िज है ईश्वर तो है कौन फिर जो दबा सके
तेरी क्या बसात है ऐ फलक जो जहां से मुझ को मिटा सके ॥

नाचने गाने से या मुझे कोई सरोकार नहीं ॥
द्वेष क्यों करता मैं कसल से क्यों बांधा जाता ।
शोक है शोक है मैं चोर नहीं यार नहीं ॥
देश और जाति को बस देख के ऐसा हलाम ।
बहती आंखों से मेरे आंसुओं की धार नहीं ॥
कोई कहता है कि भारत को किया गारत मैंने ।
मैं न होता तो यहां होती यह तकरार नहीं ॥
वह किया धर्म ने जो मुझ से कराना चाहा ।
निती और योग मेरे वास्ते दो चार नहीं ॥
सुन कर जिस गीता को रणक्षेत्र में कूदा अर्जुन ।
उसको पढ़ कर जो बने त्यागी समझदार नहीं ॥
ऐसे हाथों ही में पड़ होगई गीता बदनाम ।
हुए वेदान्ती यह आता जिन्हें सार नहीं ॥
कर्म खुद नीच करो और बुलाओ मुझको ।
बस करो बस यह मुझे बोलें दरकार नहीं ॥
कोई अर्जुन हो तो मैं गीता सुनाऊं आकर ।
मेरे उपदेश के तुम लोग सज़ावार नहीं ॥
भीष्म हो द्रोण सुत कर्ण से दो चार यहां ।
भीम अर्जुन के सहित आने में इन्कार नहीं ॥

थोड़ी मान है थोड़ी शान है थोड़ी अपना आदा जलाल है
है मजाल किसकी वो कौन है कि जो मुझसे मिला सके
कोई पैदा करके दिखाये तो मुझे कृष्ण भीम से शेर नर
कि गदा पकड़ ले हाथ में तो ज़मीन तक को हिला सके
मेरे दिल से नाले अगर उठें तो लगायें आग जहान में
मेरे मुंह से निकले जो आह भी तो समुद्रों को सुखा सके॥
मैं वफ़ा करूं तू जफ़ा करे मैं दया करूं तू दगा करे।
तुझे है कसम पे सितम शुयार सताले जितना सता सके॥
मेरे लाल उठो कमर कसो चलो वेद धर्म पे मर मिटो।
राहे हक में सीना सिपर रहे ना अजल भी पीछे हटा सके॥

भजन नं० २२८

सिर जावे तां जावे मेरा वैदिक धर्म ना जावे।
धर्म दी खातर बाल हकीकत सिर अपना कटवावे॥
वैदिक धर्म तों राजा हरीश्चन्द चण्डाल दे घर विक जावे,
धर्म दी खातर रामचन्द्र जी राक्षसां नों मार मुकावे॥
सेवाजी इस धर्म दी खातिर विच जंगल में उमर गंमावे।
धर्म दी खातर ऋषि दयानन्द पल २ ज़हरां खावे॥
वैदिक धर्म तों वीर लेखराम छुरा पेट विच खावे।
एस धर्म तो गुरु गोविन्द पुत्र दीवार चुनावे॥

वैदिक धर्म तो ध्रुव प्रहलाद जी मोक्ष धाम विच जावे।
वीर रामचंद धर्म दी खातर मेघांतों मारिया जावे॥

भजन नं० १२९

उल्टी ना होगी इस तरह तकदीर किसी की,
बढ़कर ना हुई हम ने भी तदबीर किसी की।
गो चीखते चिल्लाते रहे रात दिन मगर,
साबत ना हुई पुर असर तकरीर किसी की॥
अजहारे सदाकत के लिये गर जबां खुली,
तो लपालपाने ही लगी शमशीर किसी की॥
समझाया लाख बार जताया हज़ार बार,
परहो सके ना कारगर तदबीर किसी की
कहते हैं इसे गरदिशे अय्याम सरापा
हम ज़िन्दां में डालेगये तकसीर किसी की
जिन को लगी हुई है लगन हुब्बेवतन की
रोकेगी उन्हे क्या कोई जन्ज़ीर किसी की
ख़ादिमतो हमारी भी है ये चन्द्र या लेकिन
खिदमत करे क्या पायेमुलतासिर किसी की

भजन नं० २३•

मिटे जो दूसरों के वासते कुरबानी कर कर के
हयात अब्दी करे हासल वही आलम में मर मर के
नहीं है जुरम हुब्बे क़ौमियत को क़ौम वालो जब
तो क्यों इस रास्ते पर मत क़दम धरते हो डर डर के
खबरलो उन यतीमों की जो भूखे पेट के मारे
फिरें कई कुत्ते मौंकाते हज़ार अफसोस दरदर के
ठिकाने बेठिकानों को लगाओ रे रईसो तुम
तुमारे भाई जाले झाड़ते फिरते हैं दरदर के
अगर है साक़िया मन्जूर कुछ खातर तुझे मेरी
पिलादे जल्द हुब्बे कौमियत का जाम मर मर के
बन्धेगा चन्द्र सेहरा उस्के सर इस्लाह कौमी का
करेगा इस्की खिदमत सर हथेलीपर जो धर धर के

आरती

धन्य दीन दयाल तू प्रभु धन्य तू जगदीश्वरा
धन्य है करुणा यह तेरी धन्य है परमेश्वरा ॥ १ ॥
धन्य दाता दीन पर दाता तू ही संसार दा ।
धन्य करुणासिन्धु स्वामी जो किसे न विसार दा ॥ २ ॥
धन्य महिमा अकथ तेरी अन्त कोई न पांवदा ।
हार के पीछे रह जावे कथन नूं जो धांवदा ॥ ३ ॥
जीव सब संसार दे गिनती न आवी आंवदी ।
अन्न पानी दान करदा होर सब मन भांवदी ॥ ४ ॥
तेरी महिमां तू ही जाने होर नैं वाड़ियादयां ।
क्षुद्र जन्तु आखे सोई मन विषे जो आदयां ॥ ५ ॥
औखी घाट पहाड़ दीं क्यों चढ़ सके है पिपीलिका ।
अन्ध चाहे चन्द्र देखां मुश्क हो जग डलिका ॥ ६ ॥
मीक वैल न चल सके पिङ्गल उलांघे मेरु क्यों ।
मूक वक्ता होवे नाहीं रागी क्योंकर गुंग है ॥ ७ ॥
होवे कायर खेत मांगे रैंचे ग्रन्थ न पावदा ।
कहां क्योंकर गुण मैं तेरे बुद्धि हीन उतावला ॥ ८ ॥
हाथ जोड़ निवाय मस्तक, चरण वन्दन कीजिये ।
धन्य प्रभु महिमा है तेरी जिस रटे सुख लीजिये ॥९॥
सभी पूत कपूत तेरे अन्त तेनूं लाज है ।
नाम धन हरि दान कीजे सोई हमरे काज है ॥ १० ॥

आरती।

जय जगदीश हरे। भक्त जनन के सङ्कट। क्षण में दूर
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का,
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥ १ ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी,
तुम बिन और न दूजा, आश करूं किसकी ॥ २ ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी,
परम ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ ३ ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता,
मैं मूरख खलकामी कृपा करो भर्ता ॥ ४ ॥
तुम ही एक अगोचर सब के प्राणपति,
किस विध मिलूं दयामय तुम को मैं कुमति ॥५॥
दीना बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे,
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा हूं तेरे ॥ ६ ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ ७ ॥

॥ समाप्त ॥